

यदि आप अभी तक इस सिरीज के ग्राहक नहीं बने हैं, तो ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए; या पुस्तक के पृष्ठभाग पर दी हुई सूची में से अपनी पसंद की पुस्तक चुनकर अपने स्थानीय पुस्तक-एजेंट से लीजिए।

टोपी सिर से खिसककर नीचे आ रही । झास के सभी लड़कों की खिल-खिलाहट में उसका अनुचारित नाम उछलने लगा ।

वातावरण शान्त होने पर उसका नाम स्पष्ट होकर सामने आया—  
चार्ल्स वॉवेरी ।

वात आर्ड-गई हो गई । झास का काम फिर क्रायदे से चलने लगा । लेकिन वॉवेरी के दिल में जैसे एक खटका बैठ गया था । हर चीज़ को जैसे अपने में समेटकर वह रखना चाहता था । कुछ भी इधर उधर होने से जैसे उसकी सारी पूँजी बिखरकर रह जायगी ।

उसके पिता फौज में डाक्टर थे । कुछ भगड़ों की वजह से उन्हें अपनी नौकरी से अलग हो जाना पड़ा । बदन उनका गठा हुआ था, देखने में सुन्दर । नौकरी से हो अब तक प्रेम करते रहे थे । नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ, उनका गठा हुआ बदन और सुन्दर चेहरा काफी मूल्य रखता है । इसी के सहारे पत्नी के साथ-साथ दहेज़ में भारी रक़म भी उनके हाथ लगी ।

विवाह के बाद तीन-चार साल ख़ूब रास-रग में बीते । दहेज़ की रक़म की बदौलत हर रात दीवाली बनकर आती थी । दहेज़ में सब कुछ देकर समुर साहब पहले ही ग्वाली हो चुके थे । दीवाली की चमचमाती रातें अन्धकार में बदल चली । एक व्यवसाय में हाथ डाला, लेकिन भाग्य ने साथ न दिया । लक्ष्मी के अभाव में दीन-दुनिया को नामते, भुक्कलाहट और ईर्ष्या से भरा हृदय लिये. नगर के बान्तर, एक-आधे देहाती और आधे शहरी, सन्ने-मे मज़ान में रहने लगे ।

पत्नी का उल्लास भी अब तीखा हो चला था । गुरू-गुरू की गरी रंगीनी ग़ायब हो गई थी । स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था ।





टोपी सिर से खिसककर नीचे आ रही । झास के सभी लड़कों की खिल-खिलाहट में उसका अनुचारित नाम उछलने लगा ।

वातावरण शान्त होने पर उसका नाम स्पष्ट होकर सामने आया—  
चार्ल्स वॉवेरी ।

वात आर्ड-गई हो गई । झास का काम फिर क्रायदे से चलने लगा । लेकिन वॉवेरी के दिल में जैसे एक खटका बैठ गया था । हर चीज़ को जैसे अपने में समेटकर वह रखना चाहता था । कुछ भी इधर उधर होने से जैसे उसकी सारी पूँजी बिखरकर रह जायगी ।

उसके पिता फौज में डाक्टर थे । कुछ भगड़ों की वजह से उन्हें अपनी नौकरी से अलग हो जाना पड़ा । बदन उनका गठा हुआ था, देखने में सुन्दर । नौकरी से हो अब तक प्रेम करते रहे थे । नौकरी छोड़ने के बाद उन्हें मालूम हुआ, उनका गठा हुआ बदन और सुन्दर चेहरा काफी मूल्य रखता है । इसी के सहारे पत्नी के साथ-साथ दहेज़ में भारी रक़म भी उनके हाथ लगी ।

विवाह के बाद तीन-चार साल ख़ूब रास-रग में बीते । दहेज़ की रक़म की बदौलत हर रात दीवाली बनकर आती थी । दहेज़ में सब कुछ देकर समुर साहब पहले ही ग्वाली हो चुके थे । दीवाली की चमचमाती रातें अन्धकार में बदल चली । एक व्यवसाय में हाथ डाला, लेकिन भाग्य ने साथ न दिया । लक्ष्मी के अभाव में दीन-दुनिया को नामते, भुक्कलाहट और ईर्ष्या से भरा हृदय लिये. नगर के बान्तर, एक-आधे देहाती और आधे शहरी, सन्ने-मे मज़ान में रहने लगे ।

पत्नी का उल्लास भी अब तीखा हो चला था । गुरू-गुरू की गरी रंगीनी ग़ायब हो गई थी । स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया था ।

था। अपने जीवन के सनेपन को भरने के लिए उसने बहुत सी चीजें इकट्ठी की थीं। उसकी इस दुनिया में कमरे की ये चीजें थीं। इनने उकताकर पिता के पास जाती थीं, पिता से छुड़ी मिलने पर फिर यहीं आ जाती थीं। डाक्टर ने इन चीजों को देखा। सद्मा उसकी नजर एम्मा के शरीर पर टिक गई। उसे बदन में फुरदरी लगती हो। कपकपीसी चढ़ती और वह अपने थोड़े काटने लगती। ग्राँवा की तरह ओठ भी सामने उभर आये। डाक्टर ने देखा, उनमें रस की कमी नहीं है।

हल्की सी चाट का कितनी बड़ा आराम होना चाहिए था, उतनी त्दी नहीं हो सका। टूटी टाँग के मध्य डाक्टर गोज-गोज यहाँ आने-जाने लगे। पूरे छयालीस दिन तक पाइयाँ जैसा और खुलती रही—। अब अपना काम करत रहे और आखि अपना। डाक्टर अब जमे घर के ही आदमी हो गये थे। टूटी टाँग के अच्छे होने का खबर के साथ-साथ उनकी ख्याति भी फैल चली। पहले वे मरीजा की तलाश में रहते थे, अब मरीज उनकी तलाश में रहने लग। एम्मा के हाथ के स्पर्श ने फलता की पहली सीढ़ी पर उन्हें ला खड़ा किया था। कदम पहला ही था, कितने दिनों तक पहला ही वह रहा। यहाँ तक आकर एम्मा रुक जाती, डाक्टर से बिदा ले अपनी दुनिया में लौट जाती।

डाक्टर की पत्नी इस पहले कदम को नहीं पसन्द पाई थी। टूटी टाँग की उनके सामने थी। जब-तब वह डाक्टर से पूछती रहती थी—अब टाँग का क्या हाल है? कब तक अच्छी होगी? रोटी खाना वह भूल जाती थी, टूटी टाँग के बारे में पूछना नहीं। उलझन बढ़ चली उस समय टूटी टाँग के साथ, जब उसे एम्मा का हाल मान्य हो गया। मिग मेलने ही वह आगे बढ़ी। डाक्टर का गन्ता छेड़कर कहने लगी—

साँचे में ढालना चाहती थी, पिता अपने में। इसी खींचतान में चार्ल्स बॉवेरी बड़ा हो रहा था।

लडके ने बारहवें वर्ष में पाँच रक्खा, तेरहवाँ भी बीत गया, चौदहवें के भी छः महीने गुजर गये। उसके पढ़ने-लिखने का कोई ठीक प्रग्रन्थ न हो सका। खींचतान कर मा ने एकाध पादरी को उसे पढ़ाने के लिए नियुक्त किया, लेकिन पढ़ाई कुछ चल न सकी। पादरी साहब का सारा समय मृतकों के लिए मुक्ति के पथ को आलोकित करने में ही बीतता था। इससे छुट्टी मिलने पर वे चार्ल्स को अपने साथ लेते। पहले से थके दिमाग को उसकी किताबों के अधरो से न उलझाकर इधर-उधर की बातों में ही समय काट देते।

पति की तरह लडके का आचारा होना मा नहीं देख सकती थी। आचारगी से बचाने के लिए चौदह साल तक उसे अपनी गोद से उभरने न दिया। चाहने पर भी अब उसे अपने आँगन का खिलौना बनाये ही नहीं रख सकती थी। उधर पति महोदय अलग लडके को अपने ही रंग में रँगना चाहते थे। आखिर मा की फिर विजय हुई—पिता के पञ्जे से छुड़ाकर लडका मास्टर साहब की मास्टरी को सौंप दिया गया।

चक्की के दो पाटों के बीच उसका जीवन बीता था। मा को भी साथ लेकर चला था और पिता को भी। दोनों के बीच रह कर उसका विकास हुआ था। स्कूल में भी उसने अपना यही स्थान बनाये रक्खा—न बहुत नीचे, न बहुत ऊपर। बीच का स्थान ही उसे निगपद मालूम होता था। इधर-उधर के छोरों में अपने को समेटकर चलने की उसे आदत हो गई। उसकी सारी मत्कर्त्ता, मारी केशिशों और मारी पढ़ाई इसी मध्यविन्दु पर केन्द्रीभूत रह गई।

जीवन में वह अभ्यस्त हो गया। रस भी इसमें आने लगा। जब चाहता खाता, जब जी में आता माता, न किसी को जवाब देना पड़ता, न किसी को मफाई। मरीजों के बाद वह केवल अपने को ही देखता था। अपने में उसे माह भी हो चला, आईने में अपने चेहरे पर खुद ही मुग्ध होकर रह जाता था। उसका वाद निकलता था बाहर, दूसरों को मुग्ध करने के लिए।

एम्मा की सार्नी आग्वे ओर भर हुए ओठ सदा उसके साथ रहते थे। बिस्तरे पर पड़कर घण्टा एम्मा के बारे में सोचा करता। रीते गिलास का खेल उसकी आग्वे के सामने नाचा करता। उससे विवाह करने की बात भी जब तब हृदय में उठती थी। कल्पना में सब कुछ हो भी जाता था। लेकिन पूरा उरादा कर लेने पर भी जब उसके सामने पहुँचता, मुँह से एक शब्द न निकलता। अपने को व्यक्त करनेवाले ठीक शब्दों का वह पकड़ नहीं पाता था। सूखे गले में शब्द जैसे अटककर रह जाते थे। तभी वह कहता—“शरयत पिओगं ?”

विवाह प्रसंग रीते गिलासों के खेल में उलझकर स्थगित हो जाता। राज बर उरादा करता, उरादा करके रह जाता। पहला कदम अभी तक पहला ही कदम बना हुआ था।

पत्नी के मरने के बाद एम्मा के पिता को जीवन सूना दिखाई देता था। जेन-जेन समय बीतता गया, इस सूनेपन को ही वे अपनाते गये। उमान उनका नाम थी लेकिन वह भी सूनी ही थी। सोना उगलना वह भूल गई थी। न खेत इतना ही, बल्कि एम्मा के जिता के हाँसे को भी उसने मिट्टी में मिला दिया था। बल्लर भूमि के वे चौधरी थे। वे थे श्रीर बल्लर दुनिया। एम्मा भी उनके सूनेपन की भर नहीं पाती थी।





पुत्र, मिली कन्या । जब कभी वह सामने आती, वे छोटे बनकर जाते । पिता की उपेक्षा से टकराकर मा की गोद का सहारा वह लेती थी । मा के मरने पर उसका वह सहारा भी जाता रहा । सूने घर में चहारदीवारी में मँडराकर वह रह जाती थी । दो हाथ की दूरी पर रहकर ही पिता का जीवित स्पर्श उमे मिलता था । और निकट पहुँच पाती थी उस समय, जब कभी वे बीमार पड़ते थे । खुद के बीमार होने पर भी उनके ससर्ग-स्पर्श की सम्भावना निकट आ जाती थी । पहली बार इसका अनुभव उसे हुआ था मा के मरने पर । पछाड़ खाकर वह गिर पड़ी थी । कुछ देर बाद होश आने पर उसने देखा—पिता की गोद में उसका सिर टिका है, व्यथित नेत्रों से वे उसकी ओर देख रहे हैं । उनकी इस मूर्ति को अपनी पुतालियों में समाकर उसने आँखें बन्द कर ली, उसी तरह उनकी गोद में पड़ी रही—यदि उसी समय, उसी अवस्था में, उसकी मृत्यु हो जाती... ।

लेकिन उसे जीना था, घर के सूने आँगन में बैठकर, जीने के सपने देखने थे, कल्पना के सहारे दूर-दूर के देशों की घेर करनी थी, समुद्र की लहरों से खेलना था । पिता के जीवन के शून्य को तो वह नहीं भर सकी, पर अपने शून्य को कल्पित राजकुमारों से अवश्य भर लिया । पिता की टाँग टूटने पर कल्पना कुछ यथार्थ हो चली । उन्हीं राजकुमारों में से एक, जैमे चार्ल्स बॉवेरी का रूप धर, उसके सामने आ गया था । उसे पाकर उसके हृदय में कुछ कुड़कुड़ हुई, उसने ही उसने जीवन समझा । राजकुमारों की वस्ती में प्रवेश करने के लिए चार्ल्स के माथ हो ली । चार्ल्स के घर आकर देगा—



वेघात नौकर को बमकाना शुरू करती। नौकर चुपचाप सुना करता। फिर एकाएक उसे इनाम दे डालती। कभी मौन साधती तो ऐसा कि मुँह से एक शब्द भी न निकल सके। बोलना शुरू करती तो इस तरह कि सब दग रह जाते। जो जी में आया, कह दिया। किसी को अच्छा लगे, या बुरा। फिर, एकाएक तर्किए में मुँह छिपा, सुबक-सुबककर रोना शुरू करती।

उसकी क्षीण आशा अन्धकार में अस्पष्ट होकर रह गई थी। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह कभी प्रकाश का मुँह देख सकेगी। बस यही पर नहीं हुई। उसकी असहाय्यवस्था और भी स्पष्ट रूप में उसके सामने आ उपस्थित हुई—वह मा बनने जा रही थी।

( ५ )

उन्मुक्त और प्रकाशयुक्त वातावरण में एम्मा पहुँच गई, लेकिन उस समय, जब कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और शरीर पतला। अपने बोझिल जीवन के साथ-साथ एक और जीव का बोझ उसकी अधकचरी कल्पनाओं को झुकाये दे रहा था। जी मचलता था, चक्कर आते थे, पेट में जलन होती थी। जब-तब उसकी चेतना अन्धकार प्रकाश को पहचान नहीं पाती थी। चार्ल्स ने दवाइयाँ दी, मगर कोई लाभ न हुआ। एम्मा बराबर गिरती जा रही थी। आखिर तब हुआ—वायु परिवर्तन के लिए किसी स्वस्थप्रद स्थान पर चलकर रहा जाय। एम्मा उन्मुक्त वातावरण में, प्रकाश और हवा की गोद में, पहुँच गई।

मा के मरने पर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। पिता की उपेक्षाहीन सहृदयता और स्नेह का स्पर्श उसे मिला। इसकी पुनरावृत्ति

था। अपने जीवन के मनेपन को भग्ने के लिए उसने बहुत भी चीजें इकट्ठी की थी। उसकी इस दुनिया में कमरे की ये चीजें थी। इनने उकताकर पिता के पास जाती थी, पिता से झुड़ी मिलने पर फिर यहीं आ जाती थी। डाक्टर ने इन चीजों को देखा। सन्मा उसकी नजर एम्मा के शरीर पर टिक गई। उसे बदन में फुरदरी लगती हो। कपकपीसी चढ़ती और वह अपने थोड़े काटने लगती। ग्राँवा की तरह ओठ भी सामने उभर आये। डाक्टर ने देखा, उनमें रस की कमी नहीं है।

हल्की सी चाट का कितनी बड़ा आराम होना चाहिए था, उतनी त्दी नहीं हो सका। टूटी टाँग के मध्य डाक्टर गोज-गोज यहाँ आने-जाने लगे। पूरे छयालीस दिन तक पाइयाँ पेंता और खुलती रही—। अब अपना काम करत रहे और आखि अपना। डाक्टर अब उसे घर के ही आदमी हो गये थे। टूटी टाँग के अच्छे होने का खबर के साथ-साथ उनकी ख्याति भी फैल चली। पहले वे मरीजा की तलाश में रहते थे, अब मरीज उनकी तलाश में रहने लग। एम्मा के हाथ के स्पर्श ने फलता की पहली सीढ़ी पर उन्हें ला खड़ा किया था। कदम पहला ही था, कितने दिनों तक पहला ही वह रहा। यहाँ तक आकर एम्मा रुक जाती, डाक्टर से बिदा ले अपनी दुनिया में लौट जाती।

डाक्टर की पत्नी इस पहले कदम को नहीं पसन्द पाई थी। टूटी टाँग की उनके सामने थी। जब-तब वह डाक्टर से पूछती रहती थी—अब टाँग का क्या हाल है? कब तक अच्छी होगी? रोटी खाना वह भूल जाती थी, टूटी टाँग के बारे में पूछना नहीं। उलझन बढ़ चली उस समय टूटी टाँग के साथ, जब उसे एम्मा का हाल मान्य हो गया। मिग मेलने ही वह आगे बढ़ी। डाक्टर का गन्ता छेड़कर कहने लगी—

नाम के द्वारा अपनी मा की स्मृति को अमर करना चाहता था। एममा विरोध करती थी। नामों का शौक उसे था, साधारण तरफ़ से के अनाधारण नाम उसने एक दिन रखे थे, लेकिन उसकी लड़की नाम को लेकर जो मकड़ी का जाला बुना जा रहा था, वह उसे ब्रह्म नहीं लगना था। नाम वह चाहती थी, मयके उत्साह में उत्साहित होकर, उसकी वह चाह आगे भी बढ़ी थी, लेकिन वह ऐसा नाम चाहती थी जो इस मकड़ी के जाले को तोड़ दे या जिसके सामने यह जाला टिक सके। इस जञ्जाल में ऊपर उठ न्वतत्र रहने की जिसमें मामर्थ्य हो। एक एक, एक दिन सोचते-मोचते, उसे याद आया—वर्षा। कहीं, कि जगह और किसके मुँह से उसने यह नाम सुना था, ठीक याद नहीं पड़ा। नाम जितने अप्रत्याशित रूप में उसके सामने आया था, उतना ही उसे बड़ा मालूम होता था। जितना ही सोचती थी उतना ही इस नाम पर आश्चर्य होता था। इससे अधिक उपयुक्त नाम और न होगा।

लड़की दाई के पास थी, उसका नाम एम्मा के पास। नाम के मोहक आकर्षण ने लड़की की याद को उभार दिया। इस उभार को अनिच्छापूर्वक एकाध बार उसने टालना चाहा, लेकिन सफल न हो सकी। न किमी से कुछ कहा, न सुना, न अपने गिरे हुए शरीर की ओर ही देखा। लड़की को देखने के लिए चल दी। कच्ची-पकड़ी देहाती बर्नी के दूसरे छोर पर दाई रहती थी।

दोपहर का समय था। धूप भी तेज थी और हवा भी। दोनों का मामना करती एम्मा घर में निकली। कुछ ही दूर आगे बड़ी थी निरर्गत-प्रेमी युवक मिल गया। बगल में कागज़ों का एक पुलिन्दा दबाये था। मुन्कराहट से एम्मा का उसने अभिवादन किया। साथ भी

खून भी गिरा और इसने पहले कि एम्मा उसके पति की ओर दूता कदम आगे बढ़ाये, सदा के लिए उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

( ३ )

डाक्टर बनने के बाद पति बनने की शिक्षा चार्ल्स बॉवेरी को मिल रही थी। पति तो वह नहीं बन सका, बन गया प्रेमी। इस दिशा में भी वह अभी तक एक ही कदम आगे बढ़ा था। एम्मा घर से बाहर आती थी, लेकिन दरवाजे पर ही ठिठककर रह जाती थी। पत्नी के मरने के बाद चार्ल्स ने कुछ हलकेपन का अनुभव किया, लेकिन साथ ही उसे ऐसा भी मालूम हुआ, मानो उसके सिर का साया हट गया है। पत्नी उसे बीच में ही छोड़कर चली गई—न वह पति ही रह गया था, न प्रेमी ही। मा की गोद में फिर से छोटा बनकर मुँह छिपाने लायक भी अब वह नहीं था।

पत्नी के मरने के बाद वह एम्मा के घर गया। एम्मा से अधिक उसके पिता की महानुभूति उसे मिली। चार्ल्स के इस दुःख से उन्हें अपनी पत्नी को याद हो आई। चार्ल्स की कमर पर मान्यता का हाथ फेरते हुए वे कहने लगे—‘मेरे लिए यह नई बात नहीं। मैं भी इसे भुगत चुका हूँ। पत्नी के मरने के बाद मुझने घर में बैठा नहीं जाना था। बड़ी बुरी हालत थी। जब किसी नवदम्पति को जाने देवता तो हृदय पागल हो उठता था। जो कुछ सामने आता, तोंट-फोंड डालने को जी चाहता। मिट्टी के टेलों पर अनायास छड़ी का प्रहार करता चलता था। गिन्ने-अर्बान्ने फूल हाथ में आते ही चूर हो जाते थे। कितने ही दिनों तक ऐसा ही हाल रहा। फिर धीरे-धीरे सब कुछ मिट चला। मैं अपने

था, आता भी था तो बहुत कम। उसके अछूते सौन्दर्य को, अचूत आभा को, अछूता ही रखने में वह विशेष सतर्कता से काम लेता था। एम्मा का स्पर्श वह नहीं करता था, उसके स्पर्श पाई हुई चीनों की हृदय से लगाता था। एम्मा के आने का आभास पाकर वह विचल जाता था, चले जाने पर उसके पद-चिह्नों में लोटकर अपने को कृतार्पण करना चाहता था। यहाँ तक कि एम्मा की ध्वनि को वह सुनी-अनसुनी कर डाल दे सकता था, लेकिन चार्ल्स बाविरी की नहीं। एम्मा का प्रति होने का सौभाग्य चार्ल्स को प्राप्त हुआ है, इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। एम्मा देखती रह जाती थी और वह चार्ल्स के साथ चल देता था।

जाड़े के दिन आ चले थे। वातावरण की गर्मी को शीत ने ढक लिया था। शीत के प्रभाव को दूर करने के लिए एम्मा अँगीठी का सहारा लेती थी। पास रखी अँगीठी में कोयले धधकते रहते, शीत की कल्पना को अपने से दूर रखने में वे सहायता देते। गये हाथ की हथेली पर ठोड़ी टेके एम्मा खिड़की के पास बैठ जाती। आँखें अपना काम कानों को साँप बन्द हो जाती और एम्मा किसी की पदध्वनि की प्रतीक्षा में बैठी रहती। अस्पष्ट आहट धीरे-धीरे स्पष्ट हो चलती, हृदय भी उसकी गति का साथ देता। आँखें खुलती थी उस समय, जब पदध्वनि स्पष्ट हो उठने के बाद विर्लीन होने लगती थी—भुटपुटे-में में वह देखती, एक छाया है जो चली जा रही है। झुँझलाकर एका-एक उठती, अपनी दामी का पुकारती—ग्वाना जल्दी तैयार करो।

ग्वाना ग्वाने के समय दूकान-मालिक आ जाते थे। साथ में सर्गीन-नी युवक को लाना न भूलते थे। उसके बिना जैसे थे अचूरे रहने



जीवन में वह अभ्यस्त हो गया। रस भी इसमें आने लगा। जब चाहता खाता, जब जी में आता माता, न किसी को जवाब देना पड़ता, न किसी को मफाई। मरीजों के बाद वह केवल अपने को ही देखता था। अपने में उसे माह भी हो चला, आईने में अपने चेहरे पर खुद ही मुग्ध होकर रह जाता था। उसका वाद निकलता था बाहर, दूसरों को मुग्ध करने के लिए।

एम्मा की सार्नी आग्वे ओर भर हुए ओठ सदा उसके साथ रहते थे। बिस्तरे पर पड़कर घण्टा एम्मा के बारे में सोचा करता। रीते गिलास का खेल उसकी आग्वे के सामने नाचा करता। उससे विवाह करने की बात भी जब तब हृदय में उठती थी। कल्पना में सब कुछ हो भी जाता था। लेकिन पूरा उरादा कर लेने पर भी जब उसके सामने पहुँचता, मुँह से एक शब्द न निकलता। अपने को व्यक्त करनेवाले ठीक शब्दों का वह पकड़ नहीं पाता था। सूखे गले में शब्द जैसे अटककर रह जाते थे। तभी वह कहता—“शरयत पिओगं ?”

विवाह प्रसंग रीते गिलासों के खेल में उलझकर स्थगित हो जाता। राज बर उरादा करता, उरादा करके रह जाता। पहला कदम अभी तक पहला ही कदम बना हुआ था।

पत्नी के मरने के बाद एम्मा के पिता को जीवन सूना दिखाई देता था। जेन-जेन समय बीतता गया, इस सूनेपन को ही वे अपनाते गये। उमान उनका नाम थी लेकिन वह भी सूनी ही थी। सोना उगलना वह भूल गई थी। न खेत इतना ही, बल्कि एम्मा के जिता के हाँसे को भी उसने मिट्टी में मिला दिया था। बख्तर भूमि के वे चौधरी थे। वे थे श्रीर बख्तर दुनिया। एम्मा भी उनके सूनेपन की भर नहीं पाती थी।



का हुआ है और किसी का नहीं, यह प्रत्यक्ष करने के लिए एम्मा ने जैमे प्रमाण-पत्र का स्थान ले लिया था।

एम्मा को यह प्रदर्शन अच्छा लगता था। पहली बार उसने अपने अस्तित्व का इतना प्रत्यक्ष अनुभव किया। अपने पति की वही सब कुछ है, उसके सहारे ही पति का अस्तित्व सम्भव हुआ है, यह जानकर उसका सिर जेंचा उठ जाता था। चार्ल्स के साथ घूमना उसे अच्छा लगता था। जो भारी हो उठता था—घर लौटने पर। अपने चारों ओर वह नजर डालती, मृत पत्नी की याद ताजी हो आती। सुहाग-शय्या को देखकर उसके हृदय में गुदगुदी उठती, लेकिन दूसरे ही क्षण सुहाग-शय्या के सारे फूल मुरझा जाते। मृत पत्नी की कल्पना सामने आ खड़ी होती। वह सोचने लगती—यह सुहाग-शय्या मेरे लिए है। और यदि मेरी मृत्यु हो गई तो ?

एक अस्पष्ट छाया एम्मा को पीछा करती मालूम होती। घर में आते ही उसका जी भारी होने लगता। पुराने चिह्नों को मिटा डालने के लिए उसने घर की काया पलटनी शुरू कर दी। नई सफेदी कराई, खिड़की-दरवाजों के परदे बदले, मेज-कुर्सियों को भी नया बना दिया। बड़ी तत्परता से वह अपने काम में जुट गई। वह काम करती, चार्ल्स मुग्धभाव से देखा करता। घूमने-फिरने की ओर एम्मा की रुचिविशेष को पूरा करने के लिए एक घोड़ा-गाड़ी भी उसने खरीद ली। गाड़ी पुरानी थी, लेकिन एम्मा ने उसे भी नया बनाने में कोई कसर न रक्खी।

एम्मा को पाकर चार्ल्स स्वर्ग में पहुँच गया था। उसकी माली पुतलियों में प्रतिबिम्बित अपनी छाया के साथ खुद भी छाया बन जाना

करके उन्हें देखा । काम की कोई चीज न निकली । बोली—“अभी मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है । होने पर कहूँगी ।”

“अच्छी बात है,” विसाती ने कहा, “आपसे परिचय हो गया, यही बहुत है । उम्मीद है, आप मुझे भूलेंगी नहीं ।”

अपनी चीजों को उसने सँभालना शुरू किया । मुँह से उसके शब्द अब भी निकलते जा रहे थे । अपनी चीजों को छोड़ चार्ल्स बॉवरी ने एक मरीज को लेकर वह कह रहा था—“डॉक्टर साहब को यच्छा मरीज मिला है । खाँसी उसे क्या आती है मानो भूकम्प आ जाता है । जब खाँसी नहीं थी, तब खुद भूकम्प बना हुआ था । इतनी शराब पीता था कि हृद नहीं । सभी उससे परेशान थे ।”

परेशानी का हिसाब आगे बढ़ा । वह कह रहा था—“क्या बताना, आजकल का मौसम बड़ा खराब है । हवा ऐसी विगड़ी है कि.. ”

उसकी विगड़ी हवा को सुनी-अनसुनी करते हुए एम्मा ने अपनी नौकरानों को पुकारा—चाय लाने को उससे कहा । यथावसर योग्य मेवा पाने के आश्वामन का हिसाब लगाता विसाती चला गया !

चाय पीने के बाद एम्मा और भी स्वस्थ हो गई । वह इतनी मगन थी कि उसे अपने पर आश्चर्य होता था । व्यर्थ ही वह अब तक अपने को कोमलती रही, जब तब इस शरीर को उपेक्षा की दृष्टि से देखती रही ।

आँड़ने के सामने वह पहुँची । काफी देर तक अपने अद्भुत-प्रयत्न को देख-देखकर मुग्ध होती रही । एकाएक निमी के आने की आहट सुन वह चौंकी । धूमकर देगा—सद्गीति-प्रेमी युवक सामने खड़ा था ।

एम्मा ने उसे देखकर भी नहीं देखा । आँड़ने का वंदनापन मिटाने के काम में उसने अपने को व्यस्त कर दिया । युवक कुछ देर खड़ा

पुत्र, मिली कन्या । जब कभी वह सामने आती, वे छोटे बनकर जाते । पिता की उपेक्षा से टकराकर मा की गोद का सहारा वह लेती थी । मा के मरने पर उसका वह सहारा भी जाता रहा । सूने घर में चहारदीवारी में मँडराकर वह रह जाती थी । दो हाथ की दूरी पर रहकर ही पिता का जीवित स्पर्श उमे मिलता था । और निकट पहुँच पाती थी उस समय, जब कभी वे बीमार पड़ते थे । खुद के बीमार होने पर भी उनके ससर्ग-स्पर्श की सम्भावना निकट आ जाती थी । पहली बार इसका अनुभव उसे हुआ था मा के मरने पर । पछाड़ खाकर वह गिर पड़ी थी । कुछ देर बाद होश आने पर उसने देखा—पिता की गोद में उसका सिर टिका है, व्यथित नेत्रों से वे उसकी ओर देख रहे हैं । उनकी इस मूर्ति को अपनी पुतालियों में समाकर उसने आँखें बन्द कर ली, उसी तरह उनकी गोद में पड़ी रही—यदि उसी समय, उसी अवस्था में, उसकी मृत्यु हो जाती... ।

लेकिन उसे जीना था, घर के सूने आँगन में बैठकर, जीने के सपने देखने थे, कल्पना के सहारे दूर-दूर के देशों की घेर करनी थी, समुद्र की लहरों से खेलना था । पिता के जीवन के शून्य को तो वह नहीं भर सकी, पर अपने शून्य को कल्पित राजकुमारों से अवश्य भर लिया । पिता की टाँग टूटने पर कल्पना कुछ यथार्थ हो चली । उन्हीं राजकुमारों में से एक, जैमे चार्ल्स बॉवेरी का रूप धर, उसके सामने आ गया था । उसे पाकर उसके हृदय में कुछ कुड़कुड़ हुई, उसने ही उसने जीवन समझा । राजकुमारों की वस्ती में प्रवेश करने के लिए चार्ल्स के माथ हो ली । चार्ल्स के घर आकर देगा—

प्रतिक्रिया सामने आती थी। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उने अद्भुत लगता था, कुछ देर वह अपने को भूल भी जाती थी; लेकिन वह नहा चाहती थी कि इस प्रभाव के कारण सब उससे दूर-ही-दूर रहे उसका अस्तित्व दिन-दिन एक छायामात्र बनता जा रहा था। वह उन्मुख रहता था। मन-ही-मन चाहती थी, वह ज़मीन पर लोटे, धूल धूसरित होकर सबके सामने जाये, मालूम हो कि वह इसी निम्न को बनी है। चार्ल्स उसे जितना ही अच्छूता समझता था, उतना वह मटमैली बनना चाहती थी—इस हद तक कि मिट्टी का एक टेर समझकर वह उसे ठुकरा दे।

सगीत-प्रेमी युवक की उसे याद आई। उसकी नौकरी लग गई है। वह भी अब चला जायगा। जाये—वह भी जाय। उसे कुछ नहीं चाहिए।

एम्मा ने एक क्षण कुछ स्फूर्ति का अनुभव किया। फिर अपने पल्लंग पर जाकर पड़ रही।

( ९ )

अप्रैल का महीना, वसन्त का प्रारम्भ। कुहरा विलीन हो गया था। वरक श्रोम का मोती बनकर फूल-पत्तों के गले का हार बन चली थी। सम्पूर्ण जीवन अभिसार के लिए जैने तैयार हो रहा था। अपने हृदय की मँगाएँ एम्मा भी खिचकी पर बैठी थी। मिर्गजे की घण्टियों की धिनीन होनी दुःख के साथ उसका अभिसार चल रहा था।

वचन का चित्र सामने था—उसके अपने वचन का भी, गिरने में बाहर, कुछ दूर पर, दूरमें लटकता का भी। आँख-मिचौनी का खेल

चार्ल्स की मा अमी जीवित थी। उसके स्नेह में भी कोई कमी न पड़ी थी। लेकिन एम्मा के बीच में आ जाने से चार्ल्स कुछ ओर में आ गया था। इस ओट को दूर करने के लिए वह जब-तब आ रहती थी। बाते वह चार्ल्स से करती थी, सतर्क और सन्देहपूर्ण कर्नाखियों से एम्मा को भी एक किनारे लगाती जाती थी। जब तक वह रहती, चार्ल्स को उभरने का अवसर नहीं मिलता। वह और भी सिकुड़कर रह जाता। एम्मा उसे देखकर मुस्करा उठती—मुस्कराने के बाद झुंझलाहट उठती, चार्ल्स पर भी, उसकी मा पर भी।

एम्मा जीवन चाहती थी, मिला उसे लड़कपन। लड़कपन मचलना जानता था, रुठना भी जानता था, आँखें फाड़कर भी कभी-कभी देखने लगता था। 'जीवन' बनना उसे नहीं आता था। लड़कपन को खिला पिलाकर वह दवाखाने में भेज देती—मरीजों से उलझने के लिए खुद घर के काम-काज में लग जाती। काम-काज में भी कोई नयापन नहीं रह गया था। खत्म भी वह जल्दी हो जाता था। खोई-सी सुदूर आकाश में एकटक देखा करती, देखती रहती।

जीवन में नयापन लाने के प्रयत्न वह करने लगी। इधर की चीजें उधर उलट-पलटकर रखने लगी। चार्ल्स के पुराने नौकर को भी छुट्टी दे दी। चौदह वर्ष की नई लड़की को नौकर रक्खा। कुछ दिन उसे सिगाने-पटाने में बीते। खाना बनाने की शिक्षा भी उसे देनी शुरू की। साग-तरकारियों के रोज़ नये-नये नाम धरे जाने लगे। चार्ल्स नये नामों को सुन-सुनकर दग रह जाता था। न जाने कौन-सी चीज उसके सामने आनेवाली है। कुछ देर के लिए एम्मा के हृदय में भी कौतुक उभरता फिर शून्य में खोकर रह जाता।

खाकर बर्था गिर पड़ी थी। माथे पर उसके हलकों-भी खरान आगड़े थी। चार्ल्स ने उसे गोदों में उठाया, पुचकारा माथे टिचर लगा एम्मा को देने हुए बोला—‘कुछ नहीं। अभी ठीक जायगा।’

बर्था के राने में एम्मा चौंक उठी थी। गोदों में लेते ही वह रु हो गई। एम्मा ने उसे बिस्तरे पर मुला दिया। फिर दूर खड़ी हँस देवने लगी—बर्था की मुक्कियाँ बन्द हो गई थीं। बन्द आँखों के कोनों के पास आँसू की दो बंदे अभी ठहरी थी। एम्मा से देखा न गया। उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

चार्ल्स उसके पास बिस्मर आया। कन्वे पर हाथ धरकर खड़ा लगा—‘कुछ नहीं। चोट मामूली है। अभी ठीक हो जायगी।’

दूफान मालिक ने मुना तो दौड़ा हुआ आया। एम्मा को डाढ़ बँवाने के साथ-साथ छोटे बच्चों के लालन-पालन के अनेक उदाहरण उसने दे दाने। उसकी बातों का कोई अन्त न होता देख एम्मा उठ खड़ी गई। चार्ल्स बेठा हुआ सुनता रहा।

सगात प्रेमों युवक की नौकरी लग गई थी। पर अभी तक वह नहीं सका था। अपनी मा की अनुमति उसे नहीं मिल पाई थी। परदे में लड़का कैसे और किसके साथ रहेगा, वह उसकी समझ में नहीं आता था। अब कुछ सम्झाने के लिए उसने अपनी मा को कई पत्र लिखे दाने छोट-छोट फिर बने-बने। बनी मुश्किल से मा गड़ी हुई। इस बाद वह सप्ताह की नौकरियों में लगा। बहुत-सा सामान उसने जमा लिया। मालूम होता था, वह नौकरी पर नहीं, समार-यात्रा के लिए गया है।



वेघात नौकर को बमकाना शुरू करती। नौकर चुपचाप सुना करता। फिर एकाएक उसे इनाम दे डालती। कभी मौन साधती तो ऐसा कि मुँह से एक शब्द भी न निकल सके। बोलना शुरू करती तो इस तरह कि सब दग रह जाते। जो जी में आया, कह दिया। किसी को अच्छा लगे, या बुरा। फिर, एकाएक तर्किए में मुँह छिपा, सुबक-सुबककर रोना शुरू करती।

उसकी क्षीण आशा अन्धकार में अस्पष्ट होकर रह गई थी। उसे विश्वास नहीं होता था कि वह कभी प्रकाश का मुँह देख सकेगी। बस यही पर नहीं हुई। उसकी असहाय्यवस्था और भी स्पष्ट रूप में उसके सामने आ उपस्थित हुई—वह मा बनने जा रही थी।

( ५ )

उन्मुक्त और प्रकाशयुक्त वातावरण में एम्मा पहुँच गई, लेकिन उस समय, जब कि उसका चेहरा पीला पड़ गया था और शरीर पतला। अपने बोझिल जीवन के साथ-साथ एक और जीव का बोझ उसकी अधकचरी कल्पनाओं को भुकाये दे रहा था। जी मचलता था, चक्कर आते थे, पेट में जलन होती थी। जब-तब उसकी चेतना अन्धकार प्रकाश को पहचान नहीं पाती थी। चार्ल्स ने दवाइयाँ दी, मगर कोई लाभ न हुआ। एम्मा बराबर गिरती जा रही थी। आखिर तब हुआ—वायु परिवर्तन के लिए किसी स्वस्थप्रद स्थान पर चलकर रहा जाय। एम्मा उन्मुक्त वातावरण में, प्रकाश और हवा की गोद में, पहुँच गई।

मा के मरने पर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी थी। पिता की उपेक्षाहीन सहृदयता और स्नेह का स्पर्श उसे मिला। इसकी पुनरावृत्ति

घर आने पर उसे उचाला ही दिग्वाड़े पड़ता था। एम्मा का इस उजागर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अपने उजागर अस्तित्व का लिय एम्मा आगे बढ़ती गई—अन्धकार को आलोकित करने के लिए। आधुनिक उपन्यास-कहानियाँ पढ़ उसने छाड़ दिया था। इतिहास और दर्शन की पुस्तकें उसने पढ़ शुरू की। उन्हें समझने के लिए उसने कोप मँगाया, व्याकरण की एक पुस्तक ले आई, नाट लेने के लिए कोरे कागजों का भी एक रख आगवा। मात मात रात का चान्स कभी जाग उठता। मालूम होता, सोइ पुरार रहा है। आँख खालकर देखता, ध्वनि किसी के बुलाने की नहीं एम्मा के पढ़ने की है। इतिहास के पन्ने उसके हाथों का स्पर्श पाकर सुन्नर हो उठ हैं। चारा आर अन्धकार से घिरे रहने पर भी उसके स्मरण में प्रकाश है, इतिहास और दर्शन के सहारे एम्मा उसके जीवन का गुरुवर्षा मुतभा रहा है।

चान्स का यह अच्छा नहीं लगता था। इस तरह एम्मा बीमार पड़ जायगी। यह न खान की मुव रखती है, न पीने की। एम्मा का समझाने के प्रयत्न उसने किये—पहले दबे स्वर से, फिर और और दक। प्रेम और भक्तियों के प्रयोग भी सामने आये। एम्मा सुनती थी मुनकर टाल जाती थी। कभी-कभी उलझ भी जाती थी। एक दिन चान्स ने कहा—‘तुम्हें हो क्या गया है। न कुछ खाती हो, न पीती हो। अपने दन-दन पतला पड़ता जा रहा है!’

एम्मा ने चान्स की बात को अन्याकार किया। कहने लगी—‘नहीं, मैं खूब खाती हूँ। तुमने तो ज्यादा ही खाती हो।’

इस बात खाने-पीने को लेकर दोनों में बहस हुई, बहस ने हठ के

सराय उसे कहना चाहिए। एक बार हैजे का प्रकोप फैला था। न छोड़कर आये हुए कुछ लोगों को टिकाने के लिए कच्चा-पक्का प्रबन्ध बंद दिया गया था। होटल कहिए चाहे सराय, पहले-पहल इसकी नींव इस तरह पड़ी थी और तब से अब तक कोई न कोई इसमें बना ही रहता है। कभी कोई शिकारी आ जाता, कभी कोई रोगी। घुमकड़ तबीअत के लोग भी उसे अपने चरणों से पवित्र करते रहते थे। इसके साथ ही एक छोटी-सी दूकान भी है। दूकान और सराय, दोनों, साथ-साथ चलते हैं। दूकान के मालिक फकड़ तबीअत के बीबी-बच्चोंवाले आदमी हैं। उनके आचार और विचारों के बीच शिष्ट-सभ्यता रेखा खींचने में सफल नहीं हो सकी है। धर्म और सदाचार का रंग उनमें दूर रहता है। अपने ही रंग के कपड़े वे पहनते हैं, अपने ही रंग में वे मस्त रहते हैं। सराय की विधवा मालकिन से छूँटे-बाज़ी चलती रहती है। सराय और दूकान की तरह ये दोनों भी साथ-ही-साथ चलते हैं। हृदय की धड़कन के साथ दोनों की व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता भी चलती है, और जीवन भी।

इन दोनों के अलावा एक व्यक्ति और था। दूकान-मालिक के साथ वह रहता था। संगीत से उसे प्रेम था, कभी-कभी गुनगुना भी लेता था, लेकिन उसका जीवन-संगीत दूकान और सराय की सीमाओं में बँधकर रह गया था। उसकी अपनी बात दूकान-मालिक और सराय की विधवा के रंग में दूबकर रह जाती थी। अपने को वह उभागता था—आशाओं के सहारे, ऐसी आशाएँ जो सुदूर भविष्य में स्थित थीं, जिनका आकाश-प्रकार अल्पकाल ही चला था। संगीत के द्वारा वह इन आशाओं के स्वर्ण नक्षत्रों को अलग करना चाहता था। उपन्यास-कहानियों के चरित्रों में भी, कभी-कभी, उनकी प्रतिबिम्बित सुनाई पड़ जाती थी।

की जगह भी इस समार में नहीं रही है। वगैरे उम्मीदों और उम्मीदों  
 माथ उमने समार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की  
 उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में घूमता था,  
 था, लेकिन बस न सका। सभी उसे गंदकर चलना चाहते थे।  
 कुछ छोड़कर आखिर उसे इस सूनी बस्ती का महारा लेना पड़ा।  
 देहाती बनकर सोया सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ  
 भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो सूर।  
 उसमें मिर टकरात-टकरात उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाकड़ों  
 घर के आस पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा  
 का देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिबेदी प  
 तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उठता  
 भटक हो गया है। एम्मा को इस ज्वाल से निकालना ही होगा।

चलते चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता।  
 दुनिया भर के ईंट गड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क  
 की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चटकर। पैदल चलें तो पता चले, सड़क  
 क्या हो रहा है। पाँवों के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-रोडों  
 का तुरत खयाल हो आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव  
 में जो आघात पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता !

निगारिया के गीने हाथ और निगार आँखें देखकर भी उमता यही  
 हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, धँसी हुई आँखें, अन्ध-  
 जन्म अन्धिय दिगार्ड पढ़ने पर समार के कूर हाथों का निच उठने  
 सामने खड़ा हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अलङ्कार युवती को  
 देखकर उसका हृदय मर्मांग उठता—इसे जग भी पता नहीं कि कैसी

नाम के द्वारा अपनी मा की स्मृति को अमर करना चाहता था। एममा विरोध करती थी। नामों का शौक उसे था, साधारण तर्क के अनाधारण नाम उसने एक दिन रखे थे, लेकिन उसकी लड़की नाम को लेकर जो मकड़ी का जाला बुना जा रहा था, वह उसे ब्रह्म नहीं लगना था। नाम वह चाहती थी, मयके उत्साह में उत्साहित होकर, उसकी वह चाह आगे भी बढ़ी थी, लेकिन वह ऐसा नाम चाहती थी जो इस मकड़ी के जाले को तोड़ दे या जिसके सामने यह जाला टिक सके। इस जञ्जाल में ऊपर उठ न्वतत्र रहने की जिसमें मामर्थ्य हो। एक एक, एक दिन सोचते-मोचते, उसे याद आया—वर्था। कहीं, कि जगह और किसके मुँह से उसने यह नाम सुना था, ठीक याद नहीं पड़ा। नाम जितने अप्रत्याशित रूप में उसके सामने आया था, उतना ही उसे बड़ा मालूम होता था। जितना ही सोचती थी उतना ही इस नाम पर आश्चर्य होता था। इससे अधिक उपयुक्त नाम और न होगा।

लड़की दाई के पास थी, उसका नाम एम्मा के पास। नाम के मोहक आकर्षण ने लड़की की याद को उभार दिया। इस उभार को अनिच्छापूर्वक एकाध बार उसने टालना चाहा, लेकिन सफल न हो सकी। न किमी से कुछ कहा, न सुना, न अपने गिरे हुए शरीर की ओर ही देखा। लड़की को देखने के लिए चल दी। कच्ची-पकई देहाती बर्नी के दूसरे छोर पर दाई रहती थी।

दोपहर का समय था। धूप भी तेज थी और हवा भी। दोनों का मामना करती एम्मा घर में निकली। कुछ ही दूर आगे बड़ी थी निरर्गत-प्रेमी युवक मिल गया। बगल में कागज़ों का एक पुलिन्दा दबाये था। मुन्कराहट से एम्मा का उसने अभिवादन किया। साथ भी

उसे डर था कि कहीं और लोग बात का बतगड़ न बना दें। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में वह था। एक दिन एम्मा को अधिक सुस्त देखा उसने चार्ल्स से पूछा—“ये आज बहुत सुस्त दिखाई पड़ती हैं। मालूम होना है, इनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती।”

एम्मा उस समय वहीं खड़ी थी। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ा, फिर तुरंत वहाँ से खिसक गई। चार्ल्स ने कहा—“हाँ, इनकी तबीयत ठीक नहीं रहती।”

“दवाइं तो आप देते ही होंगे ?” उसने पूछा।

“देता तो हूँ, लेकिन दवाइयों से इन्हे परहेज है। कहती हैं, दवाइयों से कुछ नहीं होने-जाने का।”

यह तो वह पहले ही से जानता था। दवाइयों से रोग दूर नहीं होते। रोग कम होने नहीं आते, डाक्टर बराबर बड़ते जा रहे हैं—यह बताना मुश्किल है कि रोगों की संख्या अधिक है अथवा डाक्टरों की। एक बार जी में आया, अपनी योजना को सामने रख दें, लेकिन यह निश्चय नहीं कर सका कि उसके लिए यह अवसर ठीक होगा या नहीं। बहुत कुछ सोचने-समझने के बाद उसने कहा—“इनमें रुहिए, गंगा थोड़ा-बहुत धूम लिया करें।”

शाम को चार्ल्स ग्याना खाने बैठा। इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने कहा—“पर मैं पड़े-पड़े भी जी भारी हो जाता हूँ। अच्छा हो, कुछ देर बाहर घूम आया करो।”

इतनी-सी ऊँठ के साथ एम्मा ने इस योजना को टाट दिया। लेकिन चार्ल्स के कर्त्तव्य की इतिश्री इतनी सज्ज नहीं हो सकी। जड़-जड़ कुत्तार आता था, एम्मा की तबीयत का हाल पूछना न भूलता था।

गया है। दिन में कई बार इसे नहलाती हूँ; लेकिन साबुन न हूँ से.....”

साबुन के लिए एम्मा ने बटुवे में हाथ डाला। जितने पैसे पकड़ आये, दे दिये। एम्मा ने पैसे दिये, दाई ने धन्यवाद। तेज़ कदमों एम्मा बाहर निकली, अपने घर की ओर चल पड़ी। संगीत-प्रेमी यु० भी एम्मा की पद-ध्वनि पहचानता उसका साथ दे रहा था।<sup>२</sup> उसके जीवन का सूत्र था, इसी को पकड़कर वह आगे बढ़ रहा था। कहाँ, किधर, इसे न उसने स्पष्ट किया था, न स्पष्ट करना चाहता था। सब कुछ उसके लिए दूर चला गया था—वह था और उसकी पदध्वनि तरल गति से उसका अनुसरण कर रहा था। उसे पता ही नहीं चला कि कब एम्मा का घर आ गया और अपनी पदध्वनि के साथ कब वह विलीन हो गई। चार्ल्स की आवाज़ ने उसके स्वप्न को भङ्ग कर दिया, आँखें खोलकर उसने देखा और कागज के पुलिन्दे को सावधानी से सँभालते हुए वह अपनी दूकान की ओर लौट गया।

पदध्वनि के संगीत ने पहली बार उसके जीवन में प्रवेश किया था। इससे पहले संगीत का प्रेम तो उसके पास था, संगीत न था। जो कुछ थोड़ा-बहुत था भी, वह उभर नहीं पाता था। भीतर-ही-भीतर घुमड़कर वह रह जाता था। उसे व्यक्त वह कभी न कर सका। इसी तरह उसका जीवन बीत रहा था। जीवन का यह अस्फुट रूप दूकान-मालिक के लिए एक अनाधारण विशेषण बन गया था। बड़े ढंग से कहीं गई उनकी छोटी बातों के आगे उसका स्वर सविनय अवज्ञा भी नहीं कर पाता था। वह उनका एक-मात्र श्रोता था—विनीत, सुशिक्षित और सुमन्य।

इन तीनों विशेषणों की ताल पर उसका मूक जीवन-सर्गित चल रहा





था, आता भी था तो बहुत कम। उसके अछूते सौन्दर्य को, अचूत आभा को, अछूता ही रखने में वह विशेष सतर्कता से काम लेता था। एम्मा का स्पर्श वह नहीं करता था, उसके स्पर्श पाई हुई चीनों की हृदय से लगाता था। एम्मा के आने का आभास पाकर वह विचल जाता था, चले जाने पर उसके पद-चिह्नों में लोटकर अपने को कृतार्पण करना चाहता था। यहाँ तक कि एम्मा की ध्वनि को वह सुनी-अनसुनी कर डाल दे सकता था, लेकिन चार्ल्स बाविरी की नहीं। एम्मा का प्रति होने का सौभाग्य चार्ल्स को प्राप्त हुआ है, इतना ही उसके लिए पर्याप्त था। एम्मा देखती रह जाती थी और वह चार्ल्स के साथ चल देता था।

जाड़े के दिन आ चले थे। वातावरण की गर्मी को शीत ने ढक लिया था। शीत के प्रभाव को दूर करने के लिए एम्मा अँगीठी का सहारा लेती थी। पास रखी अँगीठी में कोयले धधकते रहते, शीत की कल्पना को अपने से दूर रखने में वे सहायता देते। गये हाथ की हथेली पर ठोड़ी टेके एम्मा खिड़की के पास बैठ जाती। आँखें अपना काम कानों को साँप बन्द हो जाती और एम्मा किसी की पदध्वनि की प्रतीक्षा में बैठी रहती। अस्पष्ट आहट धीरे-धीरे स्पष्ट हो चलती, हृदय भी उसकी गति का साथ देता। आँखें खुलती थी उस समय, जब पदध्वनि स्पष्ट हो उठने के बाद विर्लीन होने लगती थी—भुटपुटे-में में वह देखती, एक छाया है जो चली जा रही है। झुँझलाकर एका-एक उठती, अपनी दामी का पुकारती—ग्वाना जल्दी तैयार करो।

ग्वाना ग्वाने के समय दूकान-मालिक आ जाते थे। साथ में सर्गीन-नी युवक को लाना न भूलते थे। उसके बिना जैसे थे अचूरे रहने

चिल्लाना—कुछ भी सुनकर वह चौंक पड़ती, चलते पाँव एक जगह बँधकर रह जाते ।

घूमने वह अब भी जाती थी, लेकिन उस समय, जब किसी वस्ती नाद में हूबी रहती । बुलनर के घर भी वह जाती थी, लेकिन उसके चारों ओर चक्कर लगाकर लौट आती थी । आशङ्का के अधिक बट जाने पर कई-कई दिन तक घर से बाहर नहीं भी निकलती थी । ऐसा भी हुआ है कि एक जगह जहाँ बैठ गई है, वहाँ घंटों बैठी हो रह गई है । उठने की जब-जब कल्पना की है, वह काँपकर रह गई है ।

ऐसी जगह वह जाना चाहती थी, जहाँ उसे कोई न जानता हो, उसकी आशङ्का पाकर किसी के कान न खड़े हों । अपने घर को बदल देने के लिए भी उसने चार्ल्स से कहा—“इस घर में अब जी नहीं लगता । अकेले रहने पर बड़ा डर लगता है । दूसरा घर लिये बिना काम नहीं चलेगा ।”

सोते-सोते चार पड़ने पर चार्ल्स ने एम्मा को कई बार सँभाला था । कितनी देर तक उसके हृदय की धड़कन का अनुभव करते हुए वह मन-ही-मन काँप भी उठा था । घर बदलने की बात उसे भी ठीक लगी । बोला—“हाँ, पर बदल डालना चाहिए । खोज में रहूँगा ।”

अगनी नौसगनी से भी एम्मा धवरा उठती । बर्था को न बिना-कर उसकी दृष्टि एम्मा के पीछे लगी रहती है, ऐसा उसे मालूम पड़ता था । नौसगनी का मुँह बन्द और आँखें फेरने के लिए एम्मा उसे कुछ न-कुछ भेंट करने लगी ।

बुलनर एम्मा से भी अधिक स्वर्क था । भुटपुटा हो जाने पर फाँटे की तरह वह आता था । आस-पास सँभलकर चला जाता था ।

इसके बाद वह संगीत-प्रेमी युवक की शिष्टता और सुशिक्षा को उभारकर रखते। वह कटकर रह जाता। एम्मा को भी यह अच्छा नहीं लगता था। किसी तरह सम्भव होता तो अपने अञ्चल में छिपाकर दूकान-मालिक की नजरों से उसे दूर कर देती। लेकिन ऐसा हो नहीं पाता था। दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों सन्तोष की साँसें लेते थे। एम्मा को उसे अपने अञ्चल में छिपाने की जरूरत नहीं रहती थी, युवक को भी वास्तविक शिष्टता-नम्रता का परिचय देने का अवसर मिलता था।

दूकान-मालिक के चले जाने पर दोनों को अपने बीच शून्य का अनुभव होता। दूकान-मालिक से अधिक प्रिय अवलम्ब की उन्हें जरूरत होती थी। ताश का खेल कुछ देर काम चला देता था, फिर वह भी एकरस हो चलता। ताश के पत्ते फेंक एम्मा उठ खड़ी होती। स्थान-परिवर्तन के द्वारा कुछ नवीनता लाने का प्रयत्न करती। मेज पर पड़े अखबार के पन्नों को उलटना शुरू करती। युवक भी पास सिसका आता। अखबार के किसी चित्र को देखना शुरू करते। चित्र जितना ही रंगीन होता, उतना ही उन्हें अपना जीवन कलापूर्ण मालूम होता। कभी-कभी एम्मा उसके हाथ में अखबार दे देती, कहानी-कविताओं को पढ़ने के लिए कहती। घंटे इसी तरह बीत जाते। ऐसे समय में चार्ल्स या तो बाहर चला जाता था अथवा कुछ देर पठन-पाठन के बन्द होने की प्रतीक्षा करना, फिर धीरे-धीरे ऊँघने लगता। अँगोठी की आग भी ठण्ठी पड़ चकती थी, चाय का दौर भी समाप्त हो जाता था—गरम चाय किसी के आँटों का इन्तज़ार करने-करते कटुवी हो चलती थी। एकाएक युवक स्तब्ध हो उठता। उसे झगल आता, एम्मा के प्रति

ऐसी चीज वह चाहती थी, जिसके सहारे एक घड़ी के लिए भी वह न भूल सके।

कभी-कभी अपनी मा की याद भी उसे हो आती थी। मा को बुलनर में घण्टों बातें करती। बुलनर भी अपनी मा का हाल सुनाया। बीस साल उसकी मा को मरे हो गये। उसके जीवन में निःस्नेह था, सब मा के साथ चला गया। सुनकर एम्मा व्यथित हो उठी। बुलनर को हृदय में लगा लेती। आकाश की ओर दोनों की आँखें उठा कर रह जाती। मा का आशीर्वाद पाने के लिए दोनों विह्वल हो उठते।

मा के बाद बुलनर को जीवन में स्नेह नहीं मिला था। नो मुँह मिला, वह था अनादर, उपेक्षा और ठोकरें। एम्मा को पारुष्य नये जीवन का अनुभव किया। मा का स्नेह जैसे फिर से मिल गया। एम्मा के सामने आने पर मा की याद आ जाती थी। धीरे-धीरे मा की याद एम्मा में ही विलीन होकर रह गई। जब-जब वह मा की याद करता था, एम्मा का चेहरा सामने आ जाता था। अनेक बार मा का आवाहन करना चाहा है, और एम्मा सामने आ गई है।

मा का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। न आकर्षण कभी थी, न स्नेह की। अटपटा लगता था उस समय, जब एम्मा को पीछे छोड़ आगे बढ़ चलती थी। तब वह एम्मा से दूर हट मा की याद करने लगता था। जितनी मात्रा में वह एम्मा की ओर आकर्षित होता था, उतनी ही मात्रा में पीछे भी हटता था।

पल्ले की तरह एम्मा ने अब वह बातें नहीं करता था। दा गंध दूरी वह बीच में बनाये रहता था। एम्मा इस दूरी को नज़र न आता था, वह अदृश हट जाता था। एम्मा को मालूम होता, पल्ले





गई। एम्मा अपने कमरे के अन्दर पड रही। चार्ल्स किसी मरीज को देखने चला गया था।

कमरे का सूनापन एम्मा को अखर रहा था। दो कल्पना-चित्र उसके सामने थे—एक चार्ल्स का, दूसरा सङ्गीत-प्रेमी युवक का। चार्ल्स ने उसके जीवन में पथप्रदर्शन का जैसे काम किया था। उसी के सत्संस्पर्श के सहारे उसने पहला कदम उठाया था। जीवन की आर्थिक भाँकी उसने पाई थी। उसे पूरा करने के लिए ही उसने चार्ल्स का साथ दिया था। लेकिन वह भाँकी पूरी न हो सकी, चार्ल्स तक ही निमग्न रह गई। चार्ल्स ही उसकी दुनिया बन गई। इस दुनिया में कोई नई चीज आई भी तो वह थी बर्था, उसकी लड़की!

वीणा के सारे तार झनझना उठे। सगीत जैसे कराहकर बैठ गया। उसके घुटने टूट गये थे। खण्डित वीणा फिर खींचकर लाई सङ्गीत-प्रेमी युवक को! उसकी छाया उभरकर सामने आई। चार्ल्स ने वीणा को खण्डित किया था, सङ्गीत-प्रेमी युवक उसकी टूटी झट्टी पर मुग्ध हो उठा था। इस मुग्धता को हृदय से लगाये, अलस भाव से, वह पड़ी रही।

आधी रात गये चार्ल्स मरीज को देखकर लौटा। एम्मा के साथ न आकर एम्मा के पति के साथ ही वह युवक रह गया था। चार्ल्स के आने की आहट सुन, एम्मा ने आँखें बन्द कर लीं। गहरी नींद में जेमे सो रही हो। आहट के और अधिक निकट आने पर उसने आँखें खोलीं—जेमे गहरी नींद आहट से उचट गई हो। मिर भागी होने की भूमिका के बाद अनमनेपन से उमने पूछा—“मायी तुम्हें मृत्यु मिला है। रोगी का रोग चाँहे दूर न दुरा हो, लेकिन तुम्हारा रक्ता अच्छी तरह बह गया होगा!”





करके उन्हें देखा । काम की कोई चीज न निकली । बोली—“अभी मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं है । होने पर कहूँगी ।”

“अच्छी बात है,” विसाती ने कहा, “आपसे परिचय हो गया, यही बहुत है । उम्मीद है, आप मुझे भूलेंगी नहीं ।”

अपनी चीजों को उसने सँभालना शुरू किया । मुँह से उसके शब्द अब भी निकलते जा रहे थे । अपनी चीजों को छोड़ चार्ल्स बॉवरी ने एक मरीज को लेकर वह कह रहा था—“डॉक्टर साहब को यच्छा मरीज मिला है । खाँसी उसे क्या आती है मानो भूकम्प आ जाता है । जब खाँसी नहीं थी, तब खुद भूकम्प बना हुआ था । इतनी शराब पीता था कि हृद नहीं । सभी उससे परेशान थे ।”

परेशानी का हिसाब आगे बढ़ा । वह कह रहा था—“क्या बताना, आजकल का मौसम बड़ा खराब है । हवा ऐसी विगड़ी है कि.. ”

उसकी विगड़ी हवा को सुनी-अनसुनी करते हुए एम्मा ने अपनी नौकरानों को पुकारा—चाय लाने को उससे कहा । यथावसर योग्य मेवा पाने के आश्वामन का हिसाब लगाता विसाती चला गया !

चाय पीने के बाद एम्मा और भी स्वस्थ हो गई । वह इतनी मगन थी कि उसे अपने पर आश्चर्य होता था । व्यर्थ ही वह अब तक अपने को कोमलती रही, जब तब इस शरीर को उपेक्षा की दृष्टि से देखती रही ।

आँड़ने के सामने वह पहुँची । काफी देर तक अपने अर्द्ध-प्रयत्न को देख-देखकर मुग्ध होती रही । एकाएक निमी के आने की आहट सुन वह चौंकी । धूमकर देगा—सद्गीति-प्रेमी युवक सामने खड़ा था ।

एम्मा ने उसे देखकर भी नहीं देखा । आँड़ने का वृत्तनाशन मिटाने के काम में उसने अपने को व्यस्त कर दिया । युवक कुछ देर खड़ा



भी उसके लिए उतना ही आकर्षक था। उसके मुँह में निकला—  
इतने अच्छे हैं . ”

‘इतने’ की कोई सीमा नहीं थी। एम्मा भी उसमें डूबकर रह गई।  
सिर उभारने पर घर के काम-काज का उसने फिर देखना शुरू किया।  
पिछले दिनों की उपेक्षा में बहुत कुछ था। जो अन्त-व्यन्त हो गया था।  
नौकर को बुलाकर उसने मावधान कर दिया। अपनी लडकी बर्था के  
भी उसने दाई के पास में बुला लिया। उसका जीवन जीती-जागती  
गुडिया बनकर उसकी गोद में जैसे आगया था। अधिकांश समय  
उसकी देख-भाल में बीतने लगा। जो कोई भी आता, उसके सामने  
गुडिया सबसे अधिक उभरकर आती थी।

चार्ल्स को भी अब सब चीज़ें ठीक-ठिकाने और वक्त पर मिल  
जाती थी। कोट के टूटे बटन पहले से ही टँके मिल जाते थे, जूते-  
टोपियों के लिए उसे इधर-उधर भटकना नहीं पड़ता था। अदृश्य  
हाथ उसका सारा काम कर देते थे। चार्ल्स को आश्चर्य भी होता था।  
मन-ही-मन उन अदृश्य हाथों के काम को देखना भी चाहता था।  
लेकिन ऐसा अवसर आ नहीं पाता था। कई बार ऐसा हुआ कि काम के  
बढ़ाने ही उसने एम्मा को बुला लिया है। फिर कुछ नहीं अथवा याद  
नहीं रहा—कहकर उस कामविशेष को उठा देना पड़ा। अब इसकी  
भी सम्भावना नहीं रही थी। उसके ही काम में व्यन्त इन अदृश्य  
हाथों के साथ फिर में इस गेल को दोहराने का चार्ल्स को सहस्र  
नहीं होता था। जब-जब एम्मा के हाथ दिग्गई भी पड़ते थे तो बर्था  
के लिए। उसके सामने एक क्षण को आने थे, बर्था को उसकी गोदी  
छोड़ फिर विलीन हो जाने थे !



प्रतिक्रिया सामने आती थी। प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व उने अद्भुत लगता था, कुछ देर वह अपने को भूल भी जाती थी; लेकिन वह नहा चाहती थी कि इस प्रभाव के कारण सब उससे दूर-ही-दूर रहे उसका अस्तित्व दिन-दिन एक छायामात्र बनता जा रहा था। वह उन्मुख रहता था। मन-ही-मन चाहती थी, वह ज़मीन पर लोटे, धूल धूसरित होकर सबके सामने जाये, मालूम हो कि वह इसी निम्न को बनी है। चार्ल्स उसे जितना ही अच्छूता समझता था, उतना वह मटमैली बनना चाहती थी—इस हद तक कि मिट्टी का एक टेर समझकर वह उसे ठुकरा दे।

सगीत-प्रेमी युवक की उसे याद आई। उसकी नौकरी लग गई है। वह भी अब चला जायगा। जाये—वह भी जाय। उसे कुछ नहीं चाहिए।

एम्मा ने एक क्षण कुछ स्फूर्ति का अनुभव किया। फिर अपने पल्लंग पर जाकर पड़ रही।

( ९ )

अप्रैल का महीना, वसन्त का प्रारम्भ। कुहरा विलीन हो गया था। वरक श्रोम का मोती बनकर फूल-पत्तों के गले का हार बन चली थी। सम्पूर्ण जीवन अभिसार के लिए जैने तैयार हो रहा था। अपने हृदय की मँगाएँ एम्मा भी खिचकी पर बैठी थी। मिर्गजे की घण्टियों की धिनीन होनी दुःख के साथ उसका अभिसार चल रहा था।

वचन का चित्र सामने था—उसके अपने वचन का भी, गिरने से बचने, कुछ दूर पर, दूर से लटकता का भी। आत्म-मिचौनी का खेल



“आप—और तबोअत ठीक नहीं रहती। घर में डाक्टर,”

अपनी बात पूरी कर भी न पाये थे कि किसी साहसी लड़के चुपके-मे आकर उनकी छड़ी को भटक दिया। एम्मा को छोड़ बैठे और लपके—“ठहर तो सही.....बदमाश कहीं का।”

एम्मा मन-ही-मन मुस्कराई। लडका पहुँच से बाहर हो चुका था। उसे छोड़ एम्मा की ओर आये। कहने लगे—“बड़ा बदमाश है। उसके बटई का लडका है। बच्चे पैदा करना तो लोग जानते हैं, उन्हें सँभालना नहीं। दिन भर आचारागर्दी करता रहता है।”

एम्मा चुप थी। उसे चुप देख वे भी चुप हो गये। बात बदलकर फिर कहने लगे—“बड़े बुरे दिन हैं। कोई कुछ नहीं समझता। वे देहाती—इनकी कुछ न पूछो। एक गाय बीमार पड़ी। समझें, किन की नजर लगी है। आये मुझे बुलाने। मैं क्या करता। धीरे-धीरे गाय के सभी ढोर-डगर बीमार पड़ने लगे। ऐसे बुरे दिन हैं। लेकिन वे देहाती.. .।”

“देहातियों का ही नहीं, औरों का भी यही हाल है”—एम्मा ने कटना शुरू किया। उसके मुँह की बात पकड़कर वे आगे बढ़े। बोले—“हां, बिल्कुल ठीक है। यहाँ की औरतों को लीजिए। गर्दन उठाकर कभी इधर-उधर नहीं देखतीं। लेकिन उनके पति हैं। जिन लान-बूझों में ही बात करते हैं। जिनके पति हैं, वे पति के नाम को रोती हैं। विवाहित से फिर कुमारी बनने को कल्पती हैं। जो कुमारी हैं, वे पति की बात में दिन-रात एक कर डालती हैं।”

“लेकिन मैं दूसरी बात कहना चाहती थी”, एम्मा के मुँह में निश्चय और उन्होंने फिर पकड़ लिया—“यही तो मैं भी करता हूँ।”





खाकर बर्था गिर पड़ी थी। माथे पर उसके हलकों-भी खरान आगड़े थी। चार्ल्स ने उसे गोदों में उठाया, पुचकारा माथे टिचर लगा एम्मा को देने हुए बोला—‘कुछ नहीं। अभी ठीक जायगा।’

बर्था के राने में एम्मा चौंक उठी थी। गोदी में लेते ही वह रु हो गई। एम्मा ने उसे बिस्तरे पर मुला दिया। फिर दूर खड़ी हँस देवने लगी—बर्था की मुक्कियाँ बन्द हो गई थीं। बन्द आँखों के कोरों के पास आँसू की दो बंदे अभी ठहरी थी। एम्मा से देखा न गया। उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

चार्ल्स उसके पास बिस्मर आया। कन्वे पर हाथ धरकर खड़ा लगा—‘कुछ नहीं। चोट मामूली है। अभी ठीक हो जायगी।’

दूफान मालिक ने मुना तो दौड़ा हुआ आया। एम्मा को डाढ़ बँवाने के साथ-साथ छोटे बच्चों के लालन-पालन के अनेक उदाहरण उसने दे दाने। उसकी बातों का कोई अन्त न होता देख एम्मा उठ खड़ी गई। चार्ल्स बेठा हुआ सुनता रहा।

सगात प्रेमों युवक की नौकरी लग गई थी। पर अभी तक वह नहीं सका था। अपनी मा की अनुमति उसे नहीं मिल पाई थी। परदे में लड़का कैसे और किसके साथ रहेगा, वह उसकी समझ में नहीं आता था। अब कुछ सम्झाने के लिए उसने अपनी मा को कई पत्र लिखे। पत्रों छोट-छोट फिर बने-बने। बनी मुश्किल से मा गड़ी हुई। इस बाद वह सफर की तैयारियों में लगा। बटून-मा सामान उम्मे जा कर लिखा। मालूम होता था। वह नौकरी पर नहीं, समार-यात्रा के लिए गया है।



इसके बाद उसने अपनी दासी को पुकारा। वह आई। वहाँ उसे देने हुए कहा— ले जाओ इसे।”

दोनों अकेले रह गये। एम्मा का मुँह दूसरी ओर था—दासी को गोदी में चढ़ी वहाँ को जाते हुए वह देख रही थी। युवक अँगली पर टोपी को टिकाकर उसे घुमा रहा था। कुछ देर दोनों रुक रहे। फिर एम्मा ने कहा— मालूम होता है, आज बारिश होगी। बादल घिर आये हैं।”

युवक को अपने ओवर-कोट की याद आई। बोला—“मालूम तो ऐसा ही होता है। लेकिन मेरे पास ओवर-कोट है। कुछ हर्ज नहीं होगा। सब कुछ मने ठीक कर लिया है।”

उसमें विदा लेकर एम्मा अपनी खिडकी पर आ बैठी। घिरे हुए बादल को देखने लगी। छिपते सूर्य की लाली ने सुनहरी कोरों में उन्हें रँग दिया था। एकटक एम्मा मुग्ध भाव से देखती रही। बादल बगावर घिरन जा रहे थे। कुछ देर बाद तीर की तरह पानी की तेज धौल्लाह पड़ने लगी। एम्मा भाँग चली, पर वहाँ से उठी नहीं। रह-रह कर वह माच रही थी कभी उस युवक के बारे में, कभी उसके ओवर काट के।

( १० )

वहाँ से बाद आकाश निर्मल हो गया, लेकिन एम्मा का हृदय नहीं। धौल्लाहों में भाँगकर वह और भारी हो गया था। निर्मल आकाश अब जैसे उसे हलका करने में लगा था, सूर्य की निरर्णों उसके साथ खेल करना चाहती थी। संगीत-प्रेमी युवक का स्मृति-चित्र भी पड़ले में

एम्मा के कमर की तरह चार्ल्स का मस्तिष्क भी शून्य हो गया। बहुत कुछ ज़िन्दा-पड़ताल करने पर एम्मा ही वहाँ दिग्विधायिनी पत्नी के स्वयं चार्ल्स भी यह नहीं चाहता था कि मिया एम्मा के वहाँ ओर के रहे। वह फाड़ भी उसका नाम आता। उसके मुँह से सबसे पहली और सबसे अन्तिम बात एम्मा के बारे में ही सुनना चाहता। एम्मा के लिए उसका शुभ कामना पाने के लिए वह उसे चाय पिलाता था, रस चाय में उसकी ख़ातर तबाला करता था।

इतने दिन के बाद एक नाटक मण्डली का उस पत्नी में आनंद हुआ। एम्मा के लिए शुभकामनाय हृदय में लिये रहने ही नहीं चार्ल्स का प्रेक्षक का आनंद करने के लिए आनंद लग था। उसी में एक नई बात। एम्मा का नाटक 'द्विधा' नाम का था। 'द्विधा' नाम का उसका नाम 'द्विधा' था।

घर आने पर उसे उचाला ही दिग्वाड़े पड़ता था। एम्मा का इस उजागर रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था।

अपने उजागर अस्तित्व का लिय एम्मा आगे बढ़ती गई—अन्धकार को आलोकित करने के लिए। आधुनिक उपन्यास-कहानियाँ पढ़ उसने छाड़ दिया था। इतिहास और दर्शन की पुस्तकें उसने पढ़ शुरू की। उन्हें समझने के लिए उसने कोप मँगाया, व्याकरण की एक पुस्तक ले आई, नाट लेने के लिए कोरे कागजों का भी एक रख आगवा। मात मात रात का चान्स कभी जाग उठता। मालूम होता, सोइ पुरार रहा है। आँख खालकर देखता, ध्वनि किसी के बुलाने की नहीं एम्मा के पढ़ने की है। इतिहास के पन्ने उसके हाथों का स्पर्श पाकर सुन्नर हो उठ हैं। चारा आर अन्धकार से घिरे रहने पर भी उसके स्मरण में प्रकाश है, इतिहास और दर्शन के सहारे एम्मा उसके जीवन का गुरुवर्षा मुतभा रहा है।

चान्स का यह अच्छा नहीं लगता था। इस तरह एम्मा बीमार पड़ जायगी। यह न खान की मुव रखती है, न पीने की। एम्मा का समझाने के प्रयत्न उसने किये—पहले दबे स्वर से, फिर और और दक। प्रेम और भक्तियों के प्रयोग भी सामने आये। एम्मा सुनती थी मुनक टाल जाती थी। कभी-कभी उलझ भी जाती थी। एक दिन चान्स ने कहा—‘तुम्हें हो क्या गया है। न कुछ खाती हो, न पीती हो। अपने दन-दन पतला पड़ता जा रहा है!’

एम्मा ने चान्स की बात को अन्याकार किया। कहने लगी—‘नहीं, मैं खूब खाती हूँ। तुमने तो ज्यादा ही खाती हो।’

इस बात खाने-पीने को लेकर दोनों में बहस हुई, बहस ने हठ के

हुआ था। लूमी के बारे में सोचना स्थगितकर इन कामाओं को करने की ओर ही वह जुट गया। दोनों प्रेमी प्रतिद्वन्द्विता में ग्रासे। दोनों का यह श्रेणी-मंघर्ष लूमी के लिए महँगा पड़ा। वह रोन के पिसने लगी।

“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता,” चार्ल्स ने कहा, “लूमी को चाहते हुए भी ये लोग क्यों नहीं देख पाते कि छुरी और किमी के बीच स्वयं लूमी के गले पर ही चल रही है।”

एम्मा भुँभुला उठी। बोली—“चुप रहो तुम ! जो बात समझ में नहीं आती, उस पर राय देना फिजूल है।”

“नहीं एम्मा,” चार्ल्स ने कहा, “मैं समझना चाहता हूँ।”

इतना कहकर चार्ल्स चुप हो गया। प्रेम की समझने के लिए नाट्य को और भी ध्यान में देखने लगा। एम्मा अपनी बात कहकर चुप हो गई थी, चुप ही रही।

विवाह का दृश्य सामने था। दुल्हिन के चेहरे में लूमी गद्गल पल्लावर गपटी कर दी गई थी। चेहरा उसका पीला पन गया था। विवाह के लिए नहीं, बलि देने के लिए जैसे उसका शृङ्गार किया गया हो। एम्मा ने यह दृश्य देखा नहीं गया। आँखें बन्दकर कुर्सी पर पड़ी रही। उसके अपने विवाह का दृश्य सामने था। विवाह में पहुँचते कचिर भी बन्द आँखों के सामने सजीव हो उठे थे। चार्ल्स के आगमन ने उसके हृदय में जो उथल-पुथल मचा दी थी, क्या समझ में वह प्रेम की या ? हृदय की सन्धारण कुड़कुड़ के सन्धारे ही क्या प्रेम आता है ? कुड़की समझने का उसे अवसर नहीं मिला। उसके लिए वह अपने सन्धारण नहीं दी। अपने घर की शून्यता उन्होंने उसे

के बारे में चार्ल्स को बहुसी-सा ऊँच-नीच समझा-बुझाकर वह चला गई।

मा को गये कई दिन हो गये। चार्ल्स अपने मरीजों में व्यस्त था, एम्मा अपनी खिड़की से ससार का दृश्य देखने में। अधिकांश सन वहीं बैठे बीतता था। एक दिन उसने देखा, कोई सामने टहल रहा है। नपे-तुले कदमों से वह इधर-उधर आता-जाता है। अपने कपड़ों का भी उसे विशेष रूप से ध्यान है। रह-रह कर गर्द-सी झाड़ता रहता है। एम्मा उसे देखती रही—पहले दिन देखा, दूसरे दिन भी वह दिखाई पड़ा और तीसरे दिन भी। वह खिड़की पर होती थी, तब भी टहलता था, नहीं होती थी, तब भी दिखाई पड़ता था। नपे-तुले कदमों के इस बेंबे क्रम में एक दिन अन्तर पड़ा। पास आकर वह बोला—“डॉक्टर साहब हैं ?”

चार्ल्स उस समय घर में मौजूद था। नये रोगी को उसने परीक्षा की। मानूम हुआ, हृदय की गति नपे-तुले कदमों का साथ नहीं दे रही है, ग्लूब का दौरा भी कुछ बढ़ा हुआ है। देखने के बाद चार्ल्स ने दवाई निश्चयी की। दूसरे दिन उसमें फिर आने की कहा। दवाई का प्रभाव तेज़र बढ़ चला गया।

नया रोगी दूसरे दिन फिर आया। चार्ल्स ने उसके हृदय की परीक्षा लेनी शुरू की। कानों में नलकी लगाये चार्ल्स उसके हृदय की धड़कन गिन रहा था और वह सोच रहा था एम्मा के बारे में। हृदय के गति के साथ ही उसकी समझने के लिए जिसे कानों में नलकी लगायी नहीं हो सकती। मेरे हृदय की गति  
लगा रहा है, एम्मा के हृदय की





की जगह भी इस समार में नहीं रही है। वगैरे उम्मीदों और उम्मीदों  
 माथ उमने समार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की  
 उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में घूमना चा  
 था, लेकिन बस न सका। सभी उसे गंदकर चलना चाहते थे।  
 कुछ छोड़कर आखिर उसे इस सूनी बस्ती का महारा लेना पड़ा।  
 देहाती बनकर सोया सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ  
 भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो सूर।  
 उसमें मिर टकरात-टकरात उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाकड़ों  
 घर के आस पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा  
 का देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिबेदी प  
 तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उठना  
 असंभव हो गया है। एम्मा को इस ज्वाल से निकालना ही होगा।

चलते चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता।  
 दुनिया भर के ईंट गड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क  
 की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चटकर। पैदल चलें तो पता चले, सड़क  
 क्या हो रहा है। पाँवों के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-रोडों  
 का तुरंत खयाल हो आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव  
 में जो आघात पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता !

निगारिया के गीने हाथ और निगण आँखें देखकर भी उमता यही  
 हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, धँसी हुई आँखें, अन्ध-  
 कन्ध अन्धिय दिगार्ड पढ़ने पर समार के कूर हाथों का निच उठने  
 सामने खड़ा हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अलङ्कार युवती को  
 देखकर उसका हृदय मर्मांग उठता—इसे जग भी पता नहीं कि कैसी



की जगह भी इस ससार में नहीं रही है। बड़ी उम्मीदों और उमङ्गों के साथ उमने ससार में प्रवेश किया था, लेकिन खड़े होने तक की जगह उसे नहीं मिली। भले आदमियों की तरह वह नगर में बसना चाहता था, लेकिन बस न सका। सभी उसे रौंदकर चलना चाहते थे। सप कुछ छोड़कर आगिर उसे इस सूनी बस्ती का सहारा लेना पड़ा। देहाती बनकर सीधा-सादा जीवन वह बिताना चाहता था। लेकिन यहाँ भी वही हाल है। खेती करने के लिए जमीन भी मिली तो बज़र। उसमें मिर टकराते-टकराते उसके हृदय की धड़कन बढ़ गई, डाक्टर के घर के आस-पास उसे चक्कर लगाने पड़े। चैन फिर भी न मिला। एम्मा को देखकर उसका हृदय तिलमिला उठा। विवाह की बलिवेदी पर तिल-तिल करके उसकी जान जा रही है। रक्षक न होकर पति उसका भक्षक हो गया है। एम्मा को इस जझाल से निकालना ही होगा।

चलते-चलते उसके पाँव में ठोकर लग जाती, वह भन्ना उठता। दुनिया भर के ईंट-गोड़े सब हमारे लिए ही हैं। सफाई के दारोगा सड़क की देख-भाल करते हैं घोड़े पर चटकर। पैदल चलें तो पता चले, कहाँ क्या हो रहा है। घोड़े के नाल लगवाने की तो उन्हें चिन्ता है, ईंट-गोड़ों का तुरत खयाल ही आता है, लेकिन ज़मीन पर चलनेवालों के पाँव में जो आक्ले पड़ जाते हैं, उनकी ओर कोई नहीं देखता।

मित्रागियों के रीते हाथ और निगण आँखें देखकर भी उसका यही हाल होता था। किसी स्त्री का पीला चेहरा, बेंसी हुई आँखें, अम-व्यन्त अम्लित्व दिखाई पड़ने पर ससार के क्रूर हाथों का चित्र उसके सामने खड़ा हो जाता था। किसी स्वस्थ, सुन्दर और अलङ्कृत युवती को देखकर उसका हृदय समीप उठता—इसे ज़ग भी पता नहीं कि किसी



उसे डर था कि कहीं और लोग बात का बतगड़ न बना दें। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा में वह था। एक दिन एम्मा को अधिक सुस्त देखा उसने चार्ल्स से पूछा—“ये आज बहुत सुस्त दिखाई पड़ती हैं। मालूम होना है, इनकी तबीयत कुछ ठीक नहीं रहती।”

एम्मा उस समय वहीं खड़ी थी। सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ा, फिर तुरंत वहाँ से खिसक गई। चार्ल्स ने कहा—“हाँ, इनकी तबीयत ठीक नहीं रहती।”

“दवाइं तो आप देते ही होंगे ?” उसने पूछा।

“देता तो हूँ, लेकिन दवाइयों से इन्हे परहेज है। कहती हैं, दवाइयाँ से कुछ नहीं होने-जाने का।”

यह तो वह पहले ही से जानता था। दवाइयों से रोग दूर नहीं होते। रोग कम होने नहीं आते, डाक्टर बराबर बढते जा रहे हैं—यह बताना मुश्किल है कि रोगों की संख्या अधिक है अथवा डाक्टरों की। एक बार जी में आया, अपनी योजना को सामने रख दें, लेकिन यह निश्चय नहीं कर सका कि उसके लिए यह अवसर ठीक होगा या नहीं। बहुत कुछ सोचने-समझने के बाद उसने कहा—“इनमें रुहिए, गंगा थोड़ा-बहुत धूम लिया करें।”

शाम को चार्ल्स ग्याना खाने बैठा। इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने कहा—“पर मैं पड़े-पड़े भी जी भारी हो जाता हूँ। अच्छा हो, कुछ देर बाहर घूम आया करो।”

इतनी-सी ऊँठ के साथ एम्मा ने इस योजना को टाट दिया। लेकिन चार्ल्स के कर्त्तव्य की इतिश्री इतनी सज्ज नहीं हो सकी। जड़-जड़ कुत्तार आता था, एम्मा की तबीयत का हाल पूछना न भूलता था।



से पहले वह जान लेना चाहता था, पानी कितना गहरा है। वाक्य को अधूरा छोड़ अधूरी दृष्टि से वह एम्मा के मुँह की ओर देखने लगा।

अधूरे वाक्य को एम्मा ने पूरा कर दिया। वह घूमने चलेगी। चार्स भी आ गया था। यह सुनकर बहुत खुश हुआ। पीठ ठोत्ते हुए उसने बुलनर को विदा दी। जीवन में पहली बार एम्मा को भी उसने गुदगुदाया। झुंझलाकर एम्मा अलग हट गई।

झुंझलाहट उच्च शिखर पर पहुँची दूसरे दिन। तैयार होना न चाहने पर भी एम्मा घूमने के लिए तैयार हो गई थी। तैयार होने पर घड़ी की ओर उसकी आँखें लगी थी—इसलिए नहीं कि घूमने का समय जल्दी आये, बल्कि इसलिए कि घूमने की वह घड़ी किसी तरह टल जाये। धीरे-धीरे वह घड़ी आई भी और टल भी गई। टलने की प्रतीक्षा के टल जाने पर एम्मा का हृदय झुंझला उठा। पहने कपड़े को उतारकर फेंक दिया। पलङ्ग पर जाकर पड़ रही—आधी नीचे, आधी ऊपर। झुंझलाहट फिर भी पीछा नहीं छोड़ रही थी—अब इसलिए कि रोना चाहने पर भी आँसू क्यों नहीं आ रहे हैं ?

( १२ )

टेढ़ महीना गुजर गया। बुलनर दिखाई नहीं पड़ा। उसने सोचा—जल्दी करना ठीक नहीं। तैयार तो वह हो ही गई है। अब उसे भी कुछ समय देना चाहिए। नहीं तो वह समझेगी, घूमना उसके अपने लिए नहीं, मेरे लिए हो रहा है।

यह सोचकर वह टल गया। उसे विश्वास था, अभाव में अतृप्त और भी गहरी हो उठती है। एम्मा उन लोगों में नहीं है, जो

था। कुछ न कर सकने पर बड़ा अटपटा लगा। एकाएक उसकी नजर गुलदस्ते पर पड़ी। जरूरी काम को जैसे एक सहारा मिल गया। कानों बढकर गुलदस्ते को उठा लिया। सुग्धभाव से बोला—“मेरे सुन्दर फूल हैं।”

चार्ल्स की आवाज सुनकर एम्मा चौंक उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता देखकर उसका सारा शरीर मरोड़ सा उठा। उसे लगा, चार्ल्स के स्पर्श ने गुलदस्ते के फूलों को और भी छिन्न भिन्न कर दिया है। तेजी से उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता ले लिया। गुलदस्त में पानी भरा। गुलदस्ते को उसमें रख सन्तोष की साँस ली।

चार्ल्स ने उसने पूछा—“कहिए, क्या काम है?”

“कुछ नहीं,” चार्ल्स ने कहा, “यही जानने आया था, था। तुम्हारा जी कैसा है?”

“ठीक है,” एम्मा ने कहा। जरूरी काम में इस उपमहार को हँस में लगाये चार्ल्स चला गया।

अनिशान मगार ने ऊपर उठकर जीवन ने एम्मा के लिए एक आदर्श रूप प्रयोग कर लिया। मगार की विगारी हुई वेदनाओं को मनेटर उनके चरणा में एम्मा अपने अस्तित्व को उत्कर्ष पर ला चार्ल्स थी। दल-विशेष हृदय आसू बनकर बह चला था।







देख गुलदस्त क फूलों का अभाव चार्ल्स को भी नहीं प्रसन्न। वह खग था।

बुलनर का याचनाशील मस्तिष्क हृदय की धड़कन को पीछे छोड़ आग बढ रहा था। जीवन का अनुभव करने के लिए नये-नये ग्रामिणों वह करता था। कितने ही दिनों तक प्रेमपत्रों का क्रम चला। चिट्ठी लिखने के बहुत स कागज और लिफाफे एक बार एम्मा झरीद लाई था। उनका अब तक कोई उपयोग नहीं हो सका था। बुलनर ने उन्हें भा जीवनदान दिया। एम्मा पत्र लिखती थी। बस्ती से बाहर, एक निश्चित स्थान पर, पत्र छोड़ आती थी। बुलनर वहाँ आकर पत्र ले लेता था। उत्तर लिखकर फिर उसी जगह छोड़ देता था। एम्मा उसे गाता था।

प्रेमपत्रों के द्वारा ही दोनों एक-दूसरे में मिलते थे। बस्ती से बाहर, एक दूसरे में अदृश्य रहकर, प्रेमपत्रों का यह आदान-प्रदान चलता था। अद्भुत जीवन का अछूता आकर्षण पूर्व निश्चित योजना के अनुसार सामने आ रहा था। एम्मा को यह बहुत अच्छा लगता था। सम्न्ताप की बात इसमें एक थी। वह यह कि बुलनर के पत्र नपे-तुले होते थे। 'गन चुन शब्द, गिनी-चुनी पक्तियाँ। थोड़े में ही उसकी बात समान हो जाती है। अपने पत्रों में जितनी ही वह इसकी शिकायत करती था, उतने ही उसके शब्द नपे-तुले हो जाते थे। शब्दों के स्थान पर एम्मा की शिकायतों को बाँधने के लिए जैसे उसने मिपाही छोड़ दिये थे। प्रत्येक शब्द मुँह पर उँगली के जैसे कह रहा था—नू चुन रह!

एम्मा में न रहा गया। चार्ल्स मंयों-ही-मंयों कहीं चला गया था। मन में एक टूट उठी, बुलनर में मिलने के लिए एम्मा चन दी।



चिल्लाना—कुछ भी सुनकर वह चौंक पड़ती, चलते पाँव एक जगह बँधकर रह जाते ।

घूमने वह अब भी जाती थी, लेकिन उस समय, जब किसी वस्ती नाद में हूबी रहती । बुलनर के घर भी वह जाती थी, लेकिन उसके चारों ओर चक्कर लगाकर लौट आती थी । आशङ्का के अधिक बढ़ जाने पर कई-कई दिन तक घर से बाहर नहीं भी निकलती थी । ऐसा भी हुआ है कि एक जगह जहाँ बैठ गई है, वहाँ घंटों बैठी हो रह गई है । उठने की जब-जब कल्पना की है, वह काँपकर रह गई है ।

ऐसी जगह वह जाना चाहती थी, जहाँ उसे कोई न जानता हो, उसकी आशङ्का पाकर किसी के कान न खड़े हों । अपने घर को बदल डालने के लिए भी उसने चार्ल्स से कहा—“इस घर में अब जी नहीं लगता । अकेले रहने पर बड़ा डर लगता है । दूसरा घर लिये बिना काम नहीं चलेगा ।”

सोते-सोते चार पड़ने पर चार्ल्स ने एम्मा को कई बार सँभाला था । कितनी देर तक उसके हृदय की धड़कन का अनुभव करते हुए वह मन-ही-मन काँप भी उठा था । घर बदलने की बात उसे भी ठीक लगी । बोला—“हाँ, पर बदल डालना चाहिए । खोज में रहूँगा ।”

अगनी नौसगनी से भी एम्मा धवरा उठती । वर्या, को न बिना-कर उसकी दृष्टि एम्मा के पीछे लगी रहती है, ऐसा उसे मालूम पड़ता था । नौसगनी का मुँह बन्द और आँखें फेरने के लिए एम्मा उसे कुछ न-कुछ भेंट करने लगी ।

बुलनर एम्मा से भी अधिक स्वर्क था । भुटपुटा हो जाने पर फाँटे की तरह वह आता था । आस-पास घूँटकर चला जाता था ।



स्वर में दोनो बातें करते थे—दीर्घ निःश्वास जैसे एक-दूसरे का अभि-  
कर रहे हो। रात की निस्तब्धता में उनका स्वर भी जैसे निस्तब्ध हो  
अपनी अभिन्नता घोषित करता था।

बरसात के दिनों में दोनो उस कमरे में छिप रहते, जहाँ च-  
रोगियों को देखा करता था। एम्मा ने कुछ मोमबत्तियाँ छिपाकर वहाँ  
छोड़ी थी। उनके धीमे प्रकाश में अनावश्यक ठोकरों से बचाव  
जाता था। अन्धकार का बोझ भी किसी हद तक हलका हो जाता था।

सहज ही इस कमरे में बुलनर ने अपना स्थान बना लिया था।  
रोगी के रूप में एक दिन उसने इस कमरे में प्रवेश किया था। इन्हीं  
कमरे में घड़ी हाथ में लेकर चार्ल्स ने उसके हृदय को घड़कन को एक  
एक करके गिना था। बीती बातों की यादकर वह मुस्करा उठता।  
चार्ल्स पर भी जब तब एकआध छीटा कस देता था।

एम्मा को यह अच्छा नहीं लगता था। चार्ल्स ने बुलनर का कु-  
नहीं बिगाड़ा था। यह ठीक है कि चार्ल्स के प्रति एम्मा के हृदय में  
असन्तोष था। इस असन्तोष के सहारे ही बुलनर आगे बढ़ा था वहाँ  
भी उमी को लेकर करता था। लेकिन एम्मा इस असन्तोष में ऊपर  
उठना चाहती थी, बुलनर को भी इसमें ऊपर उठा हुआ देखना चाहती  
थी। जब कि बुलनर इसके अभाव में एक बात भी नहीं कह पाता था।

मिमी के पाँव की आदत का आभास पाकर एम्मा एकाएक चार-  
उठती। उसे लगता, जैसे कोई आरत है। बुलनर से कहती—“मालूम  
होना है, कोई आरत है ?”

बुलनर दूर उठता। मुँह आगे बढ़ाकर बत्ती को पूँक में बु-  
देता। अन्धकार के आवरण में कुनसुनाकर एम्मा के अग्रिम में बि-  
जाता।

वह दबा पड़ा रहा। जितना ही वह यह सब सोचता, उतना ही एम्मा के गाने की प्रशंसा करता। देखते-देखते वह समय भी आ गया, जब एम्मा का संगीत-प्रेम गाने की चार कड़ियों और चार्ल्स की प्रशंसा मिला गया। संगीत का कहीं पता नहीं था, प्रशंसा चारों ओर सुनाई पड़ती थी।

प्रशंसा का यह प्रचार भी एक सीमा तक चलकर ठहर गया। अपनी ओर से चार्ल्स अब कुछ नहीं कहता था। एम्मा के संगीत-प्रेम की प्रगति का उल्लेख होने पर वह उत्तर देता — ‘हाँ, इधर गाना रुक कर दिया गया है। उत्साह में एम्मा ने अपने गले की ओर ध्यान नहीं दिया। उसके गले की नसें झनझना उठीं। योग भी तो पड़ता है तो दुखने लगता है।’

एम्मा से मिलने पर कहता — “अपने को पहचानकर भी तुम नहीं पहचानती हो एम्मा! यह तुममें बड़ा ऐंठ है। दो घड़ी तो बर्बाद जाता था, वह भी तुमने बन्द कर दिया।”

दूरान-मालिक का चार्ल्स के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध था। मालिक के अभाव का प्रभाव उस पर भी पड़ा। चार्ल्स की बात की और भी स्पष्टतर वह कहने लगा — “यह तो प्रकृति की देन है। यों तो रोना गाना सभी को आता है। लेकिन संगीत—वह सभी के काम की नहीं। यह जीवन की निधि है। इसका उपेक्षित करना ठीक नहीं। परन्तु इसका प्रचार आसन्न बंद रहा है। हमारा काम है, जो लोगों का जीवन तो बँट चुका। अब क्या गायेगे और क्या बजायेंगे? लेकिन अपने काम-वृत्तों के लिए तो कुछ करना ही होगा। देना तो हमें पता है। माँ को ही संगीत से रुचि न होगी तो बेटी में इसका अभाव क्यों और भी स्पष्ट है।”



ऐसी चीज वह चाहती थी, जिसके सहारे एक घड़ी के लिए भी वह न भूल सके।

कभी-कभी अपनी मा की याद भी उसे हो आती थी। मा को बुलनर में घण्टों बातें करती। बुलनर भी अपनी मा का हाल सुनाया। बीस साल उसकी मा को मरे हो गये। उसके जीवन में निःस्नेह था, सब मा के साथ चला गया। सुनकर एम्मा व्यथित हो उठी। बुलनर को हृदय में लगा लेती। आकाश की ओर दोनों की आँखें उठा कर रह जाती। मा का आशीर्वाद पाने के लिए दोनों विह्वल हो उठते।

मा के बाद बुलनर को जीवन में स्नेह नहीं मिला था। नो मुँह मिला, वह था अनादर, उपेक्षा और ठोकरें। एम्मा को पारुष्य नये जीवन का अनुभव किया। मा का स्नेह जैसे फिर से मिल गया। एम्मा के सामने आने पर मा की याद आ जाती थी। धीरे-धीरे मा की याद एम्मा में ही विलीन होकर रह गई। जब-जब वह मा की याद करता था, एम्मा का चेहरा सामने आ जाता था। अनेक बार मा का आवाहन करना चाहा है, और एम्मा सामने आ गई है।

मा का यह रूप उसने पहले कभी नहीं देखा था। न आकर्षण कभी थी, न स्नेह की। अटपटा लगता था उस समय, जब एम्मा को पीछे छोड़ आगे बढ़ चलती थी। तब वह एम्मा से दूर हट मा की याद करने लगता था। जितनी मात्रा में वह एम्मा की आँखें आँसू होता था, उतनी ही मात्रा में पीछे भी हटता था।

पहले भी तरह एम्मा ने अब वह बातें नहीं करता था। दा गंध दूरी वह बीच में बनाये रहता था। एम्मा इस दूरी को नज़र नहीं आता, वह अदृश हट जाता था। एम्मा को मालूम होता, पता

पर जैसे मकान-ही-मकान रह गये थे। एम्मा का जी भारी हो चला। आँखें बन्दकर जीवन की कल्पना वह करने लगी। ऊँची-ऊँची दीवारें अब उसके सामने नहीं थीं, किसी का दीर्घ निःश्वाम वे अब बगल में नहीं थीं। दीवारों की ओट में छिपे भयानक जीवन की अनेक कल्पनाएँ उठीं और चिमनी के धुएँ में अपना आकार खोकर विलीन हो गईं। एम्मा का जी घुटने लगा। खिड़की से बाहर उसने आधा शरीर निकाल लिया था। इसी समय घोड़े पर चाबुक पड़ा। गाड़ी की गति तेज हुई। एम्मा के बाल लहराकर अस्तव्यस्त हो हवा में उड़ने लगे।

गाड़ियों का अन्धा आगया था। एम्मा उतर पड़ी। एम्मा ने अपने कपड़े को ठीक किया, हाथ के दस्ताने बदल डाले, पैर में नये भादू पहने। कंधे पर पड़े शाल को संभालते हुए वह आग गई। प्रकाश के साथ-साथ उसने नगर में प्रवेश किया। सड़कों की सड़कें खड़ी थीं, दूफानों के ताले खुल रहे थे। रात की सुमारी उतार कर नया जीवन सामने आ रहा था। एम्मा का साहस नहीं हुआ कि आँखें मीनकर उसे देखे। कुछ देर नीची दृष्टि सिये चलती रही, फिर एक गली में वह रुक गई। जीवन के इस जागरण को आँखों की आलस का बंद चलना चाहती थी। उसे पता भी नहीं था कि बन्द कमरे और बंद गाड़ी को छोड़कर लियॉन भी इस अँधेरी गली की शरण में चला है। कुछ दूर चलने पर दोना की भेंट हो गई। आर्नेस्ट मिन्न ने अभिगदन को आश्चर्यमय बना दिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते लगे। अभिवादन पूर्ण हो गया।

मिन्न के कमरे की अब आसन्न हो गई थी। मंगेसी की ललक का बहाना बनाया गया। नौका के आसार का बंद बन चुका

करने लगी। उसके कपटो पर मिट्टी लग गई थी। एम्मा ने भाँस साफ कर दिया। कोढ़ की याद भुलाने के लिए उड़ती चिड़िया की श्रोत उसने वर्षा का ध्यान रीँचा—अरे रे, देखो तो, वह ले उड़ी !

फिर वर्षा को नीचे छोड़ कमरे में टहलने लगी। बुतनर उन रात आया था, लेकिन उसने कोई बात नहीं की। उसकी उपेक्षा में 'घनिष्ठ' होकर वह चला गया।

( १४ )

चान्ग का जीवन एकरा हो चला था। इस एकरसता का कारण एम्मा नहीं थी। बुतनर का भी इसमें कोई स्थान न था। अपनी उम्र में अपनी डाक्टरी से था—जिस तरह उसकी डाक्टरी चल रही थी, उस दिमाग से कुछ न हो सकेगा।

रह रहकर वह अपने बारे में सोचता था। डाक्टरी से अधिक उसने सोचना चलता था। उसे अपनी मा का खयाल आया, फिर पिता का। स्कूल-जीवन का वह पहला दिन भी याद आया, जब मा लम्बे गितगितानाकर हँस पड़े थे, उनकी हँसी में उसकी टोपी उछलने लगी थी। फिर भी प्रायः में उसने अपना स्थान बना लिया था। उसे आशा होने लगी थी, वह अपने पाँव पर खड़ा हो सकेगा। तीन साल बाद उसके पाँव फिर उगरे। दूसरे स्कूल में उसे भेज दिया गया। डाक्टर की मोटी मोटी हिलारें, मुटों की चर्रि काट—सबका संभालना हुआ था अपने बल। डाक्टर यह बन गया। डाक्टर के साथ साथ बात भी बन गई। फिर एक प्रेमी ! सब कुछ बनने पर भी वह कुछ नहीं बन सका। वह देशकी प्रेमा है, इसकी सीमाओं में टकराकर रह जानेवाली उम्र की डाक्टरी है।

प्रत्यक्ष करती थी, उस समय एम्मा का ध्यान उसकी ओर आती होता था। बाधाहीन होकर बर्था फिर अपनी दुनिया में घुटना के चलने लगती थी।

तटस्थता का यह रूप अनायास ही इस बार दूर हो गया। एम्मा बर्था के खेल में हाथ बँटाने लगी। नये-नये खेलों का बर्था के तीर में प्रवेश हुआ। सबसे ऊपर प्रधान रहा तीर-कमानों का खेल। एडवर्जें तीर-कमान एम्मा ने उसके लिए बनवा दिये थे। छोटे-छोटे हाथों में बर्था उन्हें सँभालती थी। चार्ल्स भी सामने होता था और एम्मा भी। पास जाकर एम्मा निशाना साधना बताती थी। दूर खड़े रहकर फिर तीर छोड़ने के लिए कहती थी। बर्था तीर छोड़ती थी। आगे न बढ़कर तीर-कमान की डोरी में उलझकर रह जाता था। देखा चार्ल्स सन्तोष का माँस लेता, निशाने को देखाकर उत्सन्न हुए पक्षी दूर हो जाना—फिर ग्विनग्विना कर हँस पड़ता। बर्था भी मुँहासे नाचकर तीर-कमान फेंक देती थी।

( २९ )

टूटी टोंगी को मीठा करने में चार्ल्स इतना अभ्यस्त नहीं हुआ था जितना कि कागज की नाव बनाने में। आवधार के रस्ते कागज की उम्मेद शुनक मिला था। बाद में रंगीन और फलदार कागज लाना पड़ा। टूटी और बर्था, जितनी ही तरह की नावें उम्मेद कागज की। आगे तीर-कमानों के छोड़कर बर्था कागज की नावें भी बनाती थी। चार्ल्स की मदद चला जाता तो बर्था उसकी प्रशंसा करता। वह आगे बढ़कर नाव बनाना शुरू करता। लगे ही







गोटे ठापे और माँगपट्टी में दिन बितानेवाली युवतियाँ भी उन पर जैसे दृष्टी पड़ती हैं ।”

दूकान मालिक का जीवन भी अब प्रशस्त हो गया था । चाणू में उपायन डाक्टर ने जैसे उसी को बर लिया था । जो कोई भी था, उसी के सामने उस सत्य का स्पष्ट कर रखता । उपेक्षित डाक्टरी की प्रतिष्ठा दयनीय दशा हो गई है, किस प्रकार लोगों का उस पर मेहरबान उठता जा रहा है, व्यापक हृदय में सशब्द वह व्यक्त करना । डाक्टरी का अन्धश्रुत्या इतिहास उसने तैयार कर लिया था । काँउमने जन्म लिया । कमाल में उसे पाला-पोसा, शैशव को पार कर किस प्रकार वह इस अवस्था का प्राप्त हुई, पूरा चित्र खींचकर वह सामने रख देता था । बाद में फिर कम तरह से, किस-किस के समर्थ में उगम में अक्षय गाथायुक्ती, मुख्यतः परिवार के रूप में किन किन अवस्थाओं में सार सर सर यह आँटे, डाक्टरी के इतिहास में यह सब भी आ जाता था । वह उन्मत्त और आवण से इस इतिहास को वह दोहराता था । उन्मत्त उसका स्वर तब ही चलता, दिशा विशेष के आ जाने पर वह स्नेहना उठता । अयाय्य और बच्चे हाथों ने डाक्टरी की जाँच की तरह माँ, पिता समझे बूझ उसके दामन पर जो हाथ डालते हैं वह उन्मत्त बच्चा ही नहीं होता था । वह कहता—“कत के दोहरे, जहाँ है डाक्टर जान” डाक्टरी न हुई, बसों का लेल हो गया । पुण्यो ने भी उन्मत्त कहा डाक्टरी का न देख, वे भी आजकल डाक्टर ही पैदा हो रहे हैं ।

उन्मत्त का यह बच्चा बच्चे से । आये सार नई अन्मत्त पैदा की । वह सब सच्चाई ही है । एक का नाम उसने नेहरी रखा था ।

















चाहती थी, उसके पाँव की आहट से घबराकर धूल अलग हो जाती थी।

सब कुछ भटककर एम्मा फिर सड़ी हो जाती थी। गोया पक्ष अपने पाँव पर खड़ा होकर चलने लगता था। देरानेवाले हँसने, इशारे करते थे, कहनी-अनकहनी बातें उनके मुँह से निकलती थीं। गोये पन्ने की गति में कोई अन्तर इससे नहीं पड़ता था। जो थोड़ा नृत्य अन्तर होता भी था, होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना और भिन्नार्थियों की आशाभरी आँखों उसे सँभाल लेती थी। गोये पन्ने का मार्ग और भी प्रशस्त हो उठता था।

हाथ के तग हो जाने पर प्रशस्त मार्ग तग हो चला। होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना गिमकने लगी। एम्मा के सामने आने पर पहलेवाले उन्माद का प्रदर्शन अब नहीं होता था। एम्मा देखती थी, उन्माद का स्थान उपेक्षा लेती जा रही है। भिन्नार्थियों की आँखों, मार्ग हाथ लीट जाने पर भी, उपेक्षा में नहीं भर गई थी, कृतज्ञता का भाव उनमें था। होटल की उपेक्षा को भिन्नार्थियों की कृतज्ञ आँखों में सँभाल लिया। लेकिन एम्मा इस देख का स्वागत नहीं ले सकी। उन्हें छोड़, पटुची बड़ प्रहृति की गोद में—उसने फूलों में सँभलना शुरू किया। छिपे सूर्य की लाली का दोनों बाँटे पसारकर अपने हृदय में भरने का प्रयत्न वह करने लगी।

एम्मा का मार्ग प्रेमी त्रिवेण का चित्र उसकी आँखों के सामने लगे हो गया। कल्पित के सुन्दरे उसने अपने दाँतों में गोंग लिए। कल्पित के सुन्दर का एक देर दिखावे त्रिवेण की आँख बंद कर गई।

अब वह अपने का चित्रानुसार ही चला देगा। एम्मा ने





सम्भव-असम्भव, अनेक प्रकार की कल्पनाएँ वह करने लगता। वह अपने को बन्दकर जाग्रत स्वप्न देखने का प्रयत्न वह करता था। कभी कभी इसमें उसे सफलता भी मिल जाती थी। वह देखता था, एम्मा का कमरा प्रकाश से जगमगा उठा है। अपने हृदय में समाकर एम्मा उसे ले गई है। फूलों का शृङ्गार उसने किया है। वह स्वयं भी एम्मा के शृङ्गार का जैसे एक फूल बन गया है।

फिर एकाएक आशङ्कित हो उठता। मधुर स्वप्न दुःस्वप्न में बदल जाता। मा ने आकर एम्मा का शृङ्गार नोच डाला है। बिगड़े फूलों को अपने पाँव में मा रौंद रही है। कमरे का प्रकाश अन्धकार बन गया है। एम्मा इस अन्धकार में लोकर रह गई है। उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

कभी-कभी वह देखता—एम्मा का कमरा पहाड़ियों में जिंग हुप तग मार्ग बन गया है। दूर तक ऊँची पहाड़ियाँ चली गई हैं। न मार्ग का अन्त दिखाई पड़ता है, न पहाड़ियों का। अवेग हो-अवेग दिखाई पड़ता है। हाथ पकड़कर नहीं, घसीटकर एम्मा उसे लिये जा रही है। पिन्डना न चाहकर भी वह घिसट रहा है। उसका अन्त धन धिया हो गये हैं।

एकाएक वह कराह उठता। दुःस्वप्न का भगमीत फिर उसके सम्मुख है। अपनी छात्र छात्र चला जाता। आँसू का भार उस पर सारा स्वप्न देखने का फिर प्रयत्न करता। मरना न होने पर वह दुःस्वप्न ही स्वप्न में ही फिर से मरना चाहता था—एम्मा उसे चाहते होते जा रही है। अन्त दिनों में नहीं, युग दिनों में एम्मा न चाहते मरने लगा है। मार्ग ही ऐसा है जिस पर चलना नहीं है।

था, जैसे दो बहनें हों। एक दिन आयेगा, जब उसका विवाह हो  
और.....।

उसकी कल्पना एक आकार ग्रहण करने जा रही थी कि मा ने  
आवाज़ आई—“चार्ल्स !”

एम्मा को सोया देख मा ने मुँह फेर लिया। टाँग पसार आराम  
रानी सो रही हैं। कपड़ों तक का होश नहीं। इसे क्या पड़ी है? जिसे  
जी को लगती है, वही जानती है !

मा की आवाज़ सुन चार्ल्स चौंक पड़ा था। उसका सफ़रकाया  
मुँह देख मा का हृदय मसोस उठा। एम्मा के प्रति भुँकुलाहट  
उतनी ही मात्रा में उभर आई। उसका हाथ पकड़ अपने कमरे में  
जाते हुए मा ने कहा—“चेहरा कितना उदास पड़ गया है। उदा  
की बात ही है। यह तो कहो कि चार्ल्स है, और कोई होता तो पता  
जाता !”

चार्ल्स का विस्तरा मा ने अपने कमरे में ही लगा दिया। जब  
वह सो नहीं गया, उसका माया सहलाती रही। रह-रह कर कण-कण  
से चार्ल्स की ओर वह देखती और एम्मा को भला-बुरा कहती जा  
यी। सुबह होने पर एम्मा को मुनाकर कहने लगी—“चार्ल्स घर  
बट्टू करा, छान्नी का बोझ ले आया है। बेचारे का दम घुटा जा रहा  
और यह बोझ डे कि हलका होने में ही नहीं आता !”

बर्बाद विस्मय मा के कमरे में पहुँच गई थी। किसी चीज़  
गिरने की आवाज़ आई। मा ने जाकर देखा, बर्बाद ने गुलदान  
डाला है। भुँकुलाहट सीमा पार कर चली। बोली—“क्या छोटें,  
बेटे, सभी घर का नाश करने पर तुले हैं !”

म आपनी नम्रता का डंकती हुई बगनी में समाने के लिए फिर वह दब जाता।

आँखों में जाला लिये एम्मा मुवह उठती थी। मारे खदन में दर्द भरा नम्रता था। वे कहने इतना नहीं था कुछ न करने दे। आँखों की नीली भगन मय का साथ देता थी, खदन का दर्द भी नवजागरण के भाव में साधा नहीं जाता था। मास्तिक की भूतभूनाहट भी नीचे उतर आती थी। मारे खदन के साथ उसका स्वर भी मिलाया जा सकता था।

मारे खदन की प्रतीक्षा एक दिन मार्ग में हुई। दूर से ही एम्मा को पहचान लिया। वह कुछ भूलक दवाई पड़ी। एम्मा ने आँखें नम्र कर लीं। खदन ने भी आँखें नम्र कर लीं। वही वह थी, वही स्थिर हो रही।

मारे खदन ने साथ आकर एम्मा का ही हाथ लिया। एम्मा ने आँखें नम्र कर लीं। खदन ने भी आँखें नम्र कर लीं। वही वह थी, वही स्थिर हो रही।

( ३५ )

मारे खदन ने खदन की आवक विचलित था, खदन की ही दृष्टि में खदन की ही दृष्टि में था। खदन ने निश्चित योजना के अनुसार खदन की आवक में खदन की ही दृष्टि में था, खदन की ही दृष्टि में था। खदन ने निश्चित योजना के अनुसार खदन की आवक में खदन की ही दृष्टि में था, खदन की ही दृष्टि में था।

मारे खदन ने खदन की आवक विचलित था, खदन की ही दृष्टि में खदन की ही दृष्टि में था। खदन ने निश्चित योजना के अनुसार खदन की आवक में खदन की ही दृष्टि में था, खदन की ही दृष्टि में था। खदन ने निश्चित योजना के अनुसार खदन की आवक में खदन की ही दृष्टि में था, खदन की ही दृष्टि में था।













मित्रों के बच्चों को वह देखने लगता । मित्रों की बहुत-सी कही अनर्था बातें उनके बच्चों के खेल में व्यक्त होकर सामने आतीं । प्रत्येक बात का मस्तिष्क में नोट कर अपने एकमात्र उपन्यास की सामग्री का सङ्ग्रह वह कर रहा था । इसी रूप में अपने जीवन की एकमात्र आशा की रचनात्मक रूप देने का उसका प्रयत्न चल रहा था ।

काम जितना सहज मालूम होता है, वास्तव में उतना सहज नहीं। सभी उससे सशक्त और सतर्क रहने लगे। निगरान्ण करने के लिए ही जैसे वह सबके पास जाता था। जरा चूके नहीं कि उन्हें अपना काम किया। सभी उसे अपने से दूर रहना चाहने लगे। कि मित्रों ने उससे दौलत छोड़ दिया, कुछ उसे देकर उपेक्षा से मुँह फेर लेते थे। प्रत्यक्ष विरोध करनेवालों की भी कमी नहीं थी। उग्र रचनात्मक प्रयत्न इस विरोध की भाषा में विनाशात्मक बन गये थे। विनाशात्मक वह हो भा गया। एकमात्र उपन्यास की सामग्री का महान स्वागत इस आलोचना पर बन गया। आलोचना के रूप में उग्रान्ण शब्द स्वयं ही प्राप्त ही। अनेक आगन्तव्यों और मूर्खताओं के लिए आलोचना मित्र भी जीवन उग्रान्ण। जाना शुरू किया।

आचार्य मित्र न कप म मा उमने उतना ही नाम है  
 नर नरेश मा नारा नि नरेश मा इतिहास न निरनि पा न पापा।  
 नरेश इतिहास न नरेश नरेश नरेश मा। नरेश आचार्य  
 नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश  
 नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश नरेश

1. 凡在本行存款，利息按季结息，按季结息。











मधुर चित्र चार्ल्स की आँखों के सामने खिच गया। रीते गिलासा  
के खेल को कैसे वह अब तक भूला रहा। एम्मा के चिड़चिड़ स्वभाव  
को मूल स्रष्टा जैसे आज उसकी पकड़ में आ गया। एम्मा के पास जाकर  
बोला—“शरबत पिन्ग्रो एम्मा !”

मुनकर एम्मा एकाएक चौंक उठी। बोली—“शरबत—कैसा  
शरबत ?”

“ताज़ा फलों का, एम्मा !” चार्ल्स ने कहा, “तुम्हें याद है एम्मा,  
रीते गिलास को मुँह से गगाकर तुम.....!”

“नहीं-नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए”, एम्मा ने कहा, “जाइये तुम  
हाँ से !”

अपने प्रतिरिक्त और किसी के बारे में एम्मा अब कुछ नहीं सोचना  
चाहती थी। ऐसी कोई चीज़ आँखों के सामने न पड़ जाय, इसलिए  
अपने फर्लंग से नीचे पाँव तक यह नहीं रखती थी। जिम मिडवॉटर पर  
हमेशा बैठी रहती थी, जीवन में अनेक हृदय जिम्मे रहते यह  
कहती थी, उस पर भी उसने पकड़ा डाला दिया था। आठनाउ को  
भी पुरानी चीज़ों को उगाने अपने कमरे से हटवा दिया था। हल्क  
कमरे में मिडवॉटर उगाने सोचेंगे न रहे, रीते यह चाहती थी, रीते  
लिए यह प्रयत्न करती थी। कोई चीज़ ऐसी नहीं रह गई थी, जो रीते  
को उल्लास गये—एम्मा की ही नहीं, औरों की भी। जो उसके कमरे  
में जाता, उसकी हॉल शरण कमरे में पड़नामकर एम्मा पर ही  
पड़ती थी।

चार्ल्स का जहाँ तक सम्बन्ध था, एम्मा और भी घावे पर लगे  
थी। मुनकर हर धारणा पर जो चार्ल्स के अस्मित में गहराई थी।



एम्मा के कमर की तरह चार्ल्स का मस्तिष्क भी शून्य हो गया। बहुत कुछ जर्जि-पड़ताल करने पर एम्मा ही वहाँ दिग्यलाई पत्नी के स्वयं चार्ल्स भी यह नहीं चाहता था कि मिया एम्मा के वहाँ ओर के रहे। वह फाड़ भी उसका नाम आता। उसके मुँह से सबसे पहली और सबसे अन्तिम बात एम्मा के बारे में ही सुनना चाहता। एम्मा के लिए उसका शुभ कामना पाने के लिए वह उसे चाय पिलाता था, रस चाय में उसकी ख़ातर तबाला करता था।

इतने दिन के बाद एक नाटक मण्डली का उस पत्नी में आनंद हुआ। एम्मा के लिए शुभकामनाय हृदय में लिये रहने ही नहीं चार्ल्स का प्रेक्षक का आश्चर्य करने के लिए आनंद लग था। उनकी में एक न फटा। एम्मा का नाटक 'द्विवांग नायिका' केसा 'कुछ न कु' तो उसका ना प्रस्तुत था।

“उनके चले जाने पर चार्ल्स उठ खड़ा हुआ। नाटक मरहली की  
मार्ति उसे बड़ी अच्छी मालूम हुई। एम्मा इसे अवश्य पसन्द करगी।  
अबदम बदाता हुआ एम्मा के कमरे में पहुँचा। बोला— ‘मार्ति एक  
नाटक मरहली आई है एम्मा। देखने चलोगी?’

‘चार्ल्स का अपना नाटक ही एम्मा के लिए बहुत था। उसी का  
देखने-देखते वह उबलता गई थी। इसके नाटक की बात सुनकर वह  
भुँभुगा उठी। बोली— ‘मेरी जान छोड़ो प्रायः। मैं कोई नाटक नहीं  
देखना चाहती!’

‘चार्ल्स इतने से ही निराश नहीं हुआ। बालकों की तरह मचलने  
क्याह में उसने कहा— ‘नहीं एम्मा, तुमों खाना ही रहेगा। बहुत  
शुद्ध नाटक है।’

नाटक की नाटक बनाने के लिए एम्मा तैयार हो गई।  
चार्ल्स बहुत खुश हुआ। घरने पर श्रीर नाटक के मरहली के कर चकर  
उगने लगा दाले। नाटक का कोई श्रेष्ठ न जान, इसके लिए वह  
बहुत निमित्त था। गाना कर उगने परबद्धी तरह नहीं गाना। घर  
हो जाने की पारसदा ने लच्छा दास कोर लिया। ईने ईने घरन पर  
करने का एम्मा को लच्छी नाम से जाना। मरहली के नाम लच्छी उगने  
देगा— ‘मैं भी खन्तर जाने के लिए उगनाहो कर अभी गुने है। एम्मा  
भी एक जगह मारामरर रिरररर के लच्छी नाम कर लच्छी  
खाने खाता।

१ २० ३

इसके हमारे कर मरहली की करर कर लच्छी के देगा था। लच्छी के लच्छी-  
लच्छी का लच्छी करर नहीं था। लच्छी लच्छी कर, लच्छी लच्छी कर लच्छी था।



नीली सागर लहरा गया। यह युवती उसमें डूबने-उतराने लगी। प्रेमी  
उसे अपने हाथों पर उठा लेता था, कभी छोड़कर दूर हट जाता  
था, क्षणिक प्रियोग की व्यथा ने बल राकर फिर लौटता था युवती के  
चरणों में बैठकर अपने जीवन की उत्सर्ग करने की कसम खाता था।  
गुम्बन और दीर्घ निश्वासों से साग मण्डप भर गया।

प्रेमाभिनय देखने के लिए एम्मा आगे की झुक गई। सीधी हाव  
बैठी उस समय, जब प्रेमी और प्रेमिका एक-दूसरे से विदा हो रहे थे।  
गुम्बन और दीर्घ निश्वासों के जेठ पर परदा गिर रहा था।

“इस प्रेम का क्या यही अन्त होना था !” दीर्घ निश्वास लेते हुए  
चान्द ने कहा।

“नहीं-नहीं,” एम्मा के मुँह से निकला, “यह उसे छोड़ नहीं सकता।  
यह उसका प्रेमी है।”

प्रेमिका का नाम था लूगी। एक छोड़ दो-दो उसके प्रेमी थे। दोनों  
ने ने एक को उससे परवाले भी जानते थे। ख्याल नहीं थी, लूगी उमरी के  
हाथों में जासगी। तहाँ तक लूगी का सम्बन्ध था, यह अभी निश्चय नहीं  
कर पाई थी, दोनों में से किसको अपनाये। जिसे उसके परवाले जानते  
थे, उसे जाना मंद्य था। उसे देखने के लक्षण भी जानसगी के लिए  
जाने थे। मगर लूगी परवाले ऐसे जटिलों का निर्माण करते करते थे—  
यहाँ तक कि लूगी उधारा उठती थी। जिस समय यह लूगी प्रेमी को  
देखना-भाषना चाहती थी, उस समय का ज्ञान था सत्य !

लूगी प्रेमी का काम स्मरण करने था। लूगी को जाने से लूगी उसे  
संविदातियों को जान को दूर करना था। उस संविदातियों की भी स्मरण  
था, जो लूगी के संविदातियों को स्मरण कि प्रेम के लूगी को स्मरण था।

हुआ था। लूमी के बारे में सोचना स्थगितकर इन कामाओं को करने की ओर ही वह जुट गया। दोनों प्रेमी प्रतिद्वन्द्विता में ग्रासे। दोनों का यह श्रेणी-मंघर्ष लूमी के लिए महँगा पड़ा। वह रोन पिसने लगी।

“मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता,” चार्ल्स ने कहा, “लूमी चाहते हुए भी ये लोग क्यों नहीं देख पाते कि छुरी और किमी के बीच स्वयं लूमी के गले पर ही चल रही है।”

एम्मा भुँभुला उठी। बोली—“चुप रहो तुम ! जो बात समझ में नहीं आती, उस पर राय देना फिजूल है।”

“नहीं एम्मा,” चार्ल्स ने कहा, “मैं समझना चाहता हूँ।”

इतना कहकर चार्ल्स चुप हो गया। प्रेम की समझने के लिए नाट्य को और भी ध्यान में देखने लगा। एम्मा अपनी बात कहकर चुप हो गई थी, चुप ही रही।

विवाह का दृश्य सामने था। दुल्हिन के चेहरे में लूमी गद्गद हो लाकर पड़ी कर दी गई थी। चेहरा उसका पीला पड़ गया था। विवाह के लिए नहीं, बलि देने के लिए जैसे उसका शृङ्गार किया गया हो। एम्मा ने यह दृश्य देखा नहीं गया। आँखें बन्दकर कुर्सी पर पड़ी। उसके अपने विवाह का दृश्य सामने था। विवाह में पहुँचते-चिप भी बन्द आँखों के सामने सजीव हो उठे थे। चार्ल्स के आगमन ने उसके हृदय में जो उथल-पुथल मचा दी थी, क्या समझ में वह प्रेम की या ? हृदय की सन्धारण कुड़कुड़ के सन्धारे ही क्या प्रेम आता है ? कुड़की समझने का उसे अवसर नहीं मिला। उसके लिए वह अपने सन्धारण नहीं दी। अपने घर की शून्यता उन्होंने उसे

ममक लिया था। चार्प को देखते ही वह भी ममका को अपने स-  
दर करने के लिए तैयार हो गये। अपने घर की ममका को ममका  
फले बाँधकर छुट्टी पाई। किसी दिन के पल्ले करने का कम समय था  
शुरु हुआ। जेना था यह प्रेम और जेना था पल्ले का पल्ले का  
कुलकुलानट की समीप पर दोनों गये हुए। क्या हा हा हा हा हा हा  
उस समय कुछ भी नहीं ममक ममक ?

आँखें बन्द कर लेने से जड़ अन्तर्मन ही गूँथ रहा है। जो मनुष्य जड़ होगा, वह भी प्रिय नहीं था। किसी समान नीयत पर जीवन व्यतीत हुआ है। आँखें खोलने पर देखा — वह नाटक भी उसी जमीन पर बना रहा है। हृदय में संवेदन ने प्रवेश किया — 'वक्तने' नायक बन ही गये हैं। परदों को उठा-गिराकर, उन पर नेत्रपूरे देनाकर, देनापने स्थानों के लक्ष्य जीवन-संगीत की सृष्टिकर हम उसी नीयत को भुलने का प्रयास कर रहे हैं।

आत्मा भी फिर नहीं पाहि मिली । उसी के लक्षण सब देखने लगी ।  
 नाटक उरफे निज प्रिय निज नाटक ही मरी न स्यात या ॥ माया-  
 कामनाओं ने तिम्रो हृदय बन्धन की लूनी पर लम्बा की शक्ति दिव  
 गई । रिपाय सो स्वयं बनाने के निज बन्धन सब न स्यात या ॥  
 बन्धन सब न स्यात बन्धन सब न स्यात । बन्धन सब न स्यात बन्धन सब न स्यात ।  
 या ॥ याद गीतों ने मरी हृदय से । आत्मा बनी रही मे लम्बे सब  
 निज-लम्बे मरी से । सब लम्बे निज-लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से  
 सब से लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से ।  
 सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से ।  
 सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से । सब लम्बे मरी से ।



गया। कुछ सँभल जाने पर उसने फिर कहा — 'श्रीर एम्मा सुनकर तुम्हें ताज्जुब होगा, बाहर मैंने लिया है का देखा।'।

"कौन लियोन?" एम्मा ने आश्चर्य में पूछा वह समस्त प्रेमी युवक?"

"हाँ, एम्मा यही," चार्ल्स ने कहा वह गंवारों में रहा था। तुमने मिलने के लिए अभी आता ही था।

एम्मा सुनकर स्तब्ध रह गई।

( २१ )

सर्गीत-प्रेमी युवक ने साग उड़कर लिया कि अब समाप्त हो गया था सर्गीत की भीमी-सी दमक पहले उसे मना बना हुआ था। अपने का भी घर भूल जाता था और दुनिया को भी। स्वयं सर्गीत भी इस भूल-भलैया में गोंडर करी का कहीं पहुँच जाता था वह जाता एक दीप निरस्य, उसी को हृदय में लगाये, वह एम्मा से रिक्त हो गया था— जीवन सर्गीत की गोंड में।

गौन साग तब वह एम्मा से अलग था। एम्मा को बाद उसे वह स्मरण आती थी। शुरू-शुरू में अनिष्ट, बाद में तब तब। शुरू अविश्य में शुरू बदलते में एम्मा खड़ी गई थी। फिर भी इतनी दूर न था कि वह विमान हो जाए। उसे आशा थी, दिखाने भी था, एक दिन उसके जीवन में भी प्रभाव होगा, सम्पूर्ण इच्छा पर वह प्रभाव प्रकाश दिखाने लगेगा।

आने को कुछ सँभलकर वह खड़ा था। उसने इच्छाएँ कर हाथी गंधारी में रहा था। उसके हाथ में बहुत सारे थे, न कुछ रहे।





जोषा हो। एम्मा कुछ सकपका गई थी। आन ऐसा नहीं हुआ। उसने अपने जो सँभाल लिया था। बड़ा ही जाने कर भा लयान बड़ा मगाव मैसां पुनरु है। वह अब तटस्थ दृष्टि से देखने लायक स्थान में ही गई थी। -

लियोन ने कहा—“अच्छा, अब तो सब ठीक हो गया। तब तो तुमने पता मालूम करा था कि तुम नहीं आओगे, पता नहीं तुममें अब भट हा था न था। लेकिन मरा रोमांच तुम वहाँ मिलीं, जहाँ पहले था।”

“हाँ, एम्मा ने कहा, “तुमने जो बातें मेरा समार कहा है। बदलावे के लिए, परों की भी उम्मी नहीं है। लेकिन तुमने जो लिए एक नयी काम तो नहीं रह गया है।”

एम्मा और घर बगना ही लियोन का जीवन नहीं रहा, वह उल्टे दिशा में गया। जीवन के उतार-चढ़ाव और आन के विभिन्न रूप एक एक कर सामने आये। जीव निरुपाम के उपरकार के बाद एम्मा ने कहा—“इतनी सामान्य के होते हुए भी इतना शक्ति। जीवन का नया एक बार जैसे शोर मचा गया है।”

इसने बाद दीर्घ-निद्रा की बिन्दु-रूप बना। रातों के बाद-साथ निद्रा-रूप भी सामने आया गया था। पहले पहले दिनों को एम्मा-एव इतना आन बट अपने जो भूत-का शर है। जीवन निर्मोहित करने उसे देर न लगी। जीवन के एक-एक पक्ष में-एव, हिन हमारे का एक-एक बिन्दु-रूप जो लग भी छलने रहे और जीवन का एक न हो। इतनी के समार के एक-एक बिन्दु-रूप है। इतना-एव का जो एक-एक बिन्दु-रूप है। इतना-एव का



आखिरी बन्दकर एम्मा ने जीवन का सामना करना शुरू किया। वह बोली—“मेरे जीवन का वह स्वप्न”

एम्मा के शब्द जैसे स्वप्नलोक में जाकर गये गये। लिपान ने देखा, एम्मा की आँखों की कोरों में आँसु चमक रहे हैं। एम्मा के सोये शब्दों का सूत्र पकड़ उसने कहना शुरू किया—“हाँ एम्मा जीवन ऐसा ही है। तुम्हारी तरह मैं घर में बन्द नहीं रहा। घर में बाहर रहकर मैंने जीवन देखा। जानती हो एम्मा, ऐसा जीवन था वह। कहीं कोई दरियावासी नहीं, टिकने का स्थान नहीं। भटकते-भटकते एक जगह रुक जाँगे टिकी थी, लेकिन...”

“कहाँ? कौन जगह थी वह?” एम्मा ने बीच में ही बात काटकर पूछा।

“जगह फोटी नहीं, एम्मा।” लिपान ने कहा, “एक नगरी थी।” दीर्घ निश्वास लेकर लिपान कुछ ठिठक गया। एम्मा ने पूछा—“क्या हुआ फिर उसका? तुम फिर क्यों गये?”

“नहीं जानता,” लिपान ने कहा, “उसने मेरा हाथ अपने हाथ में भरोसा था, एम्मा।” खन्दा तरह हमें देना भी नहीं। मेरा हाथ “मैं लिपान”। धरा दिना, जीवन... “जान... मेरा हाथ।”

एम्मा से असाधारण प्रभाव हुए घर में। उसके शब्दों के लिपान लिपान का जैसे मार्ग भग्न कर गयी थी। लिपान ने कहा—“मैं जानती हूँ वह कुछ था। मैं जान जाऊँगी था। मैं जानती हूँ मैंने लिपान का हाथ भी उठाया। मैंने लिपान का हाथ उठाया। मैंने लिपान से कहा कोई सुझाव नहीं होना ही है।”

एम्मा फिर भी... मैंने... मैंने... मैंने... मैंने... मैंने... मैंने... मैंने... मैंने...



‘‘अपक रिया जा मल्ला है। तुम्हें क्या बताऊँ एम्मा, मेर जीवन म जी...’’

जीवन की बातों में जीवन का प्रभाव देखकर लियोन चुन हा गया ।  
 तबसे अधिक उदास हो उठे एम्मा के मुँह का ओर बढ़ देखने लगा ।  
 कुछ समय में नहीं आता था, जिस तरह एम्मा का साथ द । उसी  
 उदासी में गलत उसी समय यह कह जाना चाहता था । अपने  
 "तुल शरीर को गुरु बनाकर वह पेश करना चाहता था ।

वर्तमान रूप उसकी इस इच्छा का माध नहीं दे सता। प्रतीति की मूर्तियों को भाङ-पाँड़रुन वह पेश करने लगा—कयर की देवी पर कि फल चम रहा हो। पलाश का प्रावण्य रोज एम्मा इन फूलों का मोनार तस्ती थी। मर्तीत ही वर्तमान इन रंग या प्रीत वर्तमान इनसेलित मविष्य के सारे यही मूल्य में जाकर ग्यो मसा था।

“विचित्र जीवन था हम लोग का !” विनोद ने कहा, “एक दिन मैं तुमसे मिलाने के लिए गया । कहा नहीं, दुम्हे पाद मश कि नहीं !”

"दुखै नर नाद है," एम्मा ने कहा, "तुम सो नन्हीं।"

‘उम समय मुम सीदिन। जे तागतो समरे मे भी। सागर यही  
 जग जाइती थी। दिना दुहे ही मे जो समरे सम हो दिना। जग  
 मोनो लो समरा, बना समरम सम। समरे सम मे सम दान लो मेना  
 था। होदिन नम, ओ समर सम, हो लो समरे सम हो दिना। समरे  
 सम मुने समर समर समर। समरे सम, समरे समर समरिनी ही  
 सम, समरे समर। समरे समर समर समर। समर मोदिनी भी सम  
 समर सम। समरे समरे समर सम। समरे समर समर। समरे समरे  
 समर समर समर समरे। समरे समर समर समर। समरे समर



एक एक दूसरा स्वर सुन गयी थी—।रुमी के घर की आवाज का।  
गर्जनों की देखने के बाद चार्ल्स घर लौट आया था।

( २२ )

चार्ल्स के मदमों की आवाज को सुनना एम्मा के लिए खतरा था। वह  
जबर्दस्ती सीमा थी। यही तक अतीत बड़ बनता था। सीमा आ जाने  
पर हंगेरी के आचरण से एम्मा ने लियोन के स्वर का टुकड़ा दिया।  
अतीत पीछे हट गया था, वर्तमान सामने था। लियोन का मुँह उन्हीं  
तरफ मुला रह गया था। शब्दों की इस अप्रत्याशित छाया पर उन्हीं  
घाँघि आश्चर्य मिश्रित विरोध प्रकट हो गयी थी। निर्दिष्ट करने पर  
सधुर स्वर ने एम्मा ने कहा—“तुम्हारे लिए यह ठीक है। तुम जान  
गो। जीवन तुम्हारे सामने है। जाने बड़ बनने दो। तुम्हारे साथ  
फिन्टकर मैं प्रगति में जाया ही दूँगी। पर मैं नहीं बताती।”

लियोन को विजय नहीं हुआ। एम्मा का मतलब क्या है? यह  
जानना क्या चाहती है। तुम दे, बनेगी ही जाना बूढ़ लोग ही बन  
था। इतनी उम्र में क्या हो गया। तुम समझ में नहीं आता।

लियोन एम्मा से बात का आरंभ करने लगा। “आपने बहुत कुछ  
का फिलेसॉफी का क्या कहा। जीवन बूढ़ बनने ही चाहते हैं, आप  
भी बूढ़ बनने का सोचें हैं, जीवन जीवन का जीवन इसके बगैरे है।

लेकिन देखते हैं आपका जीवन में क्या है। आपका भविष्य  
क्या है—” इसके साथ जाने, एम्मा ने

एम्मा ने कहा, “लियोन आपने मेरे विचार का क्या है। लेकिन मैंने  
होने के लिए, आपका जीवन है। एम्मा को यह समझना पड़ी कि वह





एम्मा उसके पास आ गई थी—रुलना का आदरग्य आते हुए।  
 मगर शरीर उसने ठक लिया था। किसी की सामर्य नग्य थी जे उमें  
 निवारण कर सके। अपने हृदय के आनरग्य में लेकर लियेन ने उने  
 और भी सुरक्षित कर दिया। सब तरफ ने आश्चर्य हा वह उट गया  
 हुआ। तेज़ दृष्टि से पत्थर की ओर वह देखने लगा। जने पथर उगया  
 निद्वन्द्वी हो। एम्मा की स्मृतियों की वह अपने भीतर ममाये है—  
 फिर कहीं का!

एकएक चीककर वह पीछे हट गया। यह पत्थर—जीवन का  
 र्ग्य पाने के लिए पत्थरों का सदास लेना होगा। नहीं, जीवन र्ग्य  
 ही है।

वह पीछे हटता ही आया—दिशा-परिवर्तन कर आगे बढ़ा। कुनों  
 तोकर अपने रुमान में धरने लगा। जे कुल सिखा था, उने  
 तोर होता था। रुमान भर जाने पर एक जगह वह बैठ गया।  
 है हुए कुनों जे लगाकर एक सुनरुता उमने लगा जला। कितनी  
 तक हाथ में लिये उने देखता रहा। फिर आगे बढ़ा। जानाया  
 जे रुतन एम्मा के घर ही खीर था रहे थे।

एम्मा उस समय अपने घर के दरवाजे पर खड़ा थी। वही अपने  
 के लिए ही वह रुतने के हाथें थीं। दरवाजे पर खीर लुगलुग  
 भूने राने, कहीं अपने के लिए लेना हाथ का राने था। जीवन को  
 देखकर उने हाथ में रुतन के हाथें। पास अपने घर में लेना—  
 'माफ़ हो' है, 'ही' था था है'।



समझना कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ। जो चाहेगा वही भर्त्ता चलेगा।  
इन दृष्टियों में श्रय भी दम है ।”

अपनी हड्डियों को देवता और परमात्मा का आगे बढ़ ग ।  
 एम्मा की पराधीन के साथ उसको शब्द ज्ञान का प्राप्तिमान चल रहा  
 था । लियोन अपने में सुभक्ता उठा । उसने रावि डाक तरह में त्यों  
 नहीं जमीन पर पड़ रहे हैं । त्यों वह दुःखी न उभरना चलता है ।  
 और वह बूढ़ा—सहता है, हड्डियाँ में दम है । दम तो पथर में भी है ।

मामने ते स्वाती गाडी के कोचरान ता थायान मुनरर वद  
 भौत । हाग उठाकर गाडी के रोकने ता दशाग जिया । पूछा—  
 ‘रहौ जा गे ते ? गाडी जाली ई ?’

“हाँ, हज़ूर,” योगवान ने कहा ।

“नो चलो,” तबले हुए लिफोन गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी अभी  
चल नहीं हुई थी। भक्तानन्द लिफोन ने कहा—“चलो, चलो नही!”

“तरी चलना होगा, नन्हे !” माँ ने कहा ।

“नीचे जाओ” विप्लव ने गंगा घोंस गहरी से चले तीन दिने ।  
गहरी जाने लगी । गहर भी नीचे लम्बे ही चले गंगा गहरी में फिर  
पुनः— “अब विप्लव चलेगा होगा, फिर”

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



चिन्ता ने प्रवेश किया हृदय के मुझ हो जाने पर । पथर का पथर न  
समीप लाते उसे डर मालूम होता था । न केवल इतना ही, प्रत्येक फल  
को भी वह पथर ही समझने लगी थी ।

नाटक देखने के बाद उनकी भावनाओं में फिर परिवर्तन हुआ ।  
एक नई दृष्टि उसे मिली । वेदना ने उसके मुझ हृदय न प्रवेश किया ।  
गोदा का माधुर्य मूर्तिमान् हो उठा । उसने अनुभव किया—पथरों ने  
इस व्यापार में धिगारी हो नहीं, त्रास भी कुछ है जो हृदय का मार्ग  
पा सकता है । पथरों को लेकर उसके हृदय में जा न सके गया था,  
वह जाता रहा । भय में काँपकर ही अब वह नहीं रह जाती थी ।  
पथरों का हृदय रोजने के प्रयत्नों को और उसका भुत्ता हुआ ।  
प्रत्येक आसमें कोई पथर नहीं है । जीवन की डोमरे गाने गाने हृदय  
पथर की तरह पठोर हो गया है । पथर की इन कल्पना में सब का  
हृदय उमड़ पड़ता । योंनि धरतल इस पीता का यह अनुभव करता ।  
दुःखों संसार का मार्ग दुःख हृदयों पर होने की प्रेरणा हृदय में जा  
उठों । धीरे-धीरे उसे विस्मय हो गया, इसी क्षण की पुनः जाने के  
लिए परमात्मा ने दुःख के इस मार्ग में उसे छोड़ा है ।

दुःख में हृदय न वह दुःखों में बस जागरे । जीवित जिन्दागियों के  
स्थान पर आदर्शों काकर के मुँह में निश्चयने लग । क्यों ही जीवन  
द्वितीयावस्था । ये सब समझने का न था । जीवन-मार्ग का न था  
उसकी रक्षा करने के लिए करनी । जीवित में उसे बचने के लिए था । उसने  
जेल में रहने का न था । जीवन में बचने के लिए था । जीवन में बचने के लिए था ।  
जीवित में बचने के लिए था । जीवन में बचने के लिए था । जीवन में बचने के लिए था ।  
जीवित में बचने के लिए था । जीवन में बचने के लिए था । जीवन में बचने के लिए था ।



कलियाँ भी गुलदस्त में उलझी हैं। कुछ एसी भी हैं, गिनत न लग  
जिनमें श्रोत्रों पर मुस्कराहट की आभा अभी छाने ही लगी था। गलत  
फूलों की पत्तियाँ अस्तव्यस्त हो गई हैं, कच्ची कलियाँ पर भा घाय  
दिखाई पड़ रहे हैं।

एम्मा के सामने विचित्र दृश्य था। वह व्यथित हो उठी। गिल्ले पृत्तों में अधिक गलियाँ ने उसके हृदय में प्रवेश किया। इन कालों की रक्षा करनी ही होगी। गिल्लकर सुग्गाने हाथों की निर्दय हाथों से तोड़े जाने के लिए ही इनका अस्तित्व नहीं है। गिल्ले पृत्तों को भी वह कविताओं के रूप में ही देखने लगी। जहाँ वह उठने गुन-दन्ते को उठा लिया। अस्तित्वमान पत्रियों को प्रसन्नता के पत्रियों में अनेक-कृपाओं का रूप देने लगी। हाथ बढ़ा लेने पर वह ही वह दिव्य पृत्तों थी।

निगेन का उन्ने पान ज्ञाता । सुख, भेट के गान में न भुलना  
 पर है मान है । का फल भी नहीं समझना । जीवन का सौदा जान  
 पर नाकाम है । पानना पर भुलना है कि साधन का गान है । इन्ने  
 जीवन की का भेट करने न भुल दी है । का भुलना न भुलने का भुल  
 पर दूसरे समझी जाना पर भुलना है । भुलना पर भुलना पर भुलना  
 न भुलना भुलना है । भुलना पर भुलना पर भुलना पर भुलना ।  
 न भुलना पर भुलना है ।

[illegible]



था। कुछ न कर सकने पर बड़ा अटपटा लगा। एकाएक उसकी नज़र गुलदस्ते पर पड़ी। जरूरी काम को जैसे एक सहारा मिल गया। कानों बढकर गुलदस्ते को उठा लिया। सुग्धभाव से बोला—“मेरे सुन्दर फूल हैं।”

चार्ल्स की आवाज सुनकर एम्मा चौंक उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता देखकर उसका सारा शरीर मरोड़ सा उठा। उसे लगा, चार्ल्स के स्पर्श ने गुलदस्ते के फूलों को और भी छिन्न भिन्न कर दिया है। तेजी से उठी। चार्ल्स के हाथ में गुलदस्ता ले लिया। गुलदस्त में पानी भरा। गुलदस्ते को उसमें रख सन्तोष की साँस ली।

चार्ल्स ने उसने पूछा—“कहिए, क्या काम है?”

“कुछ नहीं,” चार्ल्स ने कहा, “यही जानने आया था, क्या तुम्हारा जी कैसा है?”

“ठीक है,” एम्मा ने कहा। जरूरी काम में इस उपमहार को हँस में लगाये चार्ल्स चला गया।

अनिशान मगार ने ऊपर उटकर जीवन ने एम्मा के लिए एक आदर्श रूप प्रयोग कर लिया। मगार की विगारी हुई वेदनाओं को मनेटर उनके चरणा में एम्मा अपने अस्तित्व को उत्कर्ष पर ला चार्ल्स थी। दल-विशेष हृदय आसू बनकर बह चला था।

जाय, इस डर से जीवन से अपने को दूर रखती थी, जीवन उसका शरीर पागर बिखर नहीं जाता था। विखरे जीवन को समेटकर एक ही उसने दे दिया। जीवन की विखरी वेदनाओं ने आदश का नीच करने डाली थी, आसुओं से सींचकर इस नीच को हट उसने भर दिया था। इसी ओर उनके सारे प्रयत्न अब निर्देशित हुए थे।

मृत्यु की कल्पना अब सुरावली हो उठी थी। मरार ही समझ वह आँखों से मुक्त करनेवाला एकमात्र आरूपक आवरण वह बन गई थी। सम्पूर्ण रूप ने अपने शरीर को शिथिल होकर मृत्यु का आलिङ्गन करने का अनेक बार उठने प्रयत्न किया था। जैसे जैसे वह अपने ऊपर से ढोला छोड़ती थी, एक दिव्य ज्योति मर पागवर्तित होती जाती थी। उसे मालूम होता था, वह ऊपर उठ रही है—ऊपर उठती गयी है।

वह अब कुछ हीने हुए भी इस दुनिया में बन्धनों में बंधी हुई है। एक सीमा तक ही वह ऊपर उठ पाती थी। उनही एक गहराई के ओर ऊपर उठने के प्रयत्न को उपयोग की भावनाओं ने आश्रय देने देना मुश्किल था। वह हृद भी नहीं उभर पाती थी। आशाहीन उठती थी, उठती गहराई उभरती थी इतनी पर ही गयी है।

ऐसी स्थिति आने पर अब ही उस के अन्तिम उदयका यह हुआ है। अन्तिमी दुर्गति में उसका सर्वस्व बँट गया था। वह को जाने का मायूम हो गई, उठने के प्रयत्न ही नहीं है। हृद ही उभरने का प्रयत्न करती है, वह ही अन्तिम उभरने के प्रयत्न करती है। वह ही उभरने का प्रयत्न करती है, वह ही उभरने का प्रयत्न करती है।

चतनों गहरी उपेक्षा होती थी, उतना ही गहरा स्नेह। तीनों हस्ति  
साथ साथ मूँह में म म म गड़गड़ की बर्षा बह कर मकती थी।

अपना कामा उस एक दिन वह नाराज हो उठी। कोई काम  
न था। लम्मा ने उस दिया था, वह टालमटोल कर रही थी। काम  
न था। लम्मा ने उस उतावली हो रही थी। शाम तक के लिए  
लम्मा ने कामा को अपने कमरे में चली आई।

कामा ने कहा—“काम न था।”  
अपना कामा ने कहा—“क्या?”

कामा ने कहा—“प्रतीक्षा किये बिना उसने फिर कहा—‘अपना काम’  
अपना कामा ने कहा—“क्या?”

कामा ने कहा—“अपना कामा अपने कमरे में चली आई।

निलसाने में एम्मा तो और भी आगे बढ़ना चाहती थी लेकिन दाम्नी  
तक घूम-घामकर रह गई। हृदय की निधि समझ पुस्तक को उठाकर  
अपने अध्यन में दाम्नी ने छिपा लिया। बड़े प्रेम से पस्तक का आगे  
प्रेमी मित्र के सामने उसने रक्खा। उत्साह से इस प्रेम की भेंट का उसने  
स्वीकार किया।

दुखान-मालिक को इस पुस्तक पर नजर पड़ गई। अपने नीकर का  
पद पहले से ही फाँचते रहते थे। इस पुस्तक को देखकर बहुत विगड़े।  
अपराध के साथ अपराधी को उन्होंने पकड़ लिया था। नगे लोग सौर से  
उसे गला-धुग करने ! दो-चार आदमी भी जमा हो गये, उनकी संख्या  
बढ़ती ही जा रही थी। उनकी भी देखकर दुखान-मालिक ने पुस्तक  
का नाम लेते नहीं बनता था। इधर-उधर की राहें चले गये। वे कह  
ते थे—“अदमाशी तो इसरी देवी, छिपी पर लपटा जमाना भी इसे  
नहीं आता। आग के अन्तार का लोभला क्या दिना समझ ही लेती  
रह, अमरुद का नमन के शिखे पर, नमन के शिखे का सीनी पर !  
दुखान का सम्मानाग करने पर चुका है, अदमाश करी का !”

नीकर भी अच्छी तरह इतर नद मेंका पताच था। एम्मा की भी  
इसने पुस्तक भेज था। एम्मा ने आकर देखा—दुखान पर एक भाव  
लगी है। कुछ समझ से लगी लगाने। दुखान मालिक ने हार—“किस  
लिए पुस्तक का दाने”

“दिलाला दुखान का दुखी है—दुखान मालिक से दुखी—दुखी,  
दुखी दुख भी दुखी का नहीं दुखी। दुखी दुखी की दुखी ? दुखी दुखान  
दुखान है, नहीं दुखान है। दुखी हो इसे दुखी दुखी...दुख  
दुखान, दुखी दुखी दुखाने दुखान है दुखी दुखान है”



न मदी। जो विवाहित है, बड़े हा गये है, उनका क प्रश्न है कि क्या  
बादिए।"

दूकान-मालिक ने चार्ल्स ने पुस्तक का ले लिया। उसने कहा कि यह बहुत ही अच्छी पुस्तक है। एक हाथ से उसके पुस्तक को दूसरे हाथ से उसने अपने पास ले लिया था। लिखा था - इस पुस्तक में बहुत ही अच्छी बातें हैं। मैंने इसे बहुत ही पसंद किया है। उसने इसे अपने पास ले लिया था। उसने इसे अपने पास ले लिया था। उसने इसे अपने पास ले लिया था।

जिना के देहान्त की बात सुनकर चार्ल्स स्तब्ध रह गया था। स्वस्थ रहने का एक कारण और भी था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था, किन्ना पर इस दुःख प्रलय की जैसे प्रकट हो ? मरना महत्वा था ! स्वयं की पीर नहीं खावधानी से एम्मा वह इसे सहै-माना चाहता था। यदि वह लगने प्रकट करना चाहे। उसका दुःख न-सह्योग हो जाता। तो नहीं, एम्मा ने दुःखी हृदय पर पारस्मिक प्रत्यक्ष को संभाला भी लेना था नहीं ?

शब्द ब्रह्मणो नाम्ना । यन्मते मे विदुः सदा मे । यो ब्रह्म ब्रह्म  
तस्मात्तु मे मते विदुः सदा मे । यो ब्रह्म ब्रह्म  
यो ब्रह्म ब्रह्म मे मते सदा मे । यो ब्रह्म ब्रह्म  
यन्मते मे विदुः सदा मे । यो ब्रह्म ब्रह्म

[illegible]



( २५ )

मा को देखकर चार्ल्स को आँखों में आँसू आ गये । अपने पिता से वह सदा दूर-दूर ही रहा, इस बात का उसे बड़ा दुःख था । जीवन में अपने पिता के स्पर्श को इतने निकट से उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था । पिता की स्मृति के साथ-साथ उसके आँसुओं की मात्रा बढ़ती जाती थी । चार्ल्स को रोता देख मा का हृदय भी उमड़ आया । पात की उपेक्षा के वास्तविक रूप को इतने दिनों तक वह क्यों नहीं पहचान गयी ? रह-रहकर यही यह सोचती थी । बेहारा होकर न गिर पड़ने तो अपने आप वे उसके पास जाते । रिमी को उठाकर लाने की इच्छा नहीं पड़ती । गोदी में मिर लिये तीन दिन तक वह बैठी रही । एक घड़ी के लिए भी अपना सिर उठाकर गोदी में उन्होंने आँसू नहीं किया । न जाने कौन पुरी हवा थी जो वह इतने दिनों तक बाहर भटकते रहे ।

पति की प्रत्येक गति मा के लिए आकर्षक हो उठती थी । मा के माथ-माथ आँसुओं की मात्रा कम हो जाती, बाँहों की बल बढ़े । बाँहों और काम, दोनों माथ माथ चलने लगे । आँसू धीरे में आँसू बरस नहीं देते थे । पति का जीवन, उस जीवन का सम्पूर्ण दुःख, एक पक्ष-पक्षिक कहानी बन गया था । पड़ोसी की बालक-बाली ने माथ माथ कहानी भी सुनती राती थी । कहानी ने माथ-माथ हवा को हँसी के पक्षिने की सम्भावना में नहीं रक्ती थी । जैसे वे हवा हवा के पक्षिक कहानी में ही बाले मात्र बरसते । पड़ोसी बाली के पक्ष में माथ माथ के लिए हवा बाले उपेक्षा में । माथ ही बाले माथ-माथ के माथ माथ उपेक्षा में ।





वै आने थे, दृष्टि रोजने लगती थी एम्मा को। एम्मा के सामने आने पर वे कहते—“मुनकर बड़ा दुख हुआ। रुक भी हो, बड़ों के साथे नें बड़ा बरकत होती है। मेरी मा जब मरी थी, मे कार्वा बड़ा हो गया था। फिर भी बच्चे की तरह विनायक मिलानकर रोने लगा।”

कुछ देर ठहरकर वह भूमिगत बाधना शुरू करता। अन्त में  
 पता—“सिवा जी ने ठीक ही किया, जो सब कुछ तुम्हारे नाम हो  
 गये। लक्ष्मी का कुछ भरोसा नहीं। बुरी सोचवत मैं पक्कर सारे कर  
 धरे पर पानी फेर सकते हैं। बहू के नाम ने रहेगा तो फिर भी बहुत कुछ  
 बच जायगा। वह ही घर की लक्ष्मी होती है।”

जन-सर्व चाल्म के पास यह छाता था। शुरू-शुरू में चाल्म उसकी छाता देखकर काँप उठता था। धीरे-धीरे चाल्म शम्भर हो गया। वगैरे ऐसा—प्रोबोड खीन तहाने की बातें करना जैसे वह भूत गया है। जैसे करता भी है तो इधर-उधर ही। चाल्म ने फिर ट्रेवनिंग गज़ट—अन्तर्-विज्ञता आगमार्थ बनकर यह छाता था। पर सैटे पत्नी का दास ही उसका मानस हो जाता था। जोटे धरना देना नहीं, जो वानो होने के बाद चाल्म ने तब पहुँचायी हो।

जानम में इसी लोभ के बाँट अपना नै दम लोभ का बखतर  
 रह जाता । भूमिगत लोभ के लिए लोभी लोभ दण्डवत् नहीं मानता  
 भला । मनीषा बात जिसे हज्जतल में माने लोभ : निराली भी । पर  
 मनीषा—मनीषा लोभ ऐतरेय लोभ है । लोभ के लोभमित्री के लोभे .  
 मनीषा लोभ है, लोभ का बखतर लोभ है । लोभ, लोभ ही लोभी लोभ  
 है, लोभे लोभल लोभ लोभ लोभ लोभ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



धीन के लिए और क्यों यह सब कहा जा रहा है ? ऐसी कौन बात है जो उसने जाननी चाही थी, चार्ल्स की समझ में जो नही आ रही था ? जो देने पर भी एम्मा कुछ पता नहीं लगा पाती थी ।

एम्मा के सामने आते चार्ल्स को ठर लगता था । बचाव तरत कड़ दिग हो गये । एम्मा ने भी यह अभाव प्रगटा । दबे पाँव चार्ल्स के कमरे में भाँककर वह देखती—सामान पर भुला हुआ चार्ल्स कुछ देख रहा है । तितनी देर तक वह खड़ी रही । उमे आशका होने लगी—वह फासलों को देख भी रहा है या नहीं । कमरे की स्वच्छता उमे बड़ी रोभित भालूम हुई । उसने रहा नहीं गया । कमरे में उमने प्रवेश किया । बोली—“सच सच बताओ, तुम एसे क्यों हो रहे हो !”

एम्मा की आवाज़ सुनकर चार्ल्स पीर उठा । फिर अपने को रँभाकर बोला—“तुछ नहीं, यो ही एक बात बाद था गई थी । उसी को सोच रहा था ।”

“कहाँ” — एम्मा ने पता, “तुम तुम्हारे दिगाने हो । सच बताओ, थाप क्या है ?”

“कुछ नहीं, एम्मा !” — चार्ल्स ने कहा, “मैंने महामा के भाँके । सोचता था, पिता लो गी ।”

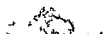
“तुझे कुछ नहीं याद है” — एम्मा ने धीन से ही कहा, “एक दिन मैं लगे लगी थी । सब समझता तो है ।”

“महामा की” — चार्ल्स ने कहा, “मैंने कहने पर रहा समझ नहीं । है महामा समझता था ।”

एम्मा ने चार्ल्स के मुख पर हाथ रखे तब तक कि वह लगे लगे रोने लगे । एम्मा ने भी रोने लगे ।







चैत्रनेत्राले सुनकर चौंक उठते थे, कौतूहल उनकी आँखों में भर जाता था। बन्द गाड़ी की कल्पना ने जैसे सभी को तोप लिया था।

बन्द गाड़ी पहुँचती थी नगर में बाहर, प्रकृति की गोद में। ऐसी स्नेहमयी गोद उन्हें पहले कभी नहीं मिली थी। प्रकृति की गोद को बाहर उन्हें मालूम होता, उनकी अपनी गोद भर गये हैं। भरे प्रजात और उन्मुख हृदय को लिये बन्द कमरे में लौट आते। एक नये संगीत ने प्रमत्त भर जाता।

नौरा-विहार के लिए एक दिन दोनों गये। चाँदनी रात थी। गन्दन को उठाये, हाथों को हृदय पर रखे, एम्मा चाँद की ओर देख रही थी। नौरा में पड़ा हुआ एक बाल पीता तिरों को मिल गया था। उगी में वह खेल कर रहा था। तभी उँगली पर लपेटता था, कभी मोन झलता था। एक छोर परद्वार तथा में उसे लहराने भी लगता था। जहाँ चलाते-चलाते माँझी की नजर पति पर पड़ी। तेजस्वर कह रीता—“दो दिन हुए बाद में, इतनी नौरा पर कुछ लोगों को मिले प्रिया था। तभी ज्ञान मे। दो हँसना, दिव्यमोक्ष। एक मनुष्य को वहीं ले थे पाद लाते थे। मनुष्य की दण्ड में नहीं करण भूमे को उगम में एक प्रादमी बड़ा करण लगा। तेजसे मे सुन्दर, लहरा करण, ऐसे सभी पृथ्वी ही थी। भवने के मे वहीं दण्डा था। मनुष्य को उतर उतारने में लगे थे। भवने पर भिन्नता उगे तेज से। तेजस्वर दाहि सुताई दाता था—“मे ता, सभी कीर मे, सुन्दर ! मे तेजसे ले नहीं लगेगा”

एम्मा ने बालों में दण्ड का लम्बा बन्ध। १९१९ लहरा दण्डा दण्डा। लिपे मे दण्ड—“मे दण्ड, दण्ड”



वह दबा पड़ा रहा। जितना ही वह यह सब सोचता, उतना ही एम्मा के गाने की प्रशंसा करता। देखते-देखते वह समय भी आ गया, जब एम्मा का संगीत-प्रेम गाने की चार कड़ियों और चार्ल्स की प्रशंसा मिला गया। संगीत का कहीं पता नहीं था, प्रशंसा चारों ओर सुनाई पड़ती थी।

प्रशंसा का यह प्रचार भी एक सीमा तक चलकर ठहर गया। अपनी ओर से चार्ल्स अब कुछ नहीं कहता था। एम्मा के संगीत-प्रेम की प्रगति का उल्लेख होने पर वह उत्तर देता — ‘हाँ, इधर गाना रुक कर दिया गया है। उत्साह में एम्मा ने अपने गले की ओर ध्यान नहीं दिया। उसके गले की नसें झनझना उठीं। योग भी तब पड़ता है तो दुखने लगता है।’

एम्मा में मिलने पर कहता — ‘अपने को पहचानकर भी तुम नहीं पहचानती हो एम्मा! यह तुममें बड़ा ऐंठ है। दो घड़ी जी बरग जाना था, वह भी तुमने बन्द कर दिया।’

दूरान-मालिक का चार्ल्स के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध था। मालिक के अभाव का प्रभाव उस पर भी पड़ा। चार्ल्स की बात की और भी स्पष्टकर वह कहने लगा — ‘यह तो प्रकृति की देन है। यों तो रोना गाना सभी को आता है। लेकिन संगीत—वह सभी के काम की नहीं। यह जीवन की निधि है। इसका उपेक्षित करना ठीक नहीं। परन्तु इसका प्रचार आसन्न बंद रहा है। हमारा काम है, जो लोगों का जीवन तो बीत चुका। अब क्या गायेंगे और क्या बरगेंगे? लेकिन अपने काम-वृत्तों के लिए तो कुछ करना ही होगा। देना तो हमें पता है। माँ को ही संगीत से रुचि न होगी तो बेटी में इसका प्रचार करना और भी मुश्किल है।’

चाल्स' मे बिदा होने के बाद वह अपनी दूकान पर चला जाता ।  
 वहाँ को बुलाकर कहता—“मुनती हो, लड़कियों के नाचने-गाने का  
 प्रकल्प करने में डाक्टर साहब तगे हैं । डाक्टरी तो गड़े भाड़ में रही  
 एक काम अब रह गया है ।”

पत्नी आँखें फाड़कर देखती रह जाती । यही एक रूप उसकी आँखों  
 का रह गया था । बच्चों के रोने-चिल्लाने की आवाज़ सुनकर फिर वह  
 चली जाती । दुकान-मालिक डिब्बों के खोलि पट-पटकर उसकी गर्द  
 भड़ाना शुरू करता । बीच-बीच बड़बड़ाता भी जाता था—“नाचने  
 गाने की स्तरीम चल रही है । डाक्टरी तो चगाये तो कुछ बात भी है ।  
 उनका अपना भला भी हो, दूसरों के पेट में भी कुछ पड़ जाये ।”

बहुत कुछ सोचने के बाद चाल्स' को एक दिन ध्यान आता—स्वातंत्र्य  
 की बातें तो इतने दिन में चल रही हैं, स्वातंत्र्य किमते बढ़ाने चलेगा,  
 पट बगी न सोचा । नाटक के एक गाने की चार स्त्रीयों को लेकर  
 प्रेमीन भी आह्वित रहा तब जायेगा । न कोई पुस्तक है, न शब्द, न  
 संसार; किमते सरार प्रेमा आगे बढ़े ।

वह सोचकर चाल्स' को बड़ा सहजता हुआ । उसे समझ नहीं  
 आता था कि उसकी सम्भारों का क्या हो गया है । सुनचाप जल्दी-जल्दी  
 के तारे में खानगारों प्राप्त करने का शुरू की । सब कुछ जान गेने पर ही  
 प्रेमा ने सुझायेगा ।

एक दिन बाद उसने प्रेमा से मिली का मुँह मिला । फिर  
 फिर और तब पट्टों में शुरू करने लगी । गानों के प्रेम मुँह में  
 गले । नाटक से ही हँसी भी करने आये । प्रेमा की कुछ प्रेम में  
 भी लगी । चाल्स' का प्रेम-दृष्टि में भी लगी । प्रेम में प्रेम-  
 का. १०



ले गाड़ियों के अड्डे पर पहुँचकर सबसे पहले चलनेवाली गाड़ी पर बह  
बैठार हो गई।

चार आदमियों के बैठने की गाड़ी में जगह थी। भगते देर न  
लगी। चाबुज हाथ में लेते ही गाड़ी के पहिए गड़गड़ाने हुए चलने  
लगे। सबके दोनों ओर दूर तक पेड़ों की कतार चली गई थी।  
गिराई पर झुककर एम्मा देखने लगी। इस सड़क से बह भूली नहीं  
थी। सभी कुछ उसमें परिचित मालूम होता था। अब वह आनेवाला  
है, इसके बाद वह और फिर—पहले ही से वह सब कुछ जान लेगी  
थी। कभी-कभी अनजान बनकर अपना नाम ही कम ही उलट-पुलट कर  
भी देखती थी। यहाँ दन्दजर प्रतीक्षा करती, अब वह आनेवाला  
है। मोलतर देखते पर मालूम होता, वह तो कुछ और है। इसके बाद  
भावभूम परना चाहती, कहीं उसमें भूल हुई। कभी मूल परती पाद में  
आ जाती थी, कभी आसमिनीनी जैसा खेल भी उसके साथ आता था।

प्रकाश अभी अन्धरी तरह फैल नहीं पाता था। डींग पन्द्रहवाँ भी  
हने नहीं कहा जा सकता। दानों का जैसे कमिलार बाल रहा था। भूय-  
बुनिया की खटि रहने और भी आकर्षक हो उठी। जिसकीजिए  
मयल भी आरम्भिक रूप में गमने आने में। समूर्ण मयल एक ही  
और शम्भु विप्रदा की तरह मालूम होना था। निम्न मूर्तिदेवद्वैत  
मयल, इस निम्न का कोई एक मयल मयल होकर ऊपर आगमन  
है। समर के निम्न मूर्तिदेव के एक निम्न का समर मयल होना  
निम्न मयल। मूर्ति के समर उभरे हुए मयल मयल है। निम्न, एक  
के मयल मयल, मयल भी मयल है।

मयल मयल मयल मयल मयल मयल मयल मयल मयल मयल

पर जैसे मकान-ही-मकान रह गये थे। एम्मा का जी भारी हो चला। आँखें बन्दकर जीवन की कल्पना वह करने लगी। ऊँची-ऊँची दीवारें अब उसके सामने नहीं थीं, किसी का दीर्घ निःश्वाम वे अब बगल में नहीं थीं। दीवारों की ओट में छिपे भयानक जीवन की अनेक कल्पनाएँ उठीं और चिमनी के धुएँ में अपना आकार खोकर विलीन हो गईं। एम्मा का जी घुटने लगा। खिड़की से बाहर उसने आधा शरीर निकाल लिया था। इसी समय घोड़े पर चाबुक पड़ा। गाड़ी की गति तेज हुई। एम्मा के बाल लहराकर अस्तव्यस्त हो हवा में उड़ने लगे।

गाड़ियों का अन्धा आगया था। एम्मा उतर पड़ी। एम्मा ने अपने कपड़े को ठीक किया, हाथ के दस्ताने बदल डाले, पाँव में नये भादू पहने। कंधे पर पड़े शाल को संभालते हुए वह आग गई। प्रकाश के साथ-साथ उसने नगर में प्रवेश किया। सड़कों की सड़कें खड़ी थीं, दूफानों के ताले खुल रहे थे। रात की सुमारी उतार कर नए का जीवन सामने आ रहा था। एम्मा का साहस नहीं हुआ कि आँखें खोलकर उसे देखे। कुछ देर नीची दृष्टि रखे चलती रही, फिर एक गली में वह रुक गई। जीवन के इस जागरण को आँखों की आँसू का बरत चलना चाहती थी। उसे पता भी नहीं था कि बन्द कमरे और बंद गाड़ी को छोड़कर लियॉन भी इस अँधेरी गली की शरण में चला है। कुछ दूर चलने पर दोना की भेंट हो गई। आर्नेस्ट मिन्न ने अभिगमन को आश्चर्यमय बना दिया। दोनों एक-दूसरे की ओर देखते लगे। अभिवादन पूर्ण हो गया।

मिन्न के कमरे की अब आसन्न हो गई थी। मंगेसी की ललक का बहाना बनाया गया। नौका के आसार का बंद बन चुका

था। परदे भी बदले हुए थे। उनके मंगमली लाल रंग का एम्मा बैगती रह गई। लियोन मंगमली परदा के पास खड़ी एम्मा का चेहरा रहा था। न जाने क्या सोचकर वह झुका जा रही थी। मंगमली परदों में छिपकर वह खो जाना चाहती थी।

कमरे को एम्मा ने सार्थक कर दिया। सुधभार ने दोनों, एम्मा और तियोन, कमरे को देगने लग। दीवारगरी पर चुनी हुई दो छीपियाँ रखी थीं। फार्सो बढ़ी थी। प्रमोश पारर अंगरेज रंगा की शाना उन पर भगाऊ रही थी। एम्मा ने उन्हें उठा लिया। वह धूलना करने लगी—नीपियों के भीतर दिपे जीवन की। उम्मात तरुणी की समरे धानि उन्हें रकट सुनाई पड़ रही थी।

[illegible]

1. 1945-46 2. 1946-47 3. 1947-48 4. 1948-49 5. 1949-50 6. 1950-51 7. 1951-52 8. 1952-53 9. 1953-54 10. 1954-55 11. 1955-56 12. 1956-57 13. 1957-58 14. 1958-59 15. 1959-60 16. 1960-61 17. 1961-62 18. 1962-63 19. 1963-64 20. 1964-65 21. 1965-66 22. 1966-67 23. 1967-68 24. 1968-69 25. 1969-70 26. 1970-71 27. 1971-72 28. 1972-73 29. 1973-74 30. 1974-75 31. 1975-76 32. 1976-77 33. 1977-78 34. 1978-79 35. 1979-80 36. 1980-81 37. 1981-82 38. 1982-83 39. 1983-84 40. 1984-85 41. 1985-86 42. 1986-87 43. 1987-88 44. 1988-89 45. 1989-90 46. 1990-91 47. 1991-92 48. 1992-93 49. 1993-94 50. 1994-95 51. 1995-96 52. 1996-97 53. 1997-98 54. 1998-99 55. 1999-00 56. 2000-01 57. 2001-02 58. 2002-03 59. 2003-04 60. 2004-05 61. 2005-06 62. 2006-07 63. 2007-08 64. 2008-09 65. 2009-10 66. 2010-11 67. 2011-12 68. 2012-13 69. 2013-14 70. 2014-15 71. 2015-16 72. 2016-17 73. 2017-18 74. 2018-19 75. 2019-20 76. 2020-21 77. 2021-22 78. 2022-23 79. 2023-24 80. 2024-25 81. 2025-26 82. 2026-27 83. 2027-28 84. 2028-29 85. 2029-30 86. 2030-31 87. 2031-32 88. 2032-33 89. 2033-34 90. 2034-35 91. 2035-36 92. 2036-37 93. 2037-38 94. 2038-39 95. 2039-40 96. 2040-41 97. 2041-42 98. 2042-43 99. 2043-44 100. 2044-45

था उसक अपने मोन्दय का, अपने से भी अधिक प्रेमी की निगरी हुई  
हाथ था। हाथ के इस जगार ने एम्मा को अलौकिक बना दिया था।

एम्मा ही उस अतीव कृपा के सहारे लियोन अपने को भूल जाता  
था मानूम था। उसका व्यास सगीत मूर्तिमान् होकर सामने आता  
है। जान लेता है उसका सगीत की प्रतिध्वनि उसके हृदय में गूँजती  
आती है। यह कहा है कहा है, वही है।

एम्मा ही अपने स्वयं उसक आठ फटफटा कर रह जाती। एम्मा  
के उस काल में सगीत व्यास करने के लिए उसका राम रोम विरह  
हो जाता है। यह हुआ है न कलनवाले शब्द इस विद्वलता में आता  
है। यह कहा है कहा है, वही है।

फिर भी वह स्वयं व्यवहार के बाद एम्मा आगे बढ़ती। निगाह  
के साथ ही सगीत व्यास करने के इच्छा से चपल लगाकर कहती—“हेतु  
है।”

यह नही है। यह सगीत व्यास करने विवलीन हो जाता था। यह  
अपने स्वयं ही है। यह सगीत व्यास करने के लिए इन प्रयोगों में  
लेता है।

यह नही है। यह सगीत व्यास करने के लिए एम्मा को  
है। यह सगीत व्यास करने के लिए एम्मा की ओर। घड़ी के दौरे में  
सगीत व्यास करने के लिए एम्मा को। घड़ी के दौरे में सगीत व्यास  
करने के लिए एम्मा को। घड़ी के दौरे में सगीत व्यास करने के लिए  
एम्मा को। घड़ी के दौरे में सगीत व्यास करने के लिए एम्मा को।  
घड़ी के दौरे में सगीत व्यास करने के लिए एम्मा को।

यह नही है। यह सगीत व्यास करने के लिए एम्मा को।

“मूर्ति में और लियोन की दृष्टि को ले जाते हुए एम्मा सतर्क—  
“देगते हो उधर। भागते समय की टिच-टिच के साथ तीर-जमान लिये  
“आप खोल कर रहे हैं !”

नियोन गिलखिला कर हँस पड़ता। सारा जगमगा जैसे फूलों में भर जाता था। फूल मुरझा खगते थे विदा के समय। नियोन के मुखमार्गों में से निकलता—छम्मा !”

“नियोन !” एम्मा के मुँह में निकलकर अश्रुदृष्ट ध्वनि कमरे में  
 बस जाती। आज का नियोन वक्त के मिलन का मूल पाठ्यपत्र नि-  
 अरने को गैमानता। बीच में दोनों के अन्तर था। दूर रहने पर भी  
 यह बना रहता था, पास आने पर भी इसे दूर नहीं भिन्न जगह  
 था। यह अन्तर था काम का—जान्स के काम का, जेफर और मानोटी  
 के चक से उदात्तर जो रह गया था। दोनों को विस्मय था जीम हें  
 यह पूरा हो जायेगा। इसके बाद जब अभी भी दोनों मिलने। वास्तविक  
 मिलन नहीं होगा। जान्स के पिता से प्राप्त सम्पत्ति इसी की इमान  
 जान्स के आभास नहीं है। उम्मीद दास के हृदय में ही जान्स के  
 और दोनों समान है। संसार के सब भगवत्-भगवत् में दूर,  
 फिर जीवन के इस साधारण निरन्तर मिलन में कोई भी उम्मीद नहीं  
 नहीं इस मरणात् ।

[illegible]



प्रत्यक्ष करती थी, उस समय एम्मा का ध्यान उसकी ओर आती होता था। बाधाहीन होकर बर्था फिर अपनी दुनिया में घुटना के चलने लगती थी।

तटस्थता का यह रूप अनायास ही इस बार दूर हो गया। एम्मा बर्था के खेल में हाथ बँटाने लगी। नये-नये खेलों का बर्था के तीर में प्रवेश हुआ। सबसे ऊपर प्रधान रहा तीर-कमानों का खेल। एम्मा दर्जन तीर-कमान एम्मा ने उसके लिए बनवा दिये थे। छोटे-छोटे हाथों में बर्था उन्हें सँभालती थी। चार्ल्स भी सामने होता था और एम्मा भी। पास जाकर एम्मा निशाना साधना बताती थी। दूर खड़े रहकर फिर तीर छोड़ने के लिए कहती थी। बर्था तीर छोड़ती थी। आगे न बटकर तीर-कमान की डोरी में उलझकर रह जाता था। देखा चार्ल्स सन्तोष का माँस लेता, निशाने को देखाकर उत्सन्न हुए पक्षी दूर हो जाती—फिर ग्विनग्विला कर हँस पड़ता। बर्था भी मुँहासे नाचकर तीर-कमान फेंक देती थी।

( २९ )

टूटी टोंगी को मीठा करने में चार्ल्स इतना अभ्यस्त नहीं हुआ था जितना कि कागज की नाव बनाने में। आवधार के रस्ते कागज की उम्मे शूल मिला था। बाद में रंगीन और फलदार कागज लगाए गए थे। टूटी और बर्था, जितनी ही तरह की नावें उम्मे का कर्त्तव्य। आगे तीर-कमानों के छोड़कर बर्था कागज की नावें भी बनाते। बर्था की नावें बल्ले जलता तो बर्था उम्मे की नावें बल्ले बल्ले। बर्था की नावें बल्ले बल्ले बनाना शुरू करता। बर्था की

टव लाकर नाव को उसमें छोड़ देता । नाव तेरने लगती । यथा की  
 प्रारंभ मिल उठती । ताली बजाकर वह अपनी प्रसन्नता प्रकट करती ।  
 फिर भागती हुई जाती एम्मा के पास । प्रश्न पत्रक एम्मा को  
 भी धमोटा जाती । यथा को लेकर चाल्मर और एम्मा, दोनों में प्रति  
 द्वन्द्विता चलती थी । टव में तेरती नाव को छोड़ मारकर एम्मा भिगी  
 बैठती । यथा भी इसमें योग देती थी । दोनों हाथों में पानी उछालना  
 उसे बड़ा अच्छा लगता था । चाल्मर जाना परता रहता, एम्मा को  
 भी रोकने का प्रयत्न करता और यथा को भी । ताली फिर भी उड़ानता  
 रहता । नाव भीगकर गल जाती । तेरने के लिए पानी भी टव में नहीं  
 बच रहता । ताली हुई नाव को बुरा धरती पर फेंक चाल्मर दोनों में  
 छुट्टी कर लेता । यथा को यह अच्छा नहीं लगता था । कभी यह टव  
 को देखा भी था, कभी नहीं हुई नाव को, इन दोनों में बहुत चाल्मर  
 में मूढ़ को ।

कर्मों का साथ पकड़कर हमारा करने काय सीख लेती । सुखसुखसे  
हृष्ट विर उभरते करती । सुखसी सीख-समाज बढ़ी है, कर्मों का

एम्मा की यह मूर्खपन की सभी बातें बर्बाद हो जाँगीं नें कहीं न  
देगी थी । चाहे कि मोर मित्र को अपनी मारत देता था । सभी  
कभी यह मित्र भी उलटते थे । मगर भी मुझे अपनी और मरिचकता के  
बताती । जिसका मित्र होता था । जो अपने मित्रों के साथ मर जाते थे ।  
और तब, सभी कभी भी नहीं थे । जो मर जाते थे । जो मर जाते थे ।  
जो मर जाते थे । जो मर जाते थे । जो मर जाते थे । जो मर जाते थे ।

የገንዘብ ምርት በሰው ኃይል የተከናወነው ሲሆን ይህም የሰው ኃይል  
በፊት ለፊት እንዲያስፈጽም ያድርጋል፡፡

वर्या को लेकर जीवन का अभिसार चलने लगा । एम्मा और चार्ल्स, दोनों एक-दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी बन गये थे । अनेक रूपा धारण करके यह प्रतिद्वन्द्विता सामने आती थी । वर्या किसी दिन उदास दिखती पड़ती थी । इस उदासी ने चार्ल्स और एम्मा, दोनों में से किसीमें अधिक चिन्तित कर दिया है, यह जानना मुश्किल हो जाता । चार्ल्स अपनी डाक्टररी की किताबों को खोलकर नुस्खे देगने बैठ जाता था । दवाई तैयार करके भी वह लाता । एम्मा दवाई का गिलास चार्ल्स के हाथ में छीन कर फेंक देती । कहती—डाक्टररी क्या पढ़ ली है, चन्ते है वान-वान में दवाईयां लेकर । वर्या को दवाईयो की आदत में नर्क डालने दूँगी ?”

एक दिन वर्या की तबियत ज्यादा खराब हो गई । एम्मा वर्या और उसके रोग को घेरकर बैठ गई । चार्ल्स वर्या के रोग की परीक्षा करना चाहता था, लेकिन एम्मा ने उसे पास नहीं पटकने दिया । एम्मा कमरे में थी, चार्ल्स दरवाजे पर खड़ा था । कमरे में अन्दर पाँव रखने का साहस उसे नहीं होता था । कमरे को आदर जाने भी उसने नहीं बनता था । खोखे में अपने अल्लिन का चौपट की टेक दिये बंद खड़ा था, खड़ा ही रहा ।

एम्मा को बड़ा बुरा लगा । भुँभुताकर वाली—वरी पंडित कण कर रहे हैं ? किसी डाक्टर को बुलाने भी क्या मैं ही जाऊँगी ?

वर्या को अच्युत होने देर नहीं लगी । एम्मा ने चार्ल्स से कहा—“अच्युत होने में वर्या का खौफ देना तो उसके अच्युत होने में ही मदद देता है ।”

चार्ल्स ने कुछ नहीं कहा । रोग के बाद रोग की छाया अच्युत होने में

नहीं पसार सकी। वर्तमान को छोड़कर चार्ल्स ने यहाँ के भविष्य के बारे में सोचना शुरू किया। पटाने-गिराने का दौर भी बीच में ही वहीं छूटकर रह गया था। आगे बढ़कर यहाँ के विवाह के बारे में उसने सोचना शुरू किया। पूरी स्कीम उसने तैयार कर ली थी। सोचते-सोचते रात बीत जाती थी। तीसरे पाह्न को अन्तिम घण्टियों में उसे नींद आती थी। जब उसके सोने का समय होना था, एम्मा बैगवार्ट हेयर उठ बैठती थी। अनायास और अनजाने प्रतिद्वन्द्विता दिरोधी दिशा पकड़ती जा रही थी।

कई दिन से चार्ल्स सोच रहा था, यहाँ के विवाह के बारे में एम्मा ने भी बातें करे। उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा वह कर रहा था। यहाँ के विवाह की पूरी स्कीम तैयार करने में उसे इतना समय नहीं लगा था, जितना कि इस उपयुक्त अवसर की खोज करने में। वर्तमान से भविष्य में परिवर्तित करना जितना गह्र था, उतना ही पठिन भविष्य से वर्तमान में प्रत्युत करना था।

जैज-जीज और शुभ अशुभ का खूब गिनाने के बाद चार्ल्स ने यहाँ के विवाह का निज निज। एम्मा को बात बिगड़ने का डर। चार्ल्स अपनी स्कीम का एक कम भी पूरी तरह जानने नहीं रहा था। चार्ल्स बात को साफ़ ही समझे हुए एम्मा ने कहा—“किस नहीं, यहाँ विवाह नहीं होगा।”

विवाह नहीं होगा? चार्ल्स ने सोचा कि वह क्यों नहीं हो पाएगा? एम्मा ने कहा—“नहीं, वह ऐसा सम्भव नहीं है।”  
 चार्ल्स ने सोचा कि वह क्यों नहीं हो पाएगा? एम्मा ने कहा—“नहीं, वह ऐसा सम्भव नहीं है।”  
 चार्ल्स ने सोचा कि वह क्यों नहीं हो पाएगा? एम्मा ने कहा—“नहीं, वह ऐसा सम्भव नहीं है।”



चाल्त्स के सामने भी आर्थिक समस्या थी, एम्मा के सामने भी। समस्याएँ एक होते हुए भी दिशाएँ दाना की भिन्न थीं। इस भिन्नता का कुछ-कुछ आभास दोनों को ही मिल चुका था, लेकिन इतना नहीं कि विरोध हो जाय। इसका एक कारण यह भी था कि विरोधी मन्वन्ध वर्षा के भविष्य ने जितना आश्रित था, उतना वर्तमान से नहीं। वर्तमान के सामने आने पर ही विरोध मित्र उठाता था— यहाँ तक कि भविष्य और अतीत को भी अपने साथ घुमाट लाता था।

जातों के दिन आ रहे थे। वर्षा के पास गरम कपड़े नहीं थे। एम्मा का बटुआ भी ठरका हो रहा था। कई दिन तक एम्मा भीतर ही भीतर घुमड़ती रही। किसी नीति के लिए भी वह चाल्त्स पर निर्भर नहीं रहना चाहती थी। अब नहीं रहा गनस तब सोची—“वर्षा से विवाह के लिए पैसा जुटाने की तुम्हें चिन्ता है और फिर जैसे करना ही नहीं है।”

“क्यों, क्या होगा ?” चाल्त्स ने पूछा।

“हुआ कुछ भी नहीं। बड़ी मोचली है कि विवाह की पैनी भग्ने से याद प्रेमर कुछ भी नहीं बन रहा। क्या ये वर्षा लियेगी जैसे ?”

चाल्त्स तर्कित हो उठा। चाल्त्स—“क्यों, क्या हुआ है वर्षा को ?”

“क्या था रहा है और गरम बरसा उसके गरम रूप भी नहीं,” एम्मा का स्वर विचित्र शीघ्र से चला, “विवाह को वर्षा के गरम है आनंद लाने का लक्ष्य है।”

कोन कीन गाने रूप के लिए, बस, एम्मा लक्ष्य बनने लगे। चाल्त्स मुनका रहा। वह केवल स्वर ही था। वह था, उसके मन्वन्ध से







गोटे ठपे और माँगपट्टी में दिन बितानेवाली युवतियाँ भी उन पर जैसे दृष्टी पड़ती हैं ।”

दूरान मालिक का जीवन भी अब प्रशस्त हो गया था । चाणू से उपायन डाक्टर ने जैसे उसी को बर लिया था । जो कोई भी था, उसी के सामने उस सत्य का स्पष्ट कर रखता । उपेक्षित डाक्टरी की स्थिति दयनीय दशा हो गई है, किस प्रकार लोगों का उस पर भरोसा उठता जा रहा है, व्यापक हृदय में सशब्द वह व्यक्त करना । डाक्टरी का अन्धश्रुत्या इतिहास उसने तैयार कर लिया था । काँउमने जन्म लिया । कमाल में उसे पाला-पोसा, शैशव को पार कर किस प्रकार वह इस अवस्था का प्राप्त हुई, पूरा चित्र खींचकर वह सामने रख देता था । बाद में फिर कम तरह से, किस-किस के समर्थ में उगम में अक्षय गाँगायत्री, मुख्यस्थान परिवार के रूप में दिन दिन अवस्थाओं में सर सर यह आँखें, डाक्टरी के इतिहास में यह सब भी आ जाता था । वह इन्साफ और आवण से इस इतिहास को वह दोहराता था । उनगोनर उसका स्वर तज ही चलता, दिशा विशेष के आ जाने पर वह स्नेहना उठता । अयाम्य और बच्चे हाथों ने डाक्टरी की जाँच की तरह माँ ने, बिना समझे बूझ उसके दामन पर जो हाथ डालते हैं वह इन्साफ दाँतों में नर्त जाता था । वह कहता—“कत के दोहरे, जहाँ है डाक्टर जान” डाक्टरी न हुई, बसों का लेल हो गया । पुण्यो ने भी उन्हाट कहा डाक्टरी का न देख, वे भी आजकल डाक्टर ही पैदा हो रहे हैं ।

इसका मतलब यह है कि बच्चे से । आये मान लेंगे अम्मा के ही । वह सब सच ही है । एक का नाम उसने नेहरी रखा था ।

दुर्ग का रुमो, तीर्थ का नागमन ऐश्वर्य । लक्ष्मि का मन्त्र विद्यालय  
में नीचे कोई नहीं । इतिहास को दाह्यत दोह्यत वह देखना  
नेपोलियन और रुमो पास में था गये हुए हैं । अक्टोबी की छाछालत,  
फै एक क्षण के लिए स्थगितकर उनमें और पर भुम्मा — तब  
देखो तब निरुद्ध ही चले रहते हैं, जाया यहाँ में ।

नेपालियन और कभी अपनी मा के गम नले जाते । दादा के घरमें  
आंचल में विवाह मा घरमें पति का नीगा नत । मे देखने जाती ।  
पति मे कह नासत थी । नागड़ी का फाग मा दस्तर्मा । श्रीम  
पते उगो मे बगान मुने-मुने उतरे फान वह रहे मे । इतिहास  
के पाठ मे कभी कभी गाथा बनकर भी रह था उपस्थित होती थी । उसे  
परपर दृक्-मात्रिक नता—पेरी माताओं या वरद मे ही  
जबर्दी या रह जान मा गम मे । दादरी मे मे फाग दादरी के  
मे पत्नी होती है ।”

[illegible][illegible]



भक्तों से वह मुक्त हो गया था। जीवन का वह चित्र सामने आ रहा था, जब वह दूधान के फेर में नहीं रहा था, पिछा भी उसका नहीं हुआ था, सगे और नौसेनियन की भी जहाँ गुन्नाइश नहीं थी। अपनी दुनिया का वहाँ आगेवा राजा था।

बागों में गन्ना गहज ही बट गया। गाढ़ा दूधने का दोनों डल्ले। निशान अन्ते पर जाना-साहता था। दूधान-भाँति नैवार नहीं हुआ। निशान की ब्रह्म लीचना हुआ बाज — "आते ही पर री फार गाने लगी। उन्हें वा कुम कभी न थे। मरे गाय पर रहते थे, दूधान में निगलने के लिए दहना दुर्लभ रहते थे। आन मरने पहले पर जो गद आरही है। वह नहीं होगा।"

निशान की गाय देना रहा। अन्तर की अन्तर दोनों लगे। पीछा के एक री में गारनरीट की देवार दूधान भाँति में कहा — "करी बलेन।"

होता का जीवन भी लहरी के आगे की आँधी पर रहा था। ऊपर कुछ निशानों में देवार उन्ने ५ प — "गहज।"

अन्तर, एक दूधान भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।"

उन्ने का जीवन भी लहरी के आगे की आँधी पर रहा था। दूधान भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।" अन्तर का जीवन भी लहरी के आगे की आँधी पर रहा था। दूधान भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।"

गहज गहज भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।" अन्तर का जीवन भी लहरी के आगे की आँधी पर रहा था। दूधान भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।"

गहज गहज भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।" अन्तर का जीवन भी लहरी के आगे की आँधी पर रहा था। दूधान भाँति में कहा — "गहज गहज भाँति में है।"



टिया । वह कह रहा था—'अच्छी तरह जानना है मैं उसे—एम्मा की  
दामी की । बड़ी चष्ट है वह ।'

सुनकर लियोन का हृदय कुछ हलका हुआ। अग्रेले में जाकर गन्तोष की सौंस बह लेना चाहता था। लेकिन दूकान मालिक ने उसका साथ न छोड़ा। लियोन के गहनों का दूर करने के प्रयत्न वह करने लगा। अर्थात् हाथकर लियोन ने अपने काँ दूकान-मालिक के हाथों में सौंप दिया।

इसके दिन वह इरान-मालिक को बिना जाने चला । कुछ दूर चल-  
कर इरान-मालिक पुराणक टिठक गया । बोला—' यहाँ कोई सिन्धुनी  
की कुण्ड भी है ?'

जिमीन ने दूधान पर चढ़ा दिया। कुछ क्षणों में समीप गये।  
इसके बाद दूधान मार्ग ने कहा—“मेरे मित्रों की माँ के लिए एक  
कदमों की लीन लीन में। मेरे मित्रों की माँ के लिए।”

विश्व होने के समस्त दृष्टान्त-माध्यम से विज्ञान को हमें एक अत्यन्त  
निम्न । अत्यन्त ही मनुष्य । अतः विज्ञान विज्ञान करने में हमें  
पूरा है ।

( 22 )

[illegible]

सारा व्यक्त बया म आकर समा गया था। अपने जीवन से उम्मे  
डाक्टरों का भाव हर हर दिया था और चार्ल्स को भी। बर्था के साथ  
ऐसा नया नया सहा था। चार्ल्स की पूरी छाप उस पर पड़ी थी। भा  
र सामने आने पर उसका हृदय मरोड़ खाकर रह जाता था।

बड़ नहीं चान्ता थी कि एक क्षण के लिए भी चार्ल्स बर्था के  
चिन्ता करे। बया का धैर्य हर रह सकती थी। न चार्ल्स पास आ पाता  
था न सका आया। गुरु गुरु में चार्ल्स ने इस बाधा को दूर करना  
चाहा था, लेकिन एम्मा के विरोध ने उसका मुँह फेर दिया। आगे  
आप ही अपने में समेटकर बड़ रहने लगा।

एम्मा का हर करने का प्रयत्न ने एम्मा को बर्था से भी दूर कर  
दिया था। सारा समय इन्हीं प्रयत्नों में बीतता था, बर्था ही आगे रहने  
का उन अवकाश नहीं मिलता था। चार्ल्स के अपने आपमें भिन्न  
वान्त का वह एम्मा बया का अपने सामने खड़ी करने देना नहीं  
चाहता था। प्रत्यक्ष प्रभाव का बर्था के शरीर में नौनकर फेर देना वह  
चाहता था। ऐसी ही दृष्टि ने वह बर्था को देना नहीं थी। बाधा  
लगा वह नया अनुभव था। माँ की ऐसी दृष्टि दुःखने वाली नहीं  
करने दी। सब के साथ बड़ सील डली।

एम्मा की भुँजकान्त बढ़ती जा रही थी। जितना ही इसकी  
देना था चार्ल्स को मिला उसके सामने आ खड़ा होती थी। मरुत  
सामने दुःखने का नया देना छुड़ दिया। पर म आ बड़ नहीं दिया  
ही। चार्ल्स के प्रभाव से बर्था को वह मुक्त नहीं कर सकी आगे  
जब तक, जब तक कि एम्मा स्वयं-साधन न करे। पर म दुःख  
नहीं करे इस बात का जेरे वह अपना कर मर।

एम्मा का अपना कुछ नही था गया था लेकिन उन अपने-अपना  
की कमी नहीं थी। सभी उसे अपना चाहते थे, पैसे हट जाने पर उस  
गमन, जब तक उन्हें अपना चाहती थी। निरीश पर उसे अपने  
अधिक भरोसा था। उसके पास जो एम्मा जाती थी, वह पैसे हट  
जाता था। पास आता एम्मा के इन हट जाने पर। एम्मा इधर-उधर  
मददगार होती थी। वह एम्मा के घर के जाने को संभालता करता  
था। गिनती की बात एम्मा को वह देखने का अपना भरोसा, एम्मा  
के पैसे की आस हटाने का वह नहीं चाहता था जाने का प्रयत्न करने  
सकता था।

[illegible][illegible]





वर्षों को मिश्रदान दिलाने के लिए वह फिर रगता—“हाँ, वर्षा !  
रगत को परिष्कार आती है। तुम उदक के योगी, नान भूत हुए नान  
हो गया है।”

मुझ होने पर वर्षा अपने पहले राग के पाग हो पहुँचती।  
देवती—टानियाँ झुक गई हैं, फूल कुम्हला गये हैं। पत्तियों ने राग से  
परा-भरा नटों किया। धोखा देकर वे चली गई।

बान का गेल कि नही चल गया । चाली पौ अरुनी भुल मानून  
 हो गई । ऐस गेल दह वर्षा पौ देना जानता था, जिन बलासे मरने  
 पे निष्परिणो सी बरुग न पौ । कम से कम इला सी हो कि दह-  
 निषो श्रीग कुल-पत्नी पौ तब दह रात मे ही सुगमगन छह न हो  
 जाय ।

पदों में से इस वाक्य में शब्दों का चयन था। एक दिन अपने  
 साथ वह शब्दों को चयन से गया। शब्दों में एक शब्दों का चयन  
 का चयन था। शब्दों का चयन था। शब्दों का चयन था। शब्दों का चयन था।  
 शब्दों का चयन था। शब्दों का चयन था। शब्दों का चयन था। शब्दों का चयन था।

[illegible]

$\frac{1}{n} \sum_{i=1}^n x_i = \bar{x}$

में ले लिया। घर आकर चार्ल्स ने बर्था की गृहस्थी सजा दी। गुड्डी गुड्डियों का व्यापार की तैयारी होने लगी। गुड्डे गुड्डियाँ जो अन्य निवासों में परकर गड़ा किया गया था। बर्था की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। आश्चर्य में वह देख रही थी, अब आगे क्या होनेवाला है ?

उस समय, एकाएक, एम्मा ने घर में प्रवेश किया। बर्था ने अपने से दूर कर देने पर भी एम्मा उसे भूल नहीं सकती थी। अतः बर्था को दूर करना वह चाहती भी नहीं थी। दूर करना चाहती थी उसे वह चार्ल्स से। घर में आकर उसने देखा—एक आर मिट्टी का टेर पड़ा है, सूखी टहनियाँ हैं और मुग्धांग हुए फूल उगे लगे हैं। अच्छे बागें न अलग होने से उन्हें राहत दिया है। पास ही गुड्डी गुड्डियाँ का व्यापार रचाया जा रहा है। गुड्डे-गुड्डियाँ में आर मिट्टी का चार्ल्स और बर्था। एम्मा का शरीर काँप उठा, आँसे लाने लगे आँसे। तीव्र स्वर उसमें से निकला—‘कन्ट कर यत् मय ।’ जीवन का वह स्वर ने नाथ कि सुनाई पा।—‘अपनी ही पत्नी के साथ यह’

एम्मा की किंमत टूट गई। जीवन के जिस भ्रम को जड़ों में लगाते उन्हें सा झुल्ला गया था वह भी गिराकर रह गया।

( ३३ )

आश्चर्यजनक सन्देश पढ़ी थी। वह आश्चर्य ही की प्रतीति दे रही है। अतः एम्मा ने गुड्डियों को अपने पट्टनपर रख रखा था। वह एम्मा के लिए हुए अस्मिता का चिह्न था। जीवन का वह स्वर ने नाथ कि सुनाई पा।—‘अपनी ही पत्नी के साथ यह’





मौ न कहना चाहिए, वही जम्मा के मुँह में भरना इन्करा सद  
वह यहाँ खड़ी न रहो । विलीन होने हुए उमर आशा का जास र  
आँखें पीछा करती न गई ।

प्राणी-मोक्षद्वय करने समोदनगीत हृदय का निःसंशय प्रमाण  
 लगे रहते थे। पटलेनागा मृदुल श्वेत जन्मा रहा था। लम्बा उनका  
 सरावर कपड़ा पानी रहता था। नोटों को चालीस के सामने ले जाकर  
 श्वेत यह नहीं फैलती थी। चालीस का त्याग हाटल के कस्बा-परा  
 से निरा था। गुरु चान निःशब्द का भी, जो हाथ में चालीस  
 पावती। इतनी बड़ी भोग्य उन्हें पहले कभी नहीं मिली थी। प्राण-मोक्ष  
 ने उनकी प्राणों की रक्षा रह गई। लम्बा ने कहा—“ये सब सच है।  
 जाओ, भोग करो।”

कितन वक्त निधर में एम्मा जरातों-जारी है, या इन मित्र-मित्रों से जलन  
निगा था। एम्मा जरातों जरातों की भूल जरातों भी लेजिन से नती।  
उन्ने जीत केवल एम्मा की एका एका से हीन दूर एम्मा जरातों  
था। निग वजरा, एका एका जरातों एका एका से हीन एका एका है।

[illegible][illegible]







चाहती थी, उसके पाँव की आहट से घबराकर धूल अलग हो जाती थी।

सब कुछ भटककर एम्मा फिर खड़ी हो जाती थी। गोया पक्ष अपने पाँव पर खड़ा होकर चलने लगता था। देरानेवाले हँसने, इशारे करते थे, कहनी-अनकहनी बातें उनके मुँह से निकलती थीं। गोये पन्ने की गति में कोई अन्तर इससे नहीं पड़ता था। जो थोड़ा नृत्य अन्तर होता भी था, होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना और भिन्नार्थियों की आशाभरी आँखों उसे सँभाल लेती थी। गोये पन्ने का मार्ग और भी प्रशस्त हो उठता था।

हाथ के तग हो जाने पर प्रशस्त मार्ग तग हो चला। होटल के कर्मचारियों की अभिनन्दना गिमकने लगी। एम्मा के सामने आने पर पहलेवाले उन्माद का प्रदर्शन अब नहीं होता था। एम्मा देखती थी, उन्माद का स्थान उपेक्षा लेती जा रही है। भिन्नार्थियों की आँखों, मार्ग हाथ लीट जाने पर भी, उपेक्षा में नहीं भर गई थी, कृतज्ञता का भाव उनमें था। होटल की उपेक्षा को भिन्नार्थियों की कृतज्ञ आँखों में सँभाल लिया। लेकिन एम्मा इस देख का स्वागत नहीं ले सकी। उन्हें छोड़, पटुची बड़ प्रहृति की गोद में—उसने फूलों में सँभलना शुरू किया। छिपे सूर्य की लाली का दोनों बाँटे पसारकर अपने हृदय में भरने का प्रयत्न वह करने लगी।

एम्मा के मार्ग प्रेमी त्रिवेण का चित्र उसकी आँखों के सामने लगे हो गया। कल्पित के सुन्दरे उसने अपने कानों में गीत गीत। कल्पित के सुन्दर का एक ही क्षण के त्रिवेण की आँखें बंद कर दीं।

अब वह अपने ही विचारों में डूब गई। एम्मा के सामने

गो । मुँह पर विचित्र सौन्दर्य खेल रहा था । सुधमाय ने एग्मा को वह देखना रहा ।

एम्मा आगे बढ़ी। तियोन के पास जाकर बैठ गई। तियोन ने आँखें धुन्ध कर लीं। उसे विश्वास नहीं होना था कि एम्मा ही पास बैठी है।

लियोन ने शिगरे और एकदम से उनसे वाली रो गयी उस-  
लियो ने दो नागी से विभक्त करते हुए एम्मा ने कहा—“दुस मुझसे  
नाराज हो गये हो लियोन !”

लियोन ने चौककर प्रार्थना की। 'सम्मा दे मुँह पर शेर खोला-  
देखा रहा। उम्मे कुट्ट कहते नहीं रना। सम्मा ने फिर पुनः—'हट्ट  
नेरा खाना इस सो नहीं मानूस हुआ।'

“नहीं, प्रणाम”—मार्गे मुझ भी झुक न सके पर मैंने निजोस मुझ  
हो गया ।

“द्वयं ज्ञायते”—यहो सुख सुखम् । ज्ञान के लोभ का निवृत्ति  
है । यह के साथ, शोचनीय है, जो ज्ञानी के निवृत्ति हो गये हैं ।  
नव ज्ञानी सुख के लोभ के निवृत्ति का अन्तः प्रकाश सुख है ।  
निवृत्ति के लोभ निवृत्ति का अन्तः प्रकाश सुख है । निवृत्ति के लोभ  
निवृत्ति का, यह सुख निवृत्ति के लोभ है । निवृत्ति के लोभ के लोभ निवृत्ति  
का सुख है ।

$$\frac{1}{\sqrt{2\pi}} \int_{-\infty}^{\infty} e^{-\frac{1}{2}x^2} dx = 1$$
[illegible]



कोट में वह श्रौंग भी उन्मादित हो उठता । सप्रमाण वह भा शी, भा ने अधिक पत्र के निम्नोदाले को जैसे दिग्गन्ता चाहता था, फूल पर नहीं, पर ज़मीन पर चला है—सुगन्धियों से नहीं, गोबर की ढोकरों से उनसे प्रभिकार किया है !

( ३४ )

कहें किन ही गये, चारों तर में साहर नहीं निकला । एम्मा ने माद  
उसकी भा में जो कुछ दिया था, उगरे बिंदू पर पड़ने की ही सिम्बल  
समझा था । वह रहस्य वह ध्येने की कसौटी था । उसे ही क्या  
गता था जो भा के सामने वह कुछ भी भला पुरा न लगे सता । एम्मा  
की कुछ जे में उतने भा का साध करो और उसे दिया । एम्मा ने नहीं,  
उसने ध्येने ही और पर कहानी माती है । और एम्मा का नहीं, उम्मा  
ध्येना ही है । उसे एम्मा प्रतीतिवत्त एम्मा दिया ।

[illegible]

*[Handwritten signature]*

सम्भव-असम्भव, अनेक प्रकार की कल्पनाएँ वह करने लगता। वह अपने को बन्दकर जाग्रत स्वप्न देखने का प्रयत्न वह करता था। कभी कभी इसमें उसे सफलता भी मिल जाती थी। वह देखता था, एम्मा का कमरा प्रकाश से जगमगा उठा है। अपने हृदय में समाकर एम्मा उसे ले गई है। फूलों का शृङ्गार उसने किया है। वह स्वयं भी एम्मा के शृङ्गार का जैसे एक फूल बन गया है।

फिर एकाएक आशङ्कित हो उठता। मधुर स्वप्न दुःस्वप्न में बदल जाता। मा ने आकर एम्मा का शृङ्गार नोच डाला है। बिगड़े फूलों को अपने पाँव में मा रौंद रही है। कमरे का प्रकाश अन्धकार बन गया है। एम्मा इस अन्धकार में लोकर रह गई है। उसका कुछ भी पता नहीं चलता।

कभी-कभी वह देखता—एम्मा का कमरा पहाड़ियों में जिंग हुप तग मार्ग बन गया है। दूर तक ऊँची पहाड़ियाँ चली गई हैं। न मार्ग का अन्त दिखाई पड़ता है, न पहाड़ियों का। अवेग हो-अवेग दिखाई पड़ता है। हाथ पकड़कर नहीं, घसीटकर एम्मा उसे लिये जा रही है। पिन्डना न चाहकर भी वह घिसट रहा है। उसका अन्त धन धिया हो गये हैं।

एकाएक वह कराह उठता। दुःस्वप्न का भगमीत फिर उसके सम्मुख है। अपनी छात्र छात्र चला जाता। आँसू का भार उस पर सारा स्वप्न देखने का फिर प्रयत्न करता। मरना न होने पर वह दुःस्वप्न ही स्वप्न में ही फिर से मरना चाहता था—एम्मा उसे चाहते होते जा रही है। अन्त दिनों में नहीं, युग दिनों में एम्मा न मरने का चाहता है। मार्ग ही ऐसा है जिसे वह जान नहीं पा

सकता—उदम-उदम पर दोहरें खाकर गिर पड़ना होता है । चान्दनी  
बल्लना करता—वा ही नहीं, एम्मा भी दोहर खाकर गिर पड़ी है । तिर  
भी दोनों चले जा रहे हैं—चले जा रहे हैं ।

आँखें खोलकर सोने का पाल्म को अम्बास हो गया था । आँखें बंद करके सोने का उमे ग्राह्य भी नहीं होता था । धन्यवाद मे उमे गम मानूस होता था । इन भय को दूर करने के लिए आस्ट्रेलियन हृदय मे वह अर्न्त आँखें बंद करके देखता था । किन्तु हृन्त ही जीवित आँखें खोल देता । उसे जान पड़ता था—जैसे वह किसी अज्ञात गहराई मे घूसा जा रहा है ।

एम्मा को अपने में तद्रस्य करने देखने का भी करने प्रवृत्त किया । वह सोचता था—एम्मा शिखी एक ही होकर नहीं जा सकती । शास्त्र-पत्र को धारणीकर करने के लिए ही उनके जन्म किया है । वह समझते हैं । सबकी होने हुए भी किसी की नहीं है । हूँ सबका ही उनके अपनाता या अपना है ।

[illegible]

$\frac{1}{2} \left( \frac{1}{2} + \frac{1}{2} \right) = \frac{1}{2}$



मिथी । गात्रात्त भय नाशकर वह पत्र लक्ष्मी थी, 'लक्ष्मी' नामक वह  
 दानवी थी । कई दिन से अश्वक वणिभक्त से व लक्ष्मी उह पैरान का  
 मकी । सुनो जो, लक्ष्मी अश्वक लिमारा म उहका उहमे लीक दिन ।

पथों का लिखने व बाद एम्मा ने धा में दाह जग लीर दिया ।  
 नाल्ट हो कह कर भी अपने कमरे में उर जाने लगी । दाह लिखने  
 उसे उर लगता था । उर में प्रथित रहने केला था । दाह चरमी भी  
 निशान में उमता सामना होने की दाह बाद सम्मान न थी । कभी  
 कभी कह रा भी जानती था कि निशान का उसके पथ न मिले । निमी  
 तरह, जहाँ मार्ग में ही गैरजर रह जाँ ।

[illegible]



म आपनी नम्रता का ईकती हुड अनी म समाने क लिए फिर यह दह  
जाता।

श्रान्ती में लाला लाले लाला मुनह उठनी थी। मारे खदन में दर्द  
गहन लगता था। जोरून इतना नहीं था कुछ न करने दे। श्रान्ती ही  
ताली गहन रूप से साथ देती थी, खदन का दर्द भी नवजागरण के  
भाग में भाषा नहीं आता था। मास्तिक की भुनभुनाहट भी नीचे उतर  
श्रान्ती में। लाला लाले लाला उसका स्वर भी मिलाया जा सकता था।

माया ने तब प्रतीक्षा एक दिन मार्ग में हुई। दूर में ही एम्मा को  
 'माया' को 'माया' के रूप में देखकर दवाइ पड़ी। एम्मा ने आँसु नद कर ली।  
 'माया' ने तब प्रतीक्षा प्रतीक्षा तब ही, वहीं स्थिर हो रही।

२॥ तबान का उत्तर नही, प्रानाटि-मनेदय का सम्मन आया है।

( 34 )

... + ... नवना की आवश्यक विचलित था, इतनी ही इतना मे  
... ... ... । ... निश्चित योजना के अनुसार ... उमों  
... ... ... माग म कश भी वर नष्ट ही नहीं, मोती प्रेमी  
... ... ... । ... इतना पर वह ... लड़ी थी।  
... ... ... ने प्रत्यक्ष की मूर्ति स्थापित का  
...

[illegible]

उलटी दिशा में जा रहा है। उसी के सहारे प्रॉनोट-महादय लेन लेन का काम करने थे। उनके मैक की तुलना भी उसी के पास थी। तमर का देखते हुए मेक का आकार-प्रकार बहुत बढ़ा था। चाँदा फ रंगे भी उसमें समाये थे ग्रीन सोने की झलकियाँ भी। पाँव के गहने भी उसमें थे और गले का हार भी। धुरे दिनों में देहातियों के गहरे गहने का अपने में समाकर गहरे रंगे भी वहीं मैक उगलती थी।

बाँदी ने अधिक गिट्ट के बने आभूषणों को नेत्र में रखने का प्रयत्न प्रोबोद-महोदय लाहरी को दे देते। कुशी की सँभालकर लाहरी मात्र के पास पहुँचती। कुशी को धुमाने में अपना साग गरीब उन्हें पुनः देना पड़ता था। मोन लेने पर पट्टी धारियों ने जेब की याद लेने के लिए हाँ सेते गत गड़ी रह जाती थी।

मैंने अपनी ही झड़ार के साथ नदियों की ओर भेजा कर दिया  
 प्रीति-मोहनी करत—“हेम के दिलों में बेचारी को सदाप ही,  
 हमारे सब भवनों परले गये। मोटे पैरों न था जो हमें अपनी गोदी में  
 लेलाये। सब का इतनी दूरी गई थी। दूरी होने का हमें ज्ञान नहीं  
 मिला। अपनी ही में अपने को। से हमें ऐसा मिला था। सब को सदा ही  
 सदाप में हम सब ही अपने गये। मोटी की कीमत जाना है, सब ही  
 सब को सदा-मोदी की मोरी अपनी दूरी।”

[illegible]



हवा में उठ गई थी। अचेली उँगली को उठा हुआ छोड़कर एम्मा कमरे में बाहर चली आई। बाहर आने पर एम्मा के हाथ की पाँचों उँगलियाँ उठ गईं। एक, दो, तीन, चार—मन-ही-मन एम्मा ने कुछ हिसाब लगाने का प्रयत्न किया। लेकिन हिसाब लग नहीं सका। गिनती-गिनना भी जैसे वह भूल गई थी। चार के बाद अँगूठा जैसे शून्य में गी जाता था। हिर-किर कर अनामिका के सहारे गिनती को आगे रखा जा सकता है, चार के बाद इसका भी उसे ध्यान नहीं रहा। गिनती आकर अटकती थी नम्बर तीन पर, भारी-भरकम रजिस्टर सामने आ गड़ा होता था। चार तक पहुँचने-पहुँचने कुछ भी बाकी नहीं रहता था। हिसाब की उलझन में अपने को उलझाये एम्मा चली जा रही थी।

( ३६ )

गियोन, गुानन, चार्ल्स—रजिस्टर नम्बर तीन के साथ एम्मा के जीवन की यह गती भी सामने आगई। तीनों को एक कम देकर समझने का प्रयत्न वह करने लगी। चार्ल्स की पहले रक्ती थी, गियोन को मरने में श्रीर धूम्र के बाद में। लेकिन सा शुद्ध धनती नहीं थी। इस मन की दूसरी तरफ से फलटकर देवना उठने शुरू किया। उलझन के फिर भी धोँड़े नहीं आते। धोँड़े-धोँड़े को शुद्ध भी नहीं रहता—एक अचलकम समझ सामने आने लगा। दूसरे में, विश्व में। कम के, दोनो, समझने छोड़े। एम्मा ने मुँह फोड़कर देखा नहीं था, न मन में कुछ समझ आया। दो तरफ कर

कुछ भी एम्मा की समझ में नहीं आ रहा था। लियान, बुलावा और चार्ल्स—ये तीनों ही नहीं, चारों ओर के मकान भी एक दूसरे में उलझकर अस्पष्ट हो चले थे। स्पष्ट करना चाहने पर भी किसी चीज को स्पष्ट करके वह नहीं देख पा रही थी। बन्ती में नहीं, जेम्स एक भूल-भुलैया में वह चल रही थी। प्रत्येक मोड़ पर लगता, बाहर निकलने का दरवाजा आगया है। आगे बढ़ने पर मालूम होता, दरवाजा नहीं, एक और अन्धी गली उसके सामने मुँह बागे खड़ी है।

भय से काँपकर एम्मा ने आँखें बन्द कर लीं। सूर्य भी अपनी लाली को समेटकर बादलों में छिप चला था। एक मन्त्रित झापा ने सम्पूर्ण बगती को अपने मन्त्रित आवरण में ले लिया था। एम्मा को अपनी आँखों के सामने एक चक्र-सा वस्तुता जान पड़ा। लियोन, सान्तो और बुचनर इस चक्र में एकाकार हो गये थे। धीरे-धीरे चक्र बगल पर होता हुआ विहीन हो गया। डगली गल में एम्मा का मन्त्रित था भी नूननना • था था ।

[illegible][illegible]

नामक पुस्तक प्राप्त हुई थी। दूरान-मालिक की नजर पढ़ने के बाद पुस्तक उसके हाथों में न रह सकी। दूरान-मालिक के पास में पुस्तक फिर चार्ल्स के हाथों में पहुँच गई थी। एम्मा ने मिलकर वह फिर उस पुस्तक को पाना चाहता था। उसे विश्वास था, एम्मा इनकार नहीं करेगी।

एम्मा के सामने आने पर उसने कुछ कहते नहा बना। एकदम एम्मा के मुँह की ओर धा देगवा गया। एम्मा अनामकी में लगी शीशियों का देख रही थी। एक शीशी के लेवल पर उबरी आँखें टिक गई—बाधोक्तिर एति। मौन ने फिर उसने कहा—“इन शीशियों को निरात दो।”

मौन कुछ रुक गया। बोला—“दूरान-मालिक नहीं है। उनके आने पर मैं कुछ भावने नहीं इसे पढ़ेना दूँगा।”

“नहीं, मिलो ने कुछ कहने की सम्भव नहीं”, एम्मा ने कहा, “आपको, वह शीशी मुझे दो। किसी ने कुछ नहीं कहा है।”

निरात और भी नामक पुस्तक उसकी शीशियों के पास रखी थी। वह उसे पाने में फटिलाने नहीं, मोती। मोती उठकर उसी एम्मा को दे दी।

एम्मा पर और आँखें। एम्मा ने उस के हाथ में। एम्मा ने देखते ही देखते भाव कुछसे पहले अपने हाथ में। एम्मा ने, वह कुछ मुझसे वह भावना नहीं दूसरे। एम्मा ने उसे अपने हाथ में।

कुछ देर बाद एम्मा ने कुछ कहना शुरू किया। एम्मा ने, वह कुछ मुझसे वह भावना नहीं दूसरे। एम्मा ने, वह कुछ मुझसे वह भावना नहीं दूसरे। एम्मा ने, वह कुछ मुझसे वह भावना नहीं दूसरे।



चले । गरीब वस्ती जैसे उदासी में गये गई थी । सभी कुछ जैसे मन्थ हो गया था । शव की नीरव यात्रा शुभ हुई । उमंगी चिरनिद्रा भंग न हो पाय, प्रत्येक व्यक्ति को जैसे इन आशंका ने घेर लिया था । परिवार पर आगे बटने के लिए नहीं, मानो पगधरि को जाने के लिए ही पद रो में । गरीबों की टोंग ही केवल एक ऐसी थी जिससे गदगद इस निम्नव्यथा की भद्र कर रही थी । चार्ल्स के जीवन की चिरमनिनी की तरह इन पाप पर भी यह उलका साथ दे रही थी ।

( ३३ )

चार्ल्स के साथ साथ एम्मा की मृत्यु ने एक दर्पक पर और गहरा आशय डाला था । वह था श्रुतान-मादिर का मौखिक । विचार कीर में ही सधु लपटा पर एम्मा की मृत्यु भीतर प्रहार कर उठी थी । यह मन्थ रह गया । एम्मा की नीति, वह जैसे उसी के जीवन की भीत थी । एम्मा की मृत्यु का साथ में, जैसे उसी पर था रहा था ।

दिन भर वह घर में टकरा रहा निरन्तर । किसी के समझे नहीं था उसे सदस्य नहीं होता था । एक दोने में मूढ़ निरन्तर रहा था । दिन भर उल्लास उल्लास निरन्तर का दर्दभर एक साथ । एक ही पल में कभी भी कलह का रस । बहुत ही लम्बे में ही इस समय में वह रहे थे । एक साथ ही, हुए । मृत्यु के बाद ही वह ही रहे । एम्मा के, एक ही पल में, मृत्यु के बाद ही वह ही रहे । एम्मा के, एक ही पल में, मृत्यु के बाद ही वह ही रहे ।

एम्मा के, एक ही पल में, मृत्यु के बाद ही वह ही रहे ।

एम्मा के, एक ही पल में, मृत्यु के बाद ही वह ही रहे ।





उसने देखा—एम्मा के कपड़ों के साथ दासी काही भाग गई है। पहले उसे विश्वास नहीं हुआ। विश्वास हो जाने पर भी वह प्रतीक्षा करता था, लेकिन दासी लौटकर नहीं आई। एम्मा की स्मृति को भी जैसे वह अपने साथ ही लेती गई।

एम्मा की स्मृति की बनाये रखने का जितना ही अधिक ज़्यादा प्रयत्न करता, उतना ही अधिक वह उससे दूर होती जा रही थी। रोज ही वह एम्मा के स्वप्न देखता था। स्वप्न आते थे और चले जाते थे। एक ही तरह का प्रारम्भ, एक ही तरह का अन्त। एम्मा उसे दिखाई देती थी, उसके पास वह जाता भी था, लेकिन उसका स्पर्श पाने ही वह निर्भीक हो जाती थी। जीवित प्रतिमा की तरह वह दिखाई देती है, अपने हृदय में समाने के लिए वह मागे रहा है, लेकिन उसके निम्न पंखों की मिट्टी के ढेर की तरह बिनाखरब वह रह गई है।

[illegible][illegible]



इसी प्रतिद्वन्द्विता में जीवन चल रहा था। एक दिन, एकाएक, उस सून पर में किसी युवक को निकलते देख सब आश्चर्य में पड़ गये। पौतुक दुआ, मुल्ल ने सतर्कता का दामन पकड़ा, कुछ रुवेदनशील हृदय वा सूत्र पकड़कर सून पर से युवक की रक्षा करने के लिए भी आगे बढ़े। मुल्ल इसी दुर्गति में उलझकर रह गये, वह जीवन का प्रतीक है अथवा शून्य का ?

सूने घर ने फिर से बन्नी में प्रवेश किया ।

( 35 )

एने घर मे धाने मे पहले सुबक बत्तों मे रहता था। चार्ली की तरफ वह भी खर्च पित्त था। अथवा पुत्र था, मा भी उनी के मगरे अपनी आशाओं के टिहाये थी। मा-बाप की ली नहीं, मगद उने भी अपने मे बहुत ली आशाये थी। इन आशाओं मे पूरा करने के लिए पूरा मे मोट पोटर वह बड़ा हुआ, पर निम्नतर उने बत्तों मे प्रवेश गिया।

समस्त प्राधान्यो मे एत उमरे जीवन की साथ बन गई थी । प्रसिद्ध  
मरी, समस्त जीवन में एत उमरे का ही जीवन था । इनके पीछे  
उन में समस्त मा साथ की साथ दिवा, दिवात ही मेरे समस्त का प्रेमिका मे  
सिद्ध मरी, सिद्धि समस्त मे दिवात ही मेरे समस्त मरी उमरे मरी  
सिद्ध । इन सब म मरी मेरे ही समस्त उमरे ही मेरे जीवन मे  
सुख समस्त सुख सिद्ध ।

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840.



नहीं दिला सका था कि यह उसका अपना रूप नहीं है। ऐसा करने पर भी उसे विरोध का ही सामना करना पड़ा। इसके अतिरिक्त उसका और कोई रूप हो सकता है, यह सोचना भी जैसे उनके लिए असम्भव हो उठा था।

जीवन के इस व्यग्र से भरी वस्ती को छोड़कर उसने सूने घर की शरण ली। यहाँ आकर आशुदासों ने जैसे साथ छोड़ दिया था। घर के किराये आदि के बारे में उसने बात-चीत की थी। विरोध का झरा भी सामना नहीं करना पड़ा। सूने घर में बसने की जमीन तैयार करने के लिए उसे ध्यालोचना प्रणालोचना का सहारा भी नहीं लेना पड़ा। कहा गया—तो तो मैं प्राये दे देना। कुछ भी न दिया जाय तो भी बात विनोदगी नहीं।

सूने घर में उमने देग जमा दिया। इस घर में अपने पहले जीवन की सुलना घर करने लगा। आनन्दक रूप की फटता घर सूने घर में गों गई। घरने को कुछ हलका पाकर उसे रोदुत भी हुआ। घर में आकर निताकर यह बात ही गया। यह घर घर ही रोदुत दिताई पड़ा। आनन्द ने घर में रोदुत पड़ा। रोदुत न आनन्दन हाट में भी उमने देग। यह घर घरने रोदुत पड़ा। रोदुत पड़ा रोदुत पड़ा।



शास्त्री का इतिहास तेज़र होने लगा । दूकान-मालिक बराबर साथ दे रहा था ।

( ३३ )

डाक्टरों का इतिहास उपन्यास से भी आगे बढ़ चला। पाठकों ने उपन्यास के रूप में उसे लिया। डाक्टरों का आवरण बोटकर जैसे अभिचारिका गमने आ गई थी। अभिचारिका को अपनाते कुछ दिवस भी हो गई थी, डाक्टरों को अपनाने में वैसी कोई बाधा नहीं थी। निरुद्धाच प्रत्येक घर में डाक्टरों ने प्रवेश किया। अभिचारिका का देवकर घर को दुजुर्ग नाक-भौं सिधो होते थे। डाक्टरों को देवकर खुश होते थे। लड़का इतिहास का अपनाने घर रहा है।

अनिवारिता के अंगियों की सन्तान संख्या नन्दर तीन में आने लगी था पाँच थी, जन्म में जीवन भी कुछ वर्षों भी न जाने क्यों चिरीन हो लगे थे, मोहित आचरण से अकस्मात् मर्त्य पादों की चम्पी नहीं रही। मेरे मेरे दुनारी सन्तान आने लगे थे। अनिवारिता के जीवन के निम्न भाग में सावधानी से धरा धरा लगे।

[illegible]





किंगी उत्साही युवक ने उसे लेकर इतिहास बना डाला है। पूरा विवरण मालूम होते ही डाक्टरों का एक डेप्युटेशन दूकान-मालिक के पास भी पहुँच गया—भविष्य के अवाञ्छनीय आक्रमणों से डाक्टरी की रक्षा करने के लिए। लेकिन दूकान-मालिक टम-से-भम नहीं हुआ। उसने बात करने में ही इनकार कर दिया।

इसके बाद दूसरा तरीका अपनाया गया। व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विता से मात देने के लिए एक एक करके तीन डाक्टर भेजे गये। लेकिन दूकान मालिक के लम्बे-नींदे माइनोर्ट के सामने कोई जम न सका। चार्ल्स के बाद दूकान-मालिक ने ही जेने डाक्टरी पर अपना आधिपत्य जमा लिया था। उसपर वह अपनी दूकान पर बैठ गया था—जैसे उसे अपने स्थान में ठिकाने में रखना न हो सके !







